हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● बुधवार ● 02.10.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 73 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : 3 ~~रुपया~~ 2 रुपया

सत्यमेव जयते

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

आजादी का बिगुल फूंकने वाले
अमर शहीदों के झारखण्ड में

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

जी का हार्दिक अभिनंदन और जोहार

2 अक्टूबर, 2024

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

PR- 337911 (IPRD) 24-25

एक नजर

हफीजुल हसन ने नगर निगम के नए भवन का किया उद्घाटन

हजारीबाग : हजारीबाग शहर के डिस्ट्रिक मोड़ पर 24.94 लाख की लागत से बने नव निर्मित नगर निगम भवन का उद्घाटन मंगलवार को झारखंड सरकार के मंत्री हफीजूल हसन ने फीता काट कर किया। इस दौरान मंत्री ने कहा की हमारी सरकार हेमंत सोरेन के नेतृत्व में सैकड़ों जनहित के कार्य की है। आज जनता फिर से हेमंत सोरेन को झारखंड के मुख्यमंत्री बनाने के लिए कमर कस चुकी है। नगर निगम के नए बिल्डिंग के निर्माण से यहां की जनता के साथ नगर निगम के कर्मी को कार्य करने और करवाने में सहूलियत होगी। साथ ही कहा की आने वाले दिनों में मुख्यमंत्री झारखंड वासियों को कई और सौगात देंगे। इस दौरान नगर निगम के आयुक्त ने मंत्री का बुके देकर स्वागत किया। मौके पर बरही विधायक उमाशंकर अकेला, बरकट्ठा के पूर्व विधायक जानकी प्रसाद यादव, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह, कांग्रेस ओबीसी मोर्चा की प्रदेश सचिव रेणु कुमारी, जीप सदस्य रवि अकेला, कांग्रेस नेत्री अनुप्रिया साव समेत कांग्रेस जेएमएम राजद के दर्जनों पदाधिकारि व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

हजारीबाग बनेगा ऐतिहासिक पल का साक्षी : डॉ अमित

हजारीबाग : गांधी मैदान में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के परिवर्तन यात्रा के समापन समारोह में हजारीबाग की जनता एक ऐतिहासिक पल की साक्षी बनेगी। इस विशेष अवसर की तैयारी में पूरा भाजपा परिवार जुटा हुआ है, ताकि कार्यक्रम को सफल और यादगार बनाया जा सके। इस आयोजन के संदर्भ में, डॉ. अमित सिन्हा ने राज्यसभा सांसद सह प्रवासी प्रभारी दर्शना सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष सह हजारीबाग विधानसभा चुनाव प्रभारी आरती कुजूर, ज़िला महिला मोर्चा अध्यक्ष श साक्षी राणा, विस्तारक विष्कान्त, विवेक जोशी, और वरिष्ठ भाजपा नेत्री सत्यभामा व अन्य के साथ मिलकर एक विस्तृत चर्चा की। डॉ. सिन्हा ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी का आगमन हजारीबाग के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। हम सभी कार्यकर्ता मिलकर इस पल को ऐतिहासिक बनाने के लिए पूरी मेहनत करेंगे।ः उन्होंने हजारीबाग की जनता से अपील की कि वे इस समारोह में भाग लें और प्रधानमंत्री का स्वागत गर्मजोशी से करें। डॉ. सिन्हा का मानना है कि यह आयोजन न केवल हजारीबाग, बल्कि पूरे राज्य को लिए नई दिशा प्रदान करेगा। जनता का उत्साह और भाजपा कार्यकर्ताओं की मेहनत इस कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अज्ञात अपराधियों ने पांच हाइवा को किया आग के हवाले

हजारीबाग : केरेडारी टंडवा मुख्य सड़क पर अज्ञात अपराधियों ने पांच हाइवा को आग लगा कर मचाया जम कर उत्पात मचाया। केरेडारी एनटीपीसी खनन माइंस से कोयला ढुलाई में लगी हाइवा को केरेडारी टंडवा मुख्य पथ स्थित डाम्भाबागी में अज्ञात अपराधियों ने किया आग के हवाले, हाइवा धु धु कर जला। 8 से 10 की संख्या में आए अपराधी ने 2 बजे रात में घटना को दिया अंजाम। अपराधी ने कई राउंड फायरिंग कर चालकों की पिटाई कर घटना स्थल से हुआ फरार। घटना से इलाके में ही दहशत। सूचना पर केरेडारी पुलिस पहुँच कर दमकल गाड़ी से आग पर पाया काबू। घटना उग्रवादी या अपराधी दोनों पहलू पर जांच में जुटी पुलिस।

पीएम के हजारीबाग आगमन को लेकर भाजपा नेताओं ने किया कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2 अक्टूबर यानी बुधवार को हजारीबाग में रहेंगे। इस दौरान पीएम नरेंद्र मोदी हजारीबाग में आयोजित तीन आम कार्यक्रमों में शामिल होंगे। जिसमें बिना भाव विश्वविद्यालय परिसर के बिनोदिनी पार्क में होने वाले पहले सरकारी कार्यक्रम में वह कई राष्ट्रीय योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। तत्पश्चात पीएम नरेंद्र मोदी मतवारी के गांधी मैदान पहुंचेंगे जहां दो अलग-अलग कार्यक्रमों का हिस्सा बनेंगे। यहां पीएम नरेंद्र मोदी आदिवासी समुदाय के लोगों से मुलाकात करेंगे और भाजपा के परिवर्तन यात्रा का परिवर्तन महासभा के माध्यम से समापन करेंगे । इधर पीएम नरेंद्र मोदी के हजारीबाग आगमन को लेकर विश्वविद्यालय से लेकर गांधी मैदान तक सड़क के दोनों और बैरिकेडिंग कर दिया गया है। कार्यक्रम स्थल के साथ शहर के विभिन्न चौक- चौराहे और हरेक मार्ग को फ्लेक्स पोस्टर और बीजेपी झंडा से पाट दिया गया है। पीएम मोदी के स्वागत के लिए हजारीबाग को दुल्हन की तरह सजाया गया है और जनता उनके आगमन को लेकर ललाहित है। पीएम नरेंद्र मोदी के हजारीबाग आगमन को लेकर पिछले करीब एक सप्ताह से लगातार मस्कट कर रहे हैं हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल पूरे लोकसभा क्षेत्र के विभिन्न प्रखंडों में घूम- घूमकर कई बैठक किए और कार्यकताओं में उत्साह भरने के साथ आमजनों से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर पीएम मोदी के कार्यक्रम को ऐतिहासिक और सफल बनाने का आवाह्न करते रहें। सोमवार की देर रात्रि तक कार्यक्रम स्थल में जम रहे और फिर मंगलवार की पहले सुबह से लेकर देर रात तक कार्यक्रम के सफल संचालन और कार्यक्रम स्थल में जन-सुविधा मुहैया करने को लेकर निरीक्षण करते रहें। पीएम मोदी के कार्यक्रम स्थल गांधी मैदान और विनोबा भावे विश्वविद्यालय के बिनोदिनि पार्क का हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल, राज्यसभा सांसद सह प्रदेश महामंत्री आदित्य साहू, यूपी की राज्यसभा सांसद सह भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रिय उपाध्यक्ष दशार्ना सिंह, छत्तीसगढ़ के केबिनेट मंत्री ओ.पी. चौधरी, प्रदेश महामंत्री सह प्रमंडलीय प्रभारी मनोज सिंह, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सह सदर विधानसभा प्रभारी आरती कुजूर, भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह, भाजपा नेता आनंद देव, अरविंद जी सिकरवार, जीतू जैन, दामोदर सिंह, विवेक जोशी सहित अन्य गणमान्य लोगों ने निरीक्षण कर जायजा लिया और तैयारी पूर्ण होने की बात कही। मौके पर हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल ने मीडिया से रूबरू होते हुए कहा की पीएम मोदी का हजारीबाग आगमन बड़ा सौगात है। एक साथ यहां कई कार्यक्रमों में उनका भाग लेना हजारीबाग के लिए बड़ा दिन है। उन्होंने पीएम मोदी के हजारीबाग आगमन को लेकर लोगों से बड़ी संख्या में उनकी जनसभा में जुड़ने का अपील किया साथ ही कहा कि पीएम मोदी का मार्गदर्शन जरूर सुने और उसे आत्मसात करें ।

संक्षिप्त खबरें

विधायक ने दर्जनों लाभुकों के बीच बिल माफी प्रमाण पत्र का किया वितरण

बड़कागांव : झारखंड सरकार के द्वारा 200 बिजली यूनिट तक प्रतिमाह खपत करने वाले बिजली बिल माफी योजना झारखंड सरकार के द्वारा चलाई गई है। जिसे लेकर बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद के समाधान भवन में बिजली बिल माफी प्रमाण पत्र का वितरण किया गया है। जिसमें दर्जनों उपभोक्ताओं के बीच विधायक अंबा प्रसाद ने ने बिजली बिल माफी प्रमाण पत्र का वितरण किया। तथा झारखंड सरकार के द्वारा संचालित महत्वपूर्ण योजनाओं के बारे में लोगों को जानकारी दी। इस दौरान बड़कागांव मुख्य चौक पर बिजली सुदृढ़ करने के लिए ग्रामीणों ने स्कूटीव इंजीनियर से मुलाकात कर एक अतिरिक्त ट्रांसफार्मर लगवाने की मांग की गई है। ताकि बार-बार बिजली समस्या की परेशानी से लोगों को निजात मिल सके। वहीं बिजली माफी योजना को लेकर स्कूटीव इंजीनियर ने बताया कि हजारीबाग जिला में 74000 बिजली उपभोक्ताओं की बिजली बिल माफ किया गया है। जो घरेलू उपभोक्ता 200 यूनिट से कम बिजली उपयोग करते हैं, अगर उनके ऊपर बकाया बिजली बिल व फाइन के साथ केस हो गया है। उनका भी बिजली बिल माफ करने के लिए रिपोर्ट आगे भेज दी गई है। वही मौके पर उपस्थित कई लोगों ने बिजली बिल नहीं माफ करने की शिकायत स्कूटीव इंजीनियर से की है। मौके पर उपस्थित लोगों में मुख्य रूप से बिजली विभाग के स्कूटीव इंजीनियर अंगेश कुमार, एसडीओ अरविंद कुमार कनिय अभियंता प्रभास कुमार, स्थानीय कर्मचारी अरविंद कुमार, रोहित सोनी, विशेश्वर नाथ चौबे, पंकज कुमार, मनोज ठाकुर, शमशेर आलम, राजेश रजक के अलावा उपस्थित थे।

मुखिया सुलेखा ने सांढ़ पंचायत में सामुदायिक शौचालय का किया उद्घाटन

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के सांढ़ पंचायत महावीर मंदिर के प्रांगण में समुदाय शौचालय का उद्घाटन मुखिया सुलेखा कुमारी के द्वारा फीता काटकर किया गया। वहीं मुखिया सुलेखा कुमारी ने कहा कि यहां महावीर मंदिर के प्रांगण में सामाजिक बैठक लगातार होते रहता है। जिससे लोगों को शौचालय नहीं रहने के कारण काफी परेशानियां उठाने पड़ती थी। इसी परेशानी को देखते हुए यहां पर सामुदायिक शौचालय का निर्माण कराया गया। मौके पर मुखिया सुलेखा कुमारी, उप मुखिया हेवन्ति देवी,वार्ड सदस्य पूनम कुमारी, पूर्व वार्ड सदस्य प्रतिनिधि आनंद कुमार पासवान, ऋतू रंजन, बिबिता देवी,रजनी देवी, सुमित्रा देवी, सुनीता देवी, समुद्री देवी, मंदिर पुजारी भुला महतो, संदीप कुमार, नीलेश कुमार, नितेश नागों सहित अन्य लोगों उपस्थित थे।

शेफाली गुप्ता ने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ की बैठक

हजारीबाग : भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद दर्शना सिंह के साथ भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने मिलकर 02 अक्टूबर को गांधी मैदान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विशाल जनसभा कार्यक्रम को लेकर युवा मोर्चा, नगर पश्चिमी एंव नगर पूर्वी के भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ बैठक किया। कार्यक्रम को ऐतिहासिक बनाने को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा किया। साथ ही गांधी मैदान में विशाल जनसभा कार्यक्रम की तैयारी की निरिक्षण कर जायजा लिया। मौके पर भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश मंत्री मनमीत अकेला, पूर्व महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष रेणुका साहू, सुमन कुमार उर्फ पप्पू एवं भाजपा युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष राजकरण पांडे सहित कई लोग उपस्थित थे।

अनुप्रिया साव ने 100 केवी के ट्रांसफार्मर का किया उद्घाटन

हजारीबाग : अनुप्रिया फाउंडेशन के संस्थापिका अनुप्रिया साव ने कटकमसांडी प्रखंड के ग्राम गदोखर के ग्रामवासियों को 100 केवी ट्रांसफार्मर की सौगात देकर उनकी बिजली संबंधित समस्या को दूर किया। ट्रांसफार्मर के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि अनुप्रिया साव ने कहा कि आजकल की तकनीकी दुनिया में हर गांव को बुनियादी सुविधाओं को लाभ मिलना चाहिए, जिसमें बिजली तो अति महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में आता है। जब भी मैं हजारीबाग जिले के किसी भी गांव, गली या मोहल्ले में लोगों को बुनियादी सुविधाओं से वंचित देखती हूं फिर मेरा अंतर्मन तब तक शांति की अनुभूति नहीं करता जब तक वो समस्या सुविधाओं में ना बदल जाए। मुझे लोक सेवा की प्रेरणा अपने पिताजी से प्राप्त हुआ है और जीवन पर्यंत मैं लोगों की सेवा करते रहना चाहती हूं। कुंडीलबागी के ग्राम वासियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए अनुप्रिया साव व अनुप्रिया फाउंडेशन के सभी सदस्यों को साधुवाद व आभार प्रकट किया। लोगों का मानना अनुप्रिया फाउंडेशन अपने नायाब इरादे और नेक कोशिशें के लिए जाना जाता है। हर्ष व्यक करने वालों में कुलदीप साव, अजय साव, शमीम अंसारी, अशोक साव, रीता देवी, शिला देवी, सहित ग्रामीण उपस्थित थे।

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडलीय आयुक्त के रूप में पवन कुमार ने किया प्रभार ग्रहण

हजारीबाग : उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल, हजारीबाग के नए प्रभारी प्रमंडलीय आयुक्त के रूप में पवन कुमार ने पदभार ग्रहण किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा (झा.2011) बैच के पवन कुमार ने मंगलवार, 01 अक्टूबर 2024 को निवर्तमान प्रमंडलीय आयुक्त सुमन कैथरीन किस्पोट्टा से पदभार ग्रहण किया। पदभार ग्रहण करने के बाद नये आयुक्त ने अपने कार्यालय कक्ष में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का परिचय प्राप्त किया। आयुक्त के सचिव बासुदेव प्रसाद ने सम्मान स्वरूप पुष्पगुच्छ देकर आयुक्त का स्वागत किया। इससे पूर्व पवन कुमार परियोजना निदेशक, झारखंड एड्स कंट्रोल सोसायटी रांची, के पद पर पदस्थापित थे। झारखंड सरकार के अगले आदेश तक पवन कुमार प्रभारी प्रमंडलीय आयुक्त उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के पद पर रहकर अपने कार्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करेंगे। मौके पर उप निदेशक आनन्द, अवर सचिव रास बिहारी संग सभी अधिकारीगण एवं कार्यालय कर्मीगण मौजूद रहे।

विरोधी फैला रहे हैं अफवाह, कांग्रेस के लिए पूरा परिवार समर्पित रहा है : अंबा प्रसाद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : 2 अक्टूबर को भाजपा में जाने के भ्रामक मैसेज सोशल मीडिया में वायरल होने पर विधायक अंबा प्रसाद ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने इस खबर को बेबुनियाद एवं निराधार बताते हुए खंडन किया है। अंबा प्रसाद ने कहा है कि कांग्रेस पार्टी की सच्ची सिपाही होने के नाते मैं किसी प्रकार से किसी दूसरे दल में शामिल होने का कभी सोच भी नहीं सकती। पूर्ववर्ती भाजपा और आजसू गठबंधन की सरकार के दौरान भी मेरे परिवार को विरोधियों ने काफी प्रताड़ित किया है, उस समय भी भाजपा में शामिल करवाने के लिए कई हथकंडे अपनाए गए। यहां तक की लोकसभा चुनाव के दौरान भी ईडी की छापेमारी सिर्फ परेशान करने के नियत से किया गया। विधायक ने कहा कि अगर हमें दल बदल करना रहता तो मेरे परिवार पर हो रहे अत्याचार के दौरान ही कर लिया जाता लेकिन कांग्रेस पार्टी के सच्चे सिपाही होने के नाते मेरे पिता पूर्व मंत्री योगेंद्र साव व माता श्रीमती निर्मला देवी समेत पूरे परिवार ने काफी प्रताड़ना झेली है, मुझे भी बीच में पढ़ाई छोड़कर राजनीति में आना पड़ा। आज बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र वासियों के लिए विस्थापन से हो रही सभी समस्याओं का जिम्मेदार भाजपा सरकार है, विस्थापितों के हक अधिकार सुनिश्चित कांग्रेस ही कर सकती है। भाजपा में शामिल होने की खबर बिल्कुल बेबुनियाद और निराधार है।

मुन्ना सिंह के नेतृत्व में नगर निगम सफाईकर्मी मिले मंत्री हफीजुल हसन से

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह के नेतृत्व में नगर निगम के सफाई कर्मियों का एक प्रतिनिधिमंडल झारखंड सरकार के अल्पसंख्यक निबंध एवं नगर विकास व आवास विभाग के मंत्री हफीजुल हसन से हजारीबाग सर्किट हाउस में मिला और अपनी मांगें प्रस्तुत की। इस बैठक में सफाई कर्मियों ने अपनी विभिन्न प्रमुख मांगें रखीं, जिनमें शामिल थीं दैनिक मजदूरी पर काम कर रहे कर्मियों को स्थायी करना, सरकार द्वारा वेतन भुगतान के लिए शत-प्रतिशत आवंटन, सेवानिवृत्ति लाभों का सरकारी कोष से भुगतान, निकाय के उच्च पदों पर आंतरिक प्रोन्नति, आउटसोर्सिंग मजदूरों के वेतन का सीधा भुगतान, तथा जीवन बीमा और चिकित्सा लाभ प्रदान करना। नगर निगम के सफाई कर्मी काफी समय से इन मुद्दों को लेकर अपनी आवाज उठा रहे थे। इसी क्रम में उन्होंने कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह से संपर्क किया। इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए, उन्होंने सफाई कर्मियों की आवाज को मजबूती से उठाने का प्रयास किया और मंत्री हफीजुल हसन के समक्ष उनके मुद्दे मजबूती से रखते हुए हर संभव मदद का आश्वासन दिया। इसके अतिरिक्त, मुन्ना सिंह ने नगर आयुक्त योगेंद्र प्रसाद से भी मुलाकात की। उन्होंने आगामी त्योहारों को ध्यान में रखते हुए हजारीबाग की झील और अन्य तालाबों की सफाई और सौंदर्यीकरण पर चर्चा की। नगर आयुक्त ने आश्वासन दिया कि अगले दो दिनों के भीतर सफाई कार्य शुरू हो जाएगा। इन बैठकों में चुमु राम, सुधीर राम, दीपक कुमार, गौतम राम, रविकांत सिंह, बबलू सिंह, रंजीत यादव, उपेंद्र कुशवाहा, सबीर अली, सुजीत सिंह, दिनेश यादव, विक्की कुमार धान, पप्पू सिंह, फिरोज खान, रंगार खान सहित कई अन्य प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

चौपारण में मुखिया व बीईओ ने मध्याह्न भोजन का किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : प्रखण्ड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सियरकोनी में केंद्र सरकार के मध्याह्न भोजन कार्यक्रम अंतर्गत चौपारण पंचायत की मुखीया पिंकी देवी के सौजन्य अतिथि भोजन का आयोजन किया गया। इस दौरान पूर्व डिप्टी डीएसई सह चौपारण बीईओ राकेश कुमार सिंह, मुखिया पिंकी देवी, सीआरपी विश्वनाथ साव सहित अन्य ने विद्यालय के 239 विद्यार्थियों, शिक्षकों के साथ विद्यालय में बने लजीज व पौष्टिक आहार का लुफ्त उठाया। इस दौरान बीईओ राकेश कुमार सिंह, मुखीया पिंकी देवी, एमआईएस पवन कुमार व विद्यालय के प्रभारी मुख्य रूप से विद्यार्थियों के थाली में अपने हाथों से खाना भी परोसते दिखे। मौके पर बीईओ राकेश सिंह ने कहा कि बच्चों को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी की जानकारी के लिए शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा यह बहुत ही रोचक एवं लाभकारी योजना है, जो धीरे-धीरे और अधिक व्यापक एवं इसका सीधा लाभ विद्यार्थियों को मिलेगा। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को मध्यान भोजन उपलब्ध कराने से समाज की भागीदारी को बढ़ावा देना है। इसमें समाज की कोई भी व्यक्ति इस योजना के तहत मध्यान भोजन में योगदान दे सकता है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के जनप्रतिनिधि सामाजिक कार्यकर्ता अधिकारी चाहे किसी का जन्मदिन हो चाहे शादी की सालगिरह हो या अधिक से अधिक योगदान करें ताकि क्षेत्र के बच्चों को इसका लाभ मिल सके। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के प्राचार्य आलोक कुमार प्रियदर्शी, शिक्षक सजंय कुमार सिंह, राजेश कुमार सिंह, सुजीत कुमार रंजन और विद्यालय के रसोइया का योगदान रहा।

वन अधिकार पट्टा की मांग को लेकर प्रदर्शन में शामिल हुए विधायक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : समाहरणालय परिसर में वन अधिकार पट्टा की मांग को लेकर अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा एक दिवसीय धरना आयोजित किया गया। कंचन ग्राउंड से हजारों की संख्या में लोगों ने जुलूस के रूप में समाहरणालय परिसर की ओर मार्च किया। इस जुलूस का नेतृत्व राजेश मेहता, सुंदर मुंडा, मनोहर मुंडा, मन्नू भगत, और टुन्नू बर्णवाल ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उमाशंकर अकेला ने उपस्थित लोगों को आश्वासन दिया कि उनकी मांगों को मुख्यमंत्री तक पहुंचाया जाएगा। उपायुक्त की अनुपस्थिति के कारण धरना स्थल पर अनुमंडल पदाधिकारी हजारीबाग ने उपस्थित लोगों से मांग पत्र लिया। इस कार्यक्रम में जिला परिषद सदस्य रवि शंकर अकेला, संजय यादव, दिनेश यादव, और अन्य कई स्थानीय नेता शामिल हुए, साथ ही हजारों की संख्या में ग्रामीण भी उपस्थित थे।

उपायुक्त ने दुर्गा पूजा के मद्देनजर जिला शांति समिति की बैठक में दिए दिशा-निर्देश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : जिले में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विजयादशमी का त्यौहार शांतिपूर्ण माहौल में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। पूरे जिले में 140 दुर्गा पूजा समिति और मुख्य चार रावण दहन समिति कार्यक्रम स्थल और पूजा पंडाल में मुस्तैद रहेंगे। जिला प्रशासन और पुलिस का पूरा सहयोग उन्हें मिलेगा। यह बातें मंगलवार को जिला शांति सह निगरानी समिति की बैठक में डीसी चंदन कुमार ने कही। डीसी ने कहा कि इस बार का त्योहार चुनौती पूर्ण होने वाला है। चुनावी वर्ष है और आदर्श आचार संहिता कभी भी लागू हो सकता है। ऐसे में पूजा समिति के सदस्य मानसिक तौर पर तैयार रहें। पूजा के दौरान यदि आचार संहिता लगता है तो पूजा समितियों को राजनीतिक माहौल से खुद को दूर कर लेना होगा। पंडालों के पास वॉलिंटियर्स को एक रंग के ड्रेस में रहने का भी सुझाव डीसी ने दिया है ताकि वहां आने वाले श्रद्धालुओं और वॉलिंटियर्स के बीच फर्क साफ नजर आए। इस दौरान डीसी ने प्रखंडवार पूजा समिति के सदस्यों से उनके क्षेत्र की समस्याओं का जायजा लिया। समिति के सदस्यों को रोड से जगह छोड़कर पंडाल बनाने का निर्देश दिया। वही उन्होंने सभी पूजा समितियों को अपने अपने वोलेंटियर चिन्हित कर अपने थाना को सूचित करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने पूजा समिति के सदस्यों को आगजनी की समस्याओं से निपटने के लिए पूजा पंडाल के पास उचित मात्रा में बालू, पानी इत्यादि का प्रबंध रखने का निर्देश दिया। डीसी ने लाइटिंग की व्यवस्था सुदृढ़ रखने एवं अतिरिक्त जनरेटर की भी व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। मेले के दौरान भीड़-भाड़ पर कब रखने हेतु सभी पूजा समितियों को पंडाल से कम से कम 100 मीटर की दूरी पर पार्किंग स्थल चिन्हित करने का निर्देश भी दिया। साथ ही पंडाल में प्रवेश एवं निकासी हेतु महिला एवं पुरुष के लिए अलग-अलग प्रवेश एवं निकासी द्वारा बनाने का निर्देश दिया। डीसी ने हाई कोर्ट के निर्देश पर डीजे बैन के संबंध में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उन्होंने भड़काऊ या अश्लील गाने न बजाने हेतु शख्त निर्देश दिए। सुरक्षा दृष्टि के मद्देनजर उपायुक्त ने सभी पूजा समिति सदस्यों से पंडालों में सीसीटीवी की व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। किसी भी समय अनियमितता या परेशानी आने के क्रम में यथाशीघ्र जिला कंट्रोल रूम फोन संख्या - 06553 222005 में या नजदीकी पुलिस प्रशासन को सूचित करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने पर्व को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण तरीके से मनाये जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि दुर्गा पूजा की पवित्रता बनाए रखने में सहयोग करें। शांति समिति के सभी सदस्यों एवं विभिन्न पूजा समिति के सदस्यों से सोशल मीडिया के माध्यम से किसी भी प्रकार की अफवाह सामने आने पर प्रथम दृष्टया किसी भी हाल में उस पर विश्वास नहीं करने एवं तुरंत इसकी जानकारी नजदीकी थाना व जिला प्रशासन को देने का निर्देश दिया।

हिन्दी दैनिक
प्रत्यूष नवबिहार
जोहार
रांची संस्करण
www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com
रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित
रांची • बुधवार • 02.10.2024 • वर्ष : 15 • अंक : 73 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

झारखंड कैबिनेट की बैठक आठ को

रांची : झारखंड कैबिनेट की बैठक आठ अक्टूबर को होगी। इस संबंध में मंगलवार को मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग (समन्वय) ने सूचित किया है कि मंत्रिपरिषद की बैठक अपराह्न 4:00 बजे से झारखंड मंत्रालय (प्रोजेक्ट भवन) स्थित मंत्रिपरिषद कक्ष में होगी।

पीएम मोदी आज हजारीबाग में फूंकेंगे परिवर्तन का बिगुल

रांची : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दो अक्टूबर को झारखंड दौरे पर हजारीबाग आएंगे और मटवारी गांधी मैदान में परिवर्तन सभा को संबोधित करेंगे। वे हजारीबाग की धरती से कई योजनाओं की सौगात देंगे। इसके अलावा वे मटवारी गांधी मैदान में भाजपा की परिवर्तन यात्रा महासभा को संबोधित करेंगे। इस दौरान वे 3 घंटे 25 मिनट तक प्रदेश में ही रहेंगे। उनके आगमन को लेकर प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। प्रधानमंत्री मोदी 17 दिनों में दूसरी बार झारखंड दौरे पर आ रहे हैं जबकि हजारीबाग में तीसरी बार आ रहे हैं। सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी दो अक्टूबर को दो बजे हजारीबाग पहुंचेंगे।

हेमन्त सोरेन ने 1240 करोड़ 57 लाख रुपये की लागत से 50 योजनाओं की दी सौगात

बुजुर्गों को पेंशन, महिलाओं को सम्मान और युवाओं को दे रहे रोजगार : मुख्यमंत्री

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने बोकारो जिले के चंदनक्यारी प्रखंड स्थित चंडीपुर में आयोजित कार्यक्रम में स्वास्थ्य, सड़क परिवहन और ऊर्जा के क्षेत्र में तीन बड़ी सौगात सहित 50 विकास योजनाओं का मंगलवार को ऑनलाइन उद्घाटन-शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने यहां 500 बिस्तर की क्षमता वाले मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की आधारशिला रखी। साथ ही तेनुघाट थर्मल पावर स्टेशन ललपनिया में 500 मेगावाट का सोलर पावर स्टेशन और रामगढ़ जिला के पतरातू में रेल ओवरब्रिज का ऑनलाइन शिलान्यास किया।

लोगो को संबोधित करते हुए हेमंत ने कहा कि झारखंड अलग राज्य की लड़ाई इसलिए भी लड़ी गई थी कि यहां की आर्थिक गतिविधियों में आदिवासियों-मूलवासियों को रोजगार और अधिकार मिले लेकिन अलग राज्य गठन के 20 वर्षों तक यहां के आदिवासी-मूलवासियों को आर्थिक गतिविधियों से अलग रखने का कार्य किया जाता रहा। जब हमारी सरकार बनी तो हमने यहां के सभी सभी निजी संस्थानों में स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाने के लिए नीति बनाई। इसी नीति का नतीजा है कि राज्य में संचालित कल-कारखानों और संस्थानों में स्थानियों को रोजगार मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के हर वर्ग और तबके को आगे बढ़ाने के लिए सरकार की योजनाएं हैं। आज हर बुजुर्ग को पेंशन मिल रहा है। महिलाओं को सम्मान राशि देने का ऐतिहासिक निर्णय लिये हैं। किसानों के दो लाख रुपये तक का कर्ज माफ हो चुका है। 200 यूनिट

चंदनक्यारी में योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास करते हेमन्त सोरेन

बिजली फ्री देने के साथ बकाया बिजली बिल माफ का दिया गया है। इसके अलावा अनेकों और योजनाएं हैं, जिनके माध्यम से राज्य वासियों को सशक्त बना रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड में विस्थापन हमेशा से एक बड़ी समस्या रही है। यहां उद्योग-धंधे के लिए जमीन अधिग्रहण कर लिया जाता है लेकिन जो विस्थापित होते हैं, उन्हें वर्षों तक उनका हक-अधिकार नहीं मिल पाता है। विस्थापितों की पीढ़ी दर पीढ़ी अपने वाजिब हक के लिए लगातार संघर्ष करती रहती है। कई मामलों में तो ऐसा लगता है कि कल-कारखाने लगने के साथ विस्थापित ना जाने कहां गुम हो जाते हैं। हमारी सरकार विस्थापितों के दुःख-दर्द से भली-भांति वाकिफ है। ऐसे में उन्हें उनका हक अधिकार मिले, राज्य सरकार उनके साथ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गरीबों का जीवन हमेशा से ही संघर्षमय होता है लेकिन हमारी सरकार विभिन्न क्षेत्रों में नई पहचान बनाते हुए जन-जन तक पहुंच रही है। हम गांव को समृद्ध कर रहे हैं और गरीब कैसे आगे बढ़े, इस दिशा में लगाकर काम कर रहे हैं। हमारी ऐसी कई योजनाएं हैं, जिनके माध्यम से गरीबों के जिंदगी में सकारात्मक बदलाव लाने का काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज भी ऐसे कई गांव है जहां के लोगों ने कभी ब्लॉक ऑफिस नहीं देखा। ऐसे लोग भी हैं, जो पेंशन और राशन कार्ड बनवाने के लिए ब्लॉक ऑफिस का बार-बार दौड़ लगाकर थक जाते थे लेकिन उनका काम नहीं बनता था। हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं, बल्कि गांवों से चल रही है। आज अधिकारी आपके दरवाजे पर पहुंचकर आपकी समस्याओं का समाधान कर रहे हैं । सरकार की योजनाओं से जोड़कर आपको सशक्त बना रहे हैं।

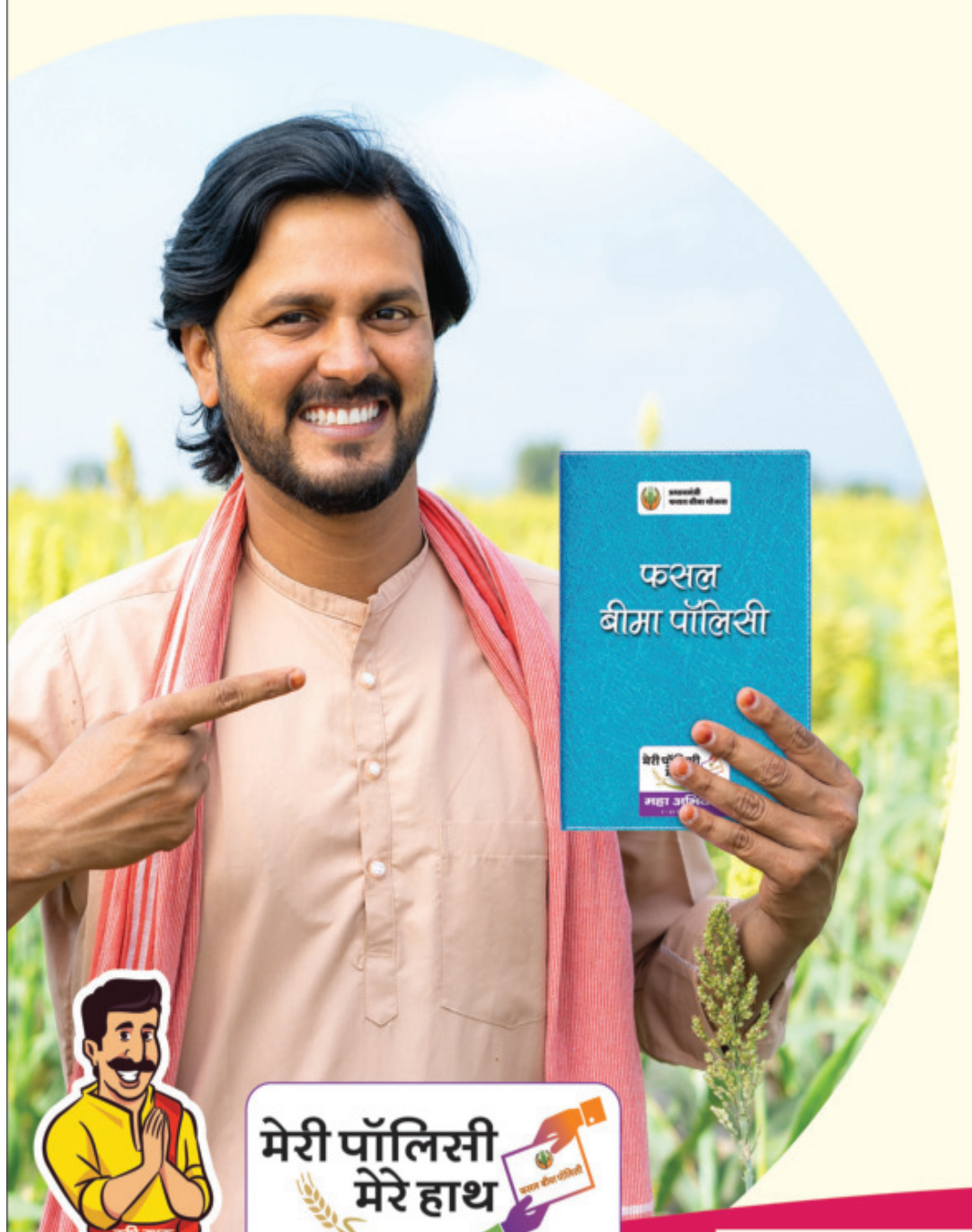

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड से बड़ी संख्या में मजदूर दूसरे राज्यों और देशों में रोजगार के लिए जाते हैं। ऐसे में देश-विदेश में काम कर रहे मजदूरों के मुश्किल की घड़ियों में सरकार हमेशा उनके साथ खड़ी रहती है। दुनिया के किसी भी कोने में अगर इस राज्य के किसी मजदूर की मौत किसी भी परिस्थिति में होती है तो उसके पार्थिव शरीर को उसके घर तक पहुंचाने का जिम्मा सरकार उठाती है। यदि यहां के मजबूर विदेश में फंस जाते हैं तो उन्हें उनके घर वापस लाने के साथ उन्हें विभिन्न योजनाओं के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराते है। हमारी सरकार हर परिस्थितियों में मजदूरों के हितों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है।

एक नजर

तंबाकू का सेवन नहीं करने की ली शपथ

धनबाद : राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती की पूर्व संध्या पर सिविल सर्जन डॉ चंद्रभानु प्रतापन की अध्यक्षता में तम्बाकू उत्पादों का सेवन नहीं करने के लिए शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन सिविल सर्जन कार्यालय में किया गया। कार्यक्रम में डॉ मंजु दास, जिला नोडल पदाधिकारी, जिला तम्बाकू नियंत्रण कोषांग, जिला आर.सी.एच. पदाधिकारी डॉ रोहित गौतम एवं कार्यालय में कार्यरत अन्य पदाधिकारियों एवं कर्मियो को तम्बाकू उत्पादों का उपयोग या सेवन नहीं करने एवं अपने परिजनों, मित्रों या परिचितों को भी तम्बाकू उत्पादों का सेवन नहीं करने तथा अपने पर्यावरण को भी तंबाकू उत्पादों के उपयोग से होने वाले दुष्प्रभाव से बचाने में योगदान करने से संबंधित सामुहिक शपथ दिलाई गई। इस मौके पर सिविल सर्जन ने तंबाकू से होने वाले दुष्परिणामों की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही जिला तंबाकू नियंत्रण कोषांग द्वारा स्वास्थ्य कर्मियो, सफाई कर्मियो, सदर अस्पताल के कर्मियों एवं अन्य सरकारी विभागों में हस्ताक्षर अभियान भी आयोजित किया गया।

मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम में बोकारो को मिला प्रथम पुरस्कार

बोकारो : राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम अन्तर्गत पूरे राज्य में बोकारो जिला को बेहतर कार्य करने हेतु प्रथम पुस्कार दिया गया। यह पुरस्कार पिछले दो वर्षों के कार्यों का मुल्यांकन करते हुये दिया गया। पिछले दो वर्षों में डा0 प्रशान्त कुमार मिश्रा मनोचिकित्सक बोकारो के द्वारा मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत कुल 95 आउटरीच शिविर, 20 स्कूल 5 कालेज में जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन, 20 स्कूल के शिक्षको के साथ आत्म हत्या रोकथान पर कार्यशाला के अलावा 6723 मानसिक रोगी का इलाज सदर अस्पताल में किया गया। डा0 प्रशान्त कुमार मिश्रा के द्वारा समय समय पर बाल सुधार गृह का भ्रमण भी किया जाता है। डा0 प्रशान्त कुमार मिश्रा को यह पुरस्कार रिम्पास की निदेशक डा0 जयन्ती सिमलई के हाथों दिया गया।

104 ठेकाकर्मियों ने जय झारखंड मजदूर समाज पार्टी की सदस्यता ग्रहण की

बोकारो : जय झारखंड मजदूर समाज कार्यालय सेक्टर-9 मे जय झारखंड मजदूर समाज मे आस्था और विश्वास रखते हुए फेरो स्क्रेप निगम लिमिटेड मे कार्यरत कुल 104 ठेकाकर्मीयों ने महामंत्री बि के चौधरी के समक्ष युनियन का सदस्यता ग्रहण करते हुए कहा कि आज बोकारो स्टील प्लांट मे एक मात्र युनियन जय झारखंड मजदूर समाज है जो गरीब असहाय मजदूरों के लिये आर्थिक और मानसिक शोषण के खिलाफ लड़ाई लड़कर मजदूरों को उनको शोषण मुक्त करने का काम कर रहा है और यही देख सुनकर हमलोग पूरे निष्ठा और बिस्वास के साथ सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं । महामंत्री बि के चौधरी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि जय झारखंड मजदूर समाज झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता माननीय शिबू सोरेन जिस तरह से गरीब असहाय एवं शोषित बर्ग के सर्वांगीण विकास के लिए लड़कर उनका हक अधिकार दिलाने के जिन्दगी भर लड़ाई लड़े और उनका अधिकार दिलबाने का काम करते रहें है उन्ही के मूल मंत्र को जय झारखंड मजदूर समाज के गठन के समय से आत्मसात कर मजदूरों के लिए कार्यरत है और कार्यरत रहेगा।

बोकारो में इस्पात संयंत्र में राजभाषा पखवाड़ा समारोह का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : इस्पात संयंत्र में हिन्दी दिवस सह राजभाषा पखवाड़ा का समापन समारोह 01 अक्टूबर को मानव संसाधन के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग स्थित मेन ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया. इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी, विशिष्ट अतिथियों में अधिशासी निदेशक सुरेश रगानी, अधिशासी निदेशक राजन प्रसाद, बोकारो जनरल हॉस्पिटल के प्रभारी डॉ बी बी करुणामय सहित बीएसएल के मुख्य महाप्रबंधकगण, अन्य वरीय अधिकारी तथा पुरस्कार विजेता उपस्थित थे। समारोह में नराकास संगठन के सदस्यगण भी शामिल थे। समारोह के आरम्भ में अतिथियों का स्वागत महाप्रबंधक सी आर के सुधांशु ने किया। मुख्य अतिथि निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी ने कहा कि अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है और उसे सुदृढ़ करने में हिन्दी भाषा ने अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने हिंदी की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहाकि भाषा वह माध्यम है जिससे हम सभी अपने विचारों को व्यक्त करते हैं तथा हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसने सभी भाषा को आत्मसात किया है, इसलिए हम सभी को इसे एक संपर्क भाषा के रूप में गर्व के साथ अपनाना चाहिए और कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। इस अवसर पर स्थानीय कविगण परमेश्वर भारती, नरेंद्र कुमार राय, करुणा कलिका तथा सुश्री कस्तूरी सिन्हा के द्वारा काव्य पाठ प्रस्तुत किया गया जिसका कार्यक्रम में उपस्थित सुधीजनों के द्वारा भरपूर सराहना किया गया। अधिशासी निदेशक सुरेश रंगानी ने कहा कि हिंदी हमारी राज भाषा है तथा हमारे देश के बहुत बड़े क्षेत्र में मातृभाषा के रूप में बोली जाती है। अधिशासी निदेशक राजन प्रसाद ने कहा कि हिंदी हमारी संस्कृति का प्रतीक है अतः हम सभी को अधिकाधिक हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। बोकारो जनरल हॉस्पिटल के प्रभारी डॉ बी बी करुणामय ने कहा कि हिंदी भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति की धरोहर है इसलिए हम सभी को अपने लेखन में भी अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रभारी चल वैजयन्ती ट्रॉफी से यातायात विभाग को सम्मानित किया गया। स्वर्गीय शंकर दयाल सिंह चल वैजयन्ती ट्रॉफी सी ई डी बिभाग को तथा अध्यक्षीय चल वैजयन्ती ट्राफी सी ओ & सी सी विभाग को प्रदान किया गया। बोकारो नराकास अध्यक्षीय चल वैजयन्ती का प्रथम पुरष्कार हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड को, द्वितीय पुरष्कार बैंक ऑफ इंडिया तथा तृतीय पुरष्कार हिदुस्तान स्टील कंस्ट्रक्शन लिमिटेड को प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सामग्री प्रबंधन विभाग की प्रबंधक सुश्री तनु प्रिया ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक महा प्रबंधक शशांक शेखर ने किया।

सीएम ने अधिवक्ताओं का जताया आभार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन द्वारा अधिवक्ताओं के हित में लिए गए निर्णय के लिए बोकारो के अधिवक्ताओं ने इंडियन एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स के नेशनल कौंसिल मेंबर अधिवक्ता रणजीत गिरि के नेतृत्व में मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन को अधिवक्ताओं के तरफ से शॉल ओढ़ाकर व गुलदस्ता देकर सम्मानित किया। प्रतिनिधिमंडल में अधिवक्ता दिनेश शर्मा, अतुल कुमार, प्रमोद कुमार, हसनैन आलम, संजीत महतो, संजीत कुमार सिंह, दीपिका सिंह, संदीप सिंह, शामिल थे। मुख्यमंत्री ने बोकारो के उपायुक्त को झारखंड हाई कोर्ट के तहत चंद्रपुरा, दुगदा, जरीडीह थाना को बोकारो कोर्ट से जोड़ने के लिए पहल करने का आदेश दिया साथ ही साथ बोकारो बार के लिए बोकारो कोर्ट परिसर के पास जमीन उपलब्ध करवाने का आदेश दिया। श्री गिरि ने मुख्यमंत्री से झारखंड में एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट लागू करने के लिए विधेयक लाने का आग्रह किया जिस पर मुख्यमंत्री ने अधिवक्ता हित में फैसला लेने का अश्वाशन दिया। अधिवक्ताओं ने उपस्थित सभी मंत्रियों बेबी देवी, बन्ना गुप्ता, राजेश ठाकुर, अनूप सिंह को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

धनबाद में जमीन कारोबारी मो शाहबुद्दीन की गोली मारकर हत्या

- 3 बाइक सवार अपराधियों ने गर्दन में सटा कर मारी गोली
- बुलेट से आए थे अपराधी
- खामारगोढ़ा मौजा में तीन दिन पूर्व भी जमीन को लेकर गोली चलने की खबर आई थी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : मंगवार की दोपहर में धनबाद शहर के अशर्फी के पास पांडरपाड़ा निवासी सन डेवलपर नामक जमीन कारोबारी मोशाहबुद्दीन सिद्दीकी को अज्ञात अपराधी ने पीछे से गर्दन में सटा कर गोली मारी है,घटना के वक्त शाहबुद्दीन अपने कार्यालय से निकल रहे थे,सनद रहे कि पूर्व में मो शाहबुद्दीन को प्रिंस खान द्वारा धमकी मिलने के बाद जिला प्रशासन ने उसे बॉडी गार्ड उपलब्ध हुई था,जिसे बाद में बॉडीगार्ड को वापस ले गया था। घटना के बाद कई तरह के चर्चा हो रही है,घटना के बाद घायल जमीन कारोबारी को तत्काल असर्फी हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया है,जहां डॉक्टर ने उसे घटना की सूचना पाकर भूली धनबाद थाना पुलिस के बाद विधि व्यवस्था डी एस पी दीपक कुमार सहित अन्य आला अधिकारी असर्फी हॉस्पिटल पहुचकर घटना का जायजा ले रहे है। बताते ही कि घटना में मोड्ड शाहबुद्दीन सिद्दकी की मौत हो गई है,तीन बाइक सवार अपराधियों ने ऑफिस से निकलते वक्त मारी है गोली, पूर्व में गैंगस्टर प्रिंस खान ने दी थी जान से मारने की धमकी के बाद बॉडीगार्ड कराया गया था उपलब्ध लेकिन बाद में वापस ले लिया गया था। सूत्र बताते है हो मृतक पांडरपाड़ा में स्कूल संचालक भी है।

प्रांतीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में सरस्वती शिशु मंदिर श्यामडीह के बच्चों का उम्दा प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : विद्या विकास समिति के तत्वावधान में आयोजित 35 वां प्रांतीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता 26 सितंबर से 30 सितंबर तक पद्मावती जैन सरस्वती शिशु मंदिर चाइबासा में संपन्न हुई। इस प्रतियोगिता में झारखंड प्रांत के 47 विद्यालयों के लगभग 600 प्रतिभागी बच्चों ने हिस्सा लिया जिसमें अपने विद्यालय के 30 प्रतिभागी भैया/बहन थे। विजेता खिलाड़ी किशोर वर्ग भैया में शांतनु पटवा 5000 मीटर पैदल चाल में प्रथम धीरज सिंह लंबी कूद एवं त्रिकूद में द्वितीय आलेख पासवान ने चक्का फेक में प्रथम हैमर थ्रो में प्रथम एवं गोला फेक में तृतीय स्थान प्राप्त किया, वही तरुण वर्ग में शिवम कुमार ऊंची कूद 800 मीटर दौड़ में प्रथम 400 मीटर बाधा दौड़ में तृतीय सुधांशु त्रिकूद में प्रथम सागर चौधरी ने हैमर थ्रो में द्वितीय भाला फेक में तृतीय स्थान प्राप्त किया एवं बाल वर्ग बहनों में अराधना कुमारी ऊंची कूद में द्वितीय किशोर वर्ग बहनों में कशिश कुमारी ने 100 मीटर बाधा दौड़ में तृतीय 400 मीटर बाधा दौड़ में द्वितीय तरुण वर्ग बहन में अंजली कुमारी 200 मीटर में द्वितीय स्थान एवं तरुण वर्ग के भैया वर्ग में 4100 मीटर रिले दौड़ में द्वितीय एवं 4400 रिले दौड़ में तृतीय स्थान प्राप्त किया। तरुण वर्ग भैया वर्ग में सर्वश्रेष्ठ द्वितीय स्थान एवं किशोर वर्ग भैया वर्ग में सर्वश्रेष्ठ में तृतीय स्थान कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। ज्ञातव्य हो कि उक्त प्रतियोगिता से सभी वर्गों के प्रथम द्वितीय विजेता प्रतिभागी भैया बहन क्षेत्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए 16 से 19 अक्टूबर को भागलपुर जाएंगे। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यक्ष प्रदीप खेमका सचिव विक्रम राजगाढिया प्रधानाचार्य अभिमन्यु कुमार उप प्राचार्य श्रेया सरकार एवं विद्यालय के खेल शिक्षक राजकुमार महतो विवेक सिंह एवं अंजली सिंह इन सभी विजेता भैया /बहनों की उपलब्धि की प्रशंसा करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की एवं गौरवशाली भविष्य के लिए सभी विद्यालय परिवार को बधाई दी।

प्रेस क्लब के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को दुर्गा पूजा कमेटी ने किया सम्मानित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : मंगलवार को श्री श्री सार्वजनिक तेतुलतल्ला दुर्गा पूजा समिति, तेतुलतल्ला, पुराना बाजार के तरफ से धनबाद प्रेस क्लब 2024-27 के नवनिर्वाचित कमिटी के पदाधिकारियों के सम्मान में तेतुलतल्ला में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह कार्यक्रम में पूजा कमिटी के अध्यक्ष जयदेव मनोज गुप्ता एवं सचिव सुरेंद्र यादव ने सभी नवनिर्वाचित कमिटी को मोमेंटो देकर सम्मानित किया।साथ ही धनबाद प्रेस क्लब के उपस्थित सदस्यों को कमिटी ने मोमेंटो देकर सम्मानित किया। पूजा कमिटी के अध्यक्ष जे डी दा ने बताया कि श्री श्री सार्वजनिक तेतुलतला दुर्गा पूजा समिति द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भव्यपूजा एवं मेला का आयोजन किया जा रहा है। पूजा का शुरूआत स्वर्ग हरेंद्र नाथ मुखर्जी, स्व. शंभू बनर्जी, स्व. नेताई दा एवं शांति बरारी ने किया था। इस वर्ष पंडाल का निर्माण सोनपुर एवं 20 कुशल कारीगरों द्वारा भव्य भगवान श्री कृष्ण का रूप दिया जा रहा है पंडाल के अन्दर श्री भगवान विष्णु के 10 रुप का दर्शन होगा। मां दुर्गा एवं अन्य प्रतिमा का निर्माण प्रसिद्ध मूर्तिकार टिंकू पाल कर रहे हैं। सभी प्रतिमाएं मोरपंख के द्वारा बनाया जा रहा है। पंडाल का ऊंचाई 45 फीट, चौडाई 60 फीट का होगा। प्रकाश व्यवस्था पंकज कुमार सोनकर के द्वारा किया जाएगा। पूजा हेतु किशोर मुखर्जी देवघर एवं अन्य पंडित को बुलाया गया है।

ओल्ड एज होम में वृद्धों को सम्मानित कर मना वृद्धजन दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : सबलपुर, सहयोगी नगर स्थित वृद्धजनों का आश्रय स्थल ओल्ड एज होम में मंगलवार को बहुत ही श्रद्धा से अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आश्रम में धनबाद के अवर न्यायाधीश सह डालसा के सचिव राकेश रौशन, धनबाद जिला समाज कल्याण विभाग की पदाधिकारी अनीता कुजूर समाज कल्याण विभाग नियाज अहमद समेत धनबाद के कई समाजसेवी संस्था के सदस्योंझसदस्याओं ने ओल्ड एज होम पहुंचकर समस्त वृद्धजनों को माला पहनाकर एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया। न्यायाधीश राकेश रोशन ने कहा आज बुजुर्गों के सम्मान का दिन है। धनबाद में दो वृद्धजनों का आश्रम है जिनके अध्यक्ष नौशाद गद्दी ने आग्रह किया की आज के दिन कम से कम 5 मिनट के लिए भी ओल्ड एज होम आए जो कोर्ट से नजदीक ही है। जबकि आज कोर्ट डे है, लेकिन उनका आदर सम्मान के लिए आजसे अच्छा कोई दिन नहीं हो सकता था वृद्धजनो संग सेलिब्रेट करने का यह सोचकर आश्रम में उन्हें सम्मानित करने पहुंचा हूं।उन्होंने कहा धनबाद में जो दो ओल्ड एज होम है दिल से चाहेंगे कि यहां किसी आश्रम या ओल्ड एज होम में वृद्धजन ना हो, हमेशा चाहेंगे की ये खाली रहे। सभी वृद्ध जनों को अपने घर में भरपूर मान सम्मान प्यार सेवा मिले। लेकिन फिर भी आज सोसाइटी में जो भी ऐसे बेटे हैं जो इस हालत में अपने माता-पिता को छोड़ चुके हैं, उनसे प्रार्थना रहेगा की आपका ऐसा कोई दिन नहीं रहे जिस दिन आपको बिना मां-बाप के बिना जीना पड़े। मां को प्यार करने वाले इस बेचैन दुखी बेटे से पूछिए जिनकी मां नहीं है। माता-पिता को सम्मान दीजिए। माता-पिता को बहुत आदर भाव से रखिए।जैसे जब आप बच्चे थे तो माता-पिता आपके जीवन पोषण के लिए कितना डेडीकेटेड रहते थे। इस तरह उतना ही डेडीकेटेड आपको माता पिता के प्रति होना चाहिए। जीवन में इस सेवा से मिला आत्मिक और हार्दिक शांति से बड़ा कुछ नहीं। उन्होंने कहा आश्रम में वृद्ध जनों की सुविधा शीघ्र ही बढ़ाई जाएगी।आश्रम के अध्यक्ष नौशाद गद्दी ने कहा न्यायाधीश राकेश रोशन को हम सभी हृदय से धन्यवाद देते हैं कि अपना कीमती समय निकालकर अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस में वृद्ध जनों के बीच पहुंचकर उनको सम्मानित कर उनका हौसला बढाए हैं। और जब से न्यायाधीश राकेश रौशन धनबाद आए हैं तभी से आश्रम के वृद्धजनों का बहुत ही ख्याल रख रहे हैं। कई स्वास्थ्य जांच और योजनाओं का लाभ वृद्धजनों को दे चुके है। साथ साथी आज के दिन आश्रम में आए हुए पंख एक नई दिशा के सदस्याओं, रोटी बैंक एवं अन्य संस्थाओं का बहुत-बहुत धन्यवाद और आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने आज आश्रम पहुंच कर समस्त वृद्धजनों को सम्मान और सेवा दिया है। साथ ही साथ आश्रम में वृद्ध जनों के जीवन यापन एवं स्वास्थ्य के प्रति किसी तरह का सहयोग करने वाले सारे बेटे बेटियों का मैं नमन करता हूं जिनके सहयोग से जिन बच्चों ने अपने मां बाप को छोड़ दिया है उन असहाय प्यार के भूखे माता पिता तुल्य वृद्धजनों को हम सब प्यार, सम्मान अपनापन और सुविधा देकर आश्रम संचालित कर रहे हैं। इस अवसर पर जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी सह जिला नोडल पदाधिकारी डॉक्टर मंजू दास, डी पी सी रेखा सिंह, लालदेव रजक जिला कार्यक्रम सहायक फाउंडेशन की अध्यक्ष नीतू तिवारी, ऋतु गुप्ता, शिव शंकर गुप्ता, रिंकू, आदि उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रांगण में मुफ्त नेत्र जांच शिविर लगाया गया

धनबाद : मंगलवार को लायंस विश्व सेवा सप्ताह के अंतर्गत लायंस क्लब ऑफ कतरास के द्वारा निचितपुर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रांगण में मुफ्त नेत्र जांच शिविर लगाया गया जिसमें करीब 17 मरीज का मुफ्त नेत्र जांच किया गया तथा नेत्र संबंधित मुफ्त सलाह दिया गया कार्यक्रम में मुख्य रूप से नेत्र चिकित्सक डॉक्टर दीपक कुमार लायंस क्लब ऑफ कतरास के डॉक्टर रूद्रेश,डॉक्टर स्वतंत्र कुमार, कृष्ण कन्हैया राय, अचिंतो कुमार बॉस संजय कुमार,अनूप सिंह,चंदन सिंह इत्यादि उपस्थित थे।

कतरास हटिया का इलाका जल्द हाईमास्ट लाईट से होगा रोशन

धनबाद : खुशखबरी भट्टमुरना मोड़ व कतरास हटिया का इलाका जल्द ही हाईमास्ट लाईट का रौशनी से चक्काचौध जगमगाएगा। हाईमास्ट लाईट लगाने के लिए उसके बुनियाद की कटाई दोनों स्थानों पर धनबाद नगर निगम के निर्देश पर संवेदक मो नौशाद ने शुरू करा दिए है। इसे लेकर स्थानीय लोगों में खुशी का माहौल है। बुनियाद का कटाई के दोरान समाजसेवी मधुमाला, डॉ स्वतंत्र कुमार, विष्णु चौरसिया,अमर सेन, पिंटू सेन,मिंटू चंद्र,संजय कुमार, अनुराग राजगढ़िया, बिरु महतो, बिमल रजवार,समेत दर्जनों लोग उपस्थित थे। लाईट लगाने के लिए बुनियाद कटाई का कार्य शुरू होने पर लोगों ने मिठाई बाटकर खुशी जाहिर किया। इधर लिलोरी मंदिर पार्क के पास से भट्टमुरना तक लगने वाली स्ट्रीट के लिए भी बुनियाद कटाई का कार्य संवेदक ने शुरू करा दी है। जिसका निरिक्षण एनएचएआई के प्रतिनियुक्त अधिकारी अंकित कुमार, निगम के जेई दीपक कुमार, अंकित सिंह, आलिशा कुमारी, विशाल कुमार के अलावा संवेदक मो नौशाद थे। मधुमाला ने इस दौरान निगम के अधिकारियों से कहा दुर्गा पूजा से पूर्व सप्तमी तक हर हाल में लगे स्ट्रीट लाइटे जलनी चाहिए। अधिकारियों ने भी समाजसेवी मधुमाला को आश्वस्त किया है कि हरसंभव लगे सभी लाइटे जला दी जाएगी।

भाटडीह ओपी परिसर में शांति समिति की हुई बैठक

धनबाद : भाटडीह ओपी परिसर में प्रभारी बालमुकुंद सिंह के अध्यक्षता में दुर्गा पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। संचालन पत्रकार अजय तिवारी ने किया, बैठक में दुर्गा पूजा समिति के सदस्यों के साथ शांति समिति के सदस्यगण मौजूद रहे। पूजा समिति के सदस्यों ने सुरक्षा व्यवस्था को लेकर प्रशासन से सहयोग की मांग की। रोड के किनारे उगे झाड़ियों कि सफाई, लाइट कि व्यवस्था, त्योहार मनाने वाले झंडा पताखा अपने समुदाय तक ही सीमित रखना,कुछ जगहों से झाकी सुबह में निकाला जायगा जहा पुलिस कि मौजूदगी, रोड पर कई जगहों में जानवर खुले में बैठना सहित कहीं छोटी-मोटी बातों को रखा गया। वहीं प्रभारी ने अपने संबोधन में कहा कि सभी समस्या का समाधान होगा, पांचो पंडालो में वालंटियर की व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा गया,दुर्गा पूजा में किसी भी अवसर पर डीजे का प्रयोग नहीं करना है। डीजे पर पूरी तरह से न्यायालय के आदेशानुसार निर्गत कथन का पालन करना है। दुर्गा पूजा के दौरान अशांति और अफवाह फैलने वालों पर कड़ाई से कार्रवाई की जाएगी। किसी भी समय किसी भी प्रकार की समस्या और अफवाह वाले मैसेज की सूचना तत्काल पुलिस और पूजा के दौरान जारी सहायता नंबर पर देना है। पूजा के दौरान मेला घूमने वालों में सभी समुदाय के लोग शामिल रहते हैं। ऐसे में सामाजिक सौहार्द बनाए रखना है और शांतिपूर्ण तरीके से दुर्गा पूजा मनाएं। मौके पर मुखिया संपत गोसाई, मुखिया बदरूदिन अंसारी, अब्दुल समद अंसारी ,रेनू कुमारी ,सुषमा देवी, बसंती देवी, संजय आदि उपस्थित थे।

विधानसभा चुनाव को लेकर भाजपा ने की बैठक

धनबाद : मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी राजगंज के नगरीकला दक्षिण पंचायत भवन में विधानसभा चुनाव 2024 को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक सात पंचायत एंवम नगर निगम वार्ड 4 के तीन पंचायत की बैठक रखी गई आगमी विधान सभा चुनाव में भाजपा को कमल फुल खिला कर अपना विधायक बनाना है उसी निमित्त विधानसभा की तैयारी को लेकर विशेष रूप से चर्चा हुई एवम पाटी का दिया हुआ सभी काम को सम्पन करना है। इस बैठक में मुख्य रूप से पश्चिमी बंगाल छतना विधानसभा से विधायक सत्यनारायण मुखोउपाध्याय एवंम टुंडी विधान सभा के चुनाव प्रभारी सह भाजपा प्रदेश कार्यसमित सदस्य रमेश कुमार राही का चुनाव की तैयारी को लेकर हम सभी कार्यकर्ता का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ बैठक की अध्यक्षता भाजपा राजगंज मंडल अध्यक्ष रंजीत सिंह, ने किया एवं संचालन संजीत सिंह धन्यवाद ज्ञापन अमरेश कुमार ने किया मौके पर टुंडी विधानसभा भाजपा के पूर्व प्रत्याशी विक्रम पाण्डेय, ज्ञानरंजन सिन्हा, रामप्रसाद महतो, रमेश महतो, प्रदीप वर्मा, पप्पू साव, असीम दत्ता, अजय साहनी, अशोक निषाद, संजीव कुमार, शशि कुमार, चंद्रभान प्रसाद, लक्ष्मीकांत सिन्हा, सुबोध सिंह, लक्ष्मण कुमार, संजय सिंह, शंकर निषाद, मनोज सिंह, अशोक झा, जयकुमार, सिया सिंह, सपना सिंह, गीता बेसरा रीता देवी, शोभा प्रेम, जसवंत सिंह, मनोज वर्मा, सपन पंडित, झड़ी महतो, शंकर महतो, बसंत सिंह, हराधन रवानी, डब्लू कुमार, विश्वनाथ रवानी, सिंकु पांडे, पप्पू सोनी, राजाराम चौहान, आदि उपस्थित थे।

एक नजर

रांची के नए उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने पदभार संभाला

रांची : रांची के नये उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने मंगलवार को समाहरणालय ब्लॉक-ए स्थित उपायुक्त कार्यालय कक्ष में पदभार ग्रहण किया। इस मौके पर पूर्व उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने उन्हें शुभकामनाएं दी। पदभार ग्रहण करने के बाद उपायुक्त-सह-जिला दंडाधिकारी मंजूनाथ भजंत्री ने कहा कि त्योहार के सीजन की शुरूआत हो रही है। जिला प्रशासन की प्राथमिकता शांतिपूर्ण तरीके से त्योहार संपन्न कराना है। साथ ही उन्होंने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को पंचायत स्तर पर बेहतर तरीके से पहुंचने का प्रयास किया जाएगा। आगामी विधानसभा चुनाव से संबंधित तैयारियों पर उपायुक्त ने कहा कि पूर्व से ही तैयारियां की गई हैं, उसे आगे बढ़ाया जाएगा। सभी पदाधिकारी अनुभवी हैं। हम टीमवर्क के साथ सभी चुनौतियों का सामना करेंगे। मंजूनाथ भजंत्री 2011 बैच के आईएएस अधिकारी हैं।

अपराधियों ने हाई कोर्ट के अधिवक्ता को मारी गोली

रांची : राजधानी रांची में एक बार फिर से अपराधियों ने गोलीबारी की घटना को अंजाम दिया। मंगलवार की शाम हथियारबंद अपराधियों ने झारखंड हाई कोर्ट के वकील बबन प्रसाद को गोली मारकर घायल कर दिया। घायल वकील मूल रूप से रातू थाना क्षेत्र के ब्रजपुर का रहने वाला है। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि अधिवक्ता हाईकोर्ट से अपना घर जा रहे थे। इसी दौरान पहले से घात लगाकर बैठे अपराधियों ने इस घटना को अंजाम दिया। अधिवक्ता को पीठ में गोली लगी है। जिसके बाद उन्हें रिम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच में जुटी हुई है। अधिवक्ता को किस वजह से गोली मारी गई है अब तक इसके पीछे का सही वजह सामने नहीं आ पाया है।

ब्राउन शुगर की खरीद बिक्री करते दो युवक गिरफ्तार

रांची : ब्राउन शुगर की खरीद बिक्री करते दो युवक गिरफ्तार किए गए हैं। कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए के नेतृत्व में पुलिस की टीम ने कार्रवाई करते हुए सुखदेवनगर थाना क्षेत्र के रहने वाले अंकित कुमार और हिंदपीढ़ी का रहने वाला मो। कैफी को गिरफ्तार किया है। इन दोनों की गिरफ्तारी सुखदेवनगर थाना क्षेत्र के विद्यानगर मैदान के पास से हुई है। इनके पास से पुलिस ने 30 पुड़िया ब्राउन शुगर बरामद हुआ है। मंगलवार को कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किशोरगंज विद्यानगर मैदान के पास अवैध नशीले पदार्थों का खरीद बिक्री हो रही थी। जिसके बाद पुलिस के द्वारा यह कार्रवाई की गई।

कांके सीओ जय कुमार राम ने किया सरेंडर

रांची : लैंड स्कैम के आरोपी कांके सीओ जय कुमार राम ने मंगलवार को रांची पीएमएलए (प्रीवेन्शन ऑफ मनी लाउंड्रिंग एक्ट) की विशेष कोर्ट में सरेंडर कर दिया। जिसके बाद उसने कोर्ट में गुहार लगाते हुए एक लाख रुपए का बेल बॉण्ड प्रस्तुत किया। जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया है। जय कुमार राम की ओर से अधिवक्ता विद्युत चौरसिया ने बहस की। बता दें कि कांके से जुड़े लैंड स्कैम में जय कुमार राम समेत अन्य आरोपियों के खिलाफ ईडी ने पिछले दिनों आरोप पत्र कोर्ट में सौंप दिया है। जिसके बाद उसके ऊपर गिरफ्तारी की तलवार लटक रही थी। जय कुमार राम ने कोर्ट में अंडरटेकिंग दिया कि वे इस केस की सुनवाई के दौरान सभी तारीखों में सशरीर उपस्थित रहेंगे।

योजनाओं को घर-घर पहुंचाने में जलसहियाओं की भूमिका अहम : हेमन्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि आज विशेष रूप से पेयजल एवं स्वच्छता विभाग की जलसहिया दीदियां इस कार्यक्रम में उपस्थित हैं। जलसहिया दीदियों की समस्याओं को हमारी सरकार ने सुलझाने का कार्य किया है। पूर्व की सरकारों ने जलसहिया दीदियों को उनका हक-अधिकार से वंचित रखने का काम किया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार आम नागरिक और सरकार के विभिन्न अंग को अपने साथ खड़े होने के लिए उन्हें उनका हक और अधिकार दे रही है। जलसहिया दीदियों की समस्याओं पर राज्य सरकार का पूरा ध्यान है। हमारी सरकार एक-एक समस्याओं का निदान करने का काम कर रही है। हमारी सरकार ने ग्राम स्तर पर कार्यरत जलसहिया दीदियों की मानदेय राशि को बढ़ाकर 2 हजार रुपए प्रतिमाह किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने राज्य के वृद्धजन, महिलाएं, नौजवान युवक-युवतियां, स्कूलों में अध्यनरत बच्चियों के लिए विशेष कार्ययोजना के साथ उनके समग्र विकास की दिशा में एक लम्बी लकीर खींचने का प्रयास किया है। उक्त बातें मुख्यमंत्री ने मंगलवार को रांची के धुर्वा स्थित प्रभात तारा मैदान में पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा आयोजित "राज्य स्तरीय जलसहिया क्षमतावर्द्धन-सह-स्वच्छता ही सेवा" कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में कही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान समय में आप सभी जलसहिया दीदियों के माध्यम से राज्य सरकार की कई महत्वकांक्षी योजनाएं गांव-गांव तथा घर-घर तक पहुंचता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप याद कीजिए वह दिन जब पूर्व की सरकार में छोटे से कार्यकाल के भीतर मेरे मंत्री रहते आपसभी जलसहिया दीदियों की नियुक्ति हुई थी। आपकी समस्याओं को मुझसे ज्यादा कोई नही समझ सकता है। आज राज्य में आप सभी के उम्मीद और आकांक्षाओं की सरकार है। निश्चित रूप से आपकी कई अपेक्षाओं को पूरा करने में हमारी सरकार सफल भी रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप सभी दीदी-बहनों को फिर से एक ताकतवर कड़ी बनाने का हमारा उद्देश्य है। हमारी सरकार संवेदनशील सरकार है। हमारी सरकार विशुद्ध रूप से इस राज्य के मूलवासियों-आदिवासियों की सरकार है। मैंने पहले भी कहा था और आज भी कह रहा हूं हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं बल्कि गांव से चलने वाली सरकार है। यही कारण है कि आप सभी की आवाज मेरे कानों तक पहुंचती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज गांव-गांव, जन-जन तक स्वच्छ पानी पहुंचाना बहुत बड़ी चुनौती है। स्वच्छ जल मिलेगा तभी लोग बीमार नहीं होंगे। अगर हम सभी लोग मिलजुल कर गांव-गांव तक स्वच्छ पानी पहुंचाने में कामयाब होंगे तो जिस तरह से हमारे पूर्वज मजबूत हुआ करते थे, वैसे ही गांव के लोग मजबूत होंगे। ग्रामीण स्तर तक स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना हम सभी की जिम्मेवारी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विभागीय स्तर पर कई कार्य योजना तैयार की गई है।

रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को लिखा पत्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में फसलों की निगरानी के लिए सैटेलाइट डाटा का प्रयोग हो, इसे लेकर रक्षा राज्य मंत्री सह स्थानीय सांसद संजय सेठ ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र लिखा है।

मंगलवार को लिखे पत्र में सेठ ने मुख्यमंत्री को बताया है कि मध्य प्रदेश की सरकार फसलों की निगरानी के लिए सैटेलाइट डाटा का प्रयोग कर रही है। इसके उपयोग से खेती युक्त स्थानों में प्राकृतिक आपदा या अन्य किसी परिस्थिति में फसलों की निगरानी आसान हो रही है। इसके साथ ही फसल बीमा दावा और उसके भुगतान में भी गड़बड़ी नहीं होती है।

पूरी कृषि व्यवस्था में पारदर्शिता बरती जाती है। सेठ ने पत्र के जरिये कहा कि इस तर्ज पर अब राजस्थान की सरकार में काम कर रही है। उन्होंने कहा कि हमारे किसानों को फसलों की निगरानी और उसके बीमा संबंधी भुगतान के लिए कई बार बहुत समस्या का सामना करना पड़ता है। कई बार किसान अपने ही भुगतान के लिए बहुत परेशान हो जाते हैं।

ऐसे में सैटेलाइट से फसलों की निगरानी की यह व्यवस्था न सिर्फ किसानों के लिए बल्कि सरकार के लिए भी बहुत राहत देने वाली साबित होगी। इससे फसलों के उत्पादन और उसके भुगतान में भी पारदर्शिता बढ़ेगी। उन्होंने मुख्यमंत्री से कहा है कि किसान और राज्य हित में इस दिशा में कार्य किया जाए।

1200 से अधिक वोटर वाले बूथों पर नियुक्त होंगे अतिरिक्त पोलिंग अफसर : रवि कुमार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों से संबंधित निर्वाचन से जुड़े सभी पदाधिकारियों का भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार प्रशिक्षण सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि निर्वाचन में जीरो एरर के साथ कार्य करना है। वे मंगलवार को सभी जिला निर्वाचन पदाधिकारियों के साथ निर्वाचन सदन से ऑनलाइन माध्यम से समीक्षा बैठक कर रहे थे।

कुमार ने कहा कि राज्य में कई पदाधिकारियों का ट्रांसफर पोस्टिंग हुआ है ऐसे में किसी जिले के ईआरओ एवं एईआरओ जिनका निर्वाचन संबंधित प्रशिक्षण नहीं हुआ है उनकी सूची अविलंब उपलब्ध कराएं, जिससे उनका ससमय ट्रेनिंग कराया जा सके। उन्होंने कहा कि आयोग के निदेर्शानुसार सभी जिलों में प्रीसाइडिंग ऑफिसर, पोलिंग ऑफिसर एवं एएलएमटी की ट्रेनिंग सुनिश्चित करें।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार 1200 से अधिक मतदाता वाले मतदान केंद्रों पर एक अतिरिक्त पोलिंग ऑफिसर की नियुक्ति की जानी है। वल्नरेबल मैपिंग एवं सुरक्षा बल की तैनाती से संबंधित सूची तैयार करने में भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निदेर्शों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि सभी जिलों के निर्वाचन पदाधिकारी अपने जिलों के मतदान केंद्रों में सुनिश्चित न्यूनतम सुविधाओं की उपलब्धता अपने स्तर से जांच लें। बैठक में कुमार ने दिव्यांग मतदाताओं को उपलब्ध सुविधा, पोस्टल बैलेट, नए मतदाताओं को जोड़ने आदि निर्वाचन संबंधी विषयों पर भी बिंदुवार समीक्षा की।

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस ने हाई कोर्ट के न्यायाधीशों व झालसा के कार्यों को सराहा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : सुप्रीम कोर्ट में 28 और 29 सितंबर को दिव्यांग बच्चों के अधिकारों की रक्षा पर दो दिवसीय राष्ट्रीय वार्षिक हितधारक परामर्श का आयोजन किया गया। यूनिसेफ इंडिया के सहयोग से आयोजित इस परामर्श का उद्देश्य विकलांग बच्चों के लिए एक समावेशी समाज बनाने के लिए समझ को गहरा करना और कार्यों में तेजी लाना है। विशेष रूप से उन लोगों के संबंध में जिन्हें देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता है और जो कानून के साथ संघर्ष में हैं। दो दिवसीय विचार-विमर्श शीघ्र पहचान, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, परिवार-आधारित देखभाल, सुरक्षा, सुरक्षा और कानूनी सेवाओं के बीच संबंधों में सुधार पर केंद्रित रहा। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डी वाइ चंद्रचूड़ राष्ट्रीय परामर्श में उद्घाटन भाषण दिया। इस दौरान उन्होंने दिव्यांग व्यक्तियों से संबंधित एक हैंडबुक जारी की और एक ऑडियोबुक भी जारी किया। सुप्रीम कोर्ट में झारखंड टीम का प्रतिनिधित्व हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद, जस्टिस अनिल कुमार चौधरी और जस्टिस अनुभा रावत चौधरी ने किया। झारखंड के डीजीपी अनुराग गुप्ता, झालसा की सचिव रंजना अस्थाना समेत अन्य न्यायिक पदाधिकारियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

बाबूलाल, संजय सेठ, अमर बाउरी, दीपक प्रकाश को हाई कोर्ट से राहत बरकरार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाईकोर्ट ने पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी, रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, राज्यसभा सांसद प्रदीप वर्मा, सांसद दीपक प्रकाश, ढुल्लू महतो, युवा मोर्चा के अध्यक्ष शशांक राज समेत 18 भाजपा नेताओं को मिली राहत बरकरार रखा है। मंगलवार को हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को जवाब दाखिल करने का निर्देश देते हुए अगली सुनवाई के लिए चार सप्ताह बाद की तिथि निर्धारित की है। हाईकोर्ट ने मोरहबादी में भाजपा के कार्यक्रम के दौरान पुलिस के साथ झड़प मामले में उक्त आरोपियों के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक के आदेश को विस्तार दिया है। दरअसल भाजपा के युवा आक्रोश मार्च में हुए उपद्रव के बाद उक्त सभी लोगों समेत दस हजार अज्ञात के ऊपर प्राथमिकी दर्ज की गई है।

आरोपियों पर उपद्रव करने, दंगा भड़काने, सरकार के निदेर्शों का उल्लंघन करने, सरकारी कार्य में बाधा डालने, अपराध के लिए उकसाने और दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने से संबंधित धाराएं लगायी गयी हैं। इस मामले की सुनवाई हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संजय कुमार द्विवेदी की कोर्ट के हुई। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी एवं अन्य की ओर से अधिवक्ता प्रशांत पल्लव और पार्थ जालान ने बहस की। राज्य सरकार की ओर से अपर महाधिवक्ता सचिन कुमार और अधिवक्ता शादाब अख्तर ने बहस की।

स्वच्छता केवल सफाई का कार्य नहीं, यह एक स्वस्थ और समृद्ध समाज की नींव है : राज्यपाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने कहा कि स्वच्छता केवल सफाई का कार्य नहीं, बल्कि यह एक स्वस्थ और समृद्ध समाज की नींव है। उन्होंने सभी से अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ और सुरक्षित बनाने का संकल्प लेने का आह्वान किया।

राज्यपाल मंगलवार को रांची के आर्यभट्ट सभागार में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के जरिये आयोजित 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के समापन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने सभी नागरिकों से आह्वान किया कि वे स्वच्छता को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वच्छ और स्वस्थ भारत के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में सक्रिय योगदान दें।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जीवन स्वच्छता और सादगी का प्रतीक था। उनका जीवन हमें सिखाता है कि स्वच्छता केवल एक बाहरी सफाई नहीं है, बल्कि यह हमारे आंतरिक मन और समाज का भी प्रतिबिंब है। उन्होंने स्वच्छता को एक स्वस्थ समाज के लिए अनिवार्य माना। 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान बापू की इसी विचारधारा पर आधारित है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक नागरिक में स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है।

राज्यपाल ने 'स्वच्छ भारत अभियान' की 10वीं वर्षगांठ का भी उल्लेख करते हुए कहा कि वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री के जरिये प्रारम्भ 'स्वच्छ भारत अभियान' आज एक जन आंदोलन बन चुका है और लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करता है। राज्यपाल ने एनएसएस स्वयंसेवकों का इस अभियान में सक्रिय भागीदारी के लिए सराहना की। उन्होंने कहा कि समाज में स्वच्छता का सकारात्मक संदेश पहुंचाना भावी पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा का कार्य करेगा।

इस अवसर पर रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार सिन्हा, एनएसएस रांची के समन्वयक डॉ. ब्रजेश कुमार, एनएसएस के स्वयंसेवक, विश्वविद्यालय के पदाधिकारी व कर्मी मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

मुख्यमंत्री से कांग्रेस नेताओं ने की मुलाकात

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से मंगलवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में कांग्रेस के झारखंड प्रभारी गुलाम अहमद मीर, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश और कांग्रेस विधायक दल के नेता डॉ रामेश्वर उरांव ने मुलाकात की। इस दौरान राज्य में चल रहे विकासात्मक योजनाओं के कार्यान्वयन, जनहित से जुड़े कई अहम मुद्दे एवं राज्य की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति सहित अन्य बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा हुई।

वृंदावन कॉलोनी दुर्गा पूजा समिति काल्पनिक मंदिर का करा रही निर्माण

रांची : राजधानी रांची में चारो और सिर्फ दुर्गा पूजा के पंडाल का निर्माण हो रहा है। लगभग 80 प्रतिशत तक पंडालों का निर्माण पूरा हो गया है। तृतीय (शनिवार) से ही पंडालों के पट खुलने लगेंगे। सभी पंडालों में 24 घंटे निर्माण कार्य चल रहा है। इसी क्रम में रांची के चिरौंदी स्थित वृंदावन कॉलोनी दुर्गा पूजा समिति इस वर्ष काल्पनिक मंदिर का प्रारूप बना रही है। इस भव्य पंडाल की ऊंचाई 71 फीट, लंबाई 50 फीट और चौड़ाई 60 फीट है। बंगाल के 20 कारीगर कई दिनों से निर्माण कार्य में जुटे हैं। पंडाल के अंदर रामायण के पात्र और घटनाओं को दशार्या जाएगा। समिति के अध्यक्ष अभिषेक सिंह राठौर ने मंगलवार को बताया कि इको-फ्रेंडली पंडाल बनाया जा रहा है। कपड़े के लैस उपयोग में लाए जा रहे हैं। पंडाल का पट षष्टी से श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया जाएगा। प्रतिदिन गीत-संगीत, नाट्य प्रस्तुति और डांडिया के कार्यक्रम होंगे। प्रसाद वितरण का अलग काउंटर होगा। सुरक्षा, सुगम दर्शन आदि पर समिति का विशेष ध्यान है। वहीं लाइटिंग भी खास होगी। उन्होंने बताया कि समिति के सदस्य दिन-रात पूजा आयोजन में लगे हुए हैं।

डीएवी कपिलदेव से रिटायर हुए अंग्रेजी के टीचर पीएन झा

रांची : रांची के कडरू स्थित डीएवी कपिलदेव पब्लिक स्कूल के अंग्रेजी के सीनियर पीजीटी पीएन झा सोमवार को सेवानिवृत हो गए। वर्ष 1990 में डीएवी ग्रुप ज्वाइन करने के बाद उन्होंने 34 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। कडरू से पहले वह मध्यप्रदेश के कटनी में भी पोस्टेड रहे। उनके कार्य दिवस के अंतिम दिन स्कूल में उन्हें प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। दूसरी ओर, मैथिली मंच की ओर से भी उनके आवास पर जाकर अधिकारियों ने उन्हें पाग और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। मूल रूप से सुपौल के रहने वाले पीएन झा के पिता रामकृष्ण झा किसुन भी मैथिली के शिक्षक और चर्चित साहित्यकार थे। पीएन झा ने भी रांची विश्विद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद शिक्षण को ही अपना करियर बनाया। इनके बड़े भाई बदरीनाथ झा एसबीआई रांची से चीफ मैनेजर के पद से और वैद्यनाथ झा जल संसाधन विभाग नेपाल हॉउस से अवर सचिव के पद से रिटायर हुए हैं।

श्याम मंदिर में हनुमान चालीसा पाठ का हुआ आयोजन

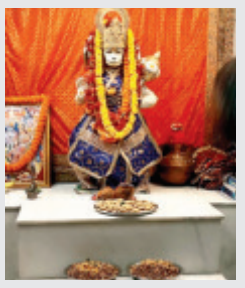

रांची : श्री श्याम मित्र मंडल द्वारा हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में मंगलवार को 121 वां श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा का पाठ का आयोजन किया गया। राम दूत अतुलित बल धामा अंजनि पुत्र पवनसुत नामा के गायन व बजरंग बली की जय जयकारों से हरमू रोड का श्री श्याम मंदिर गूंज रहा था। मंडल के उपमंत्री अनिल नारनोली ने महाबली बजरंगबली की ज्योति प्रज्वलित कर श्रीरामचरितमानस ग्रंथ की पूजा करके पाठ वाचकों का चंदन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। पाठ वाचक मनीष सारस्वत ओम शर्मा ने अपने सहयोगियों के साथ ढोलक ढपली के स्वर के साथ श्री गणेश वंदना कर श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया। सुंदरकांड का संगीतमय पाठ उपस्थित जनों से करवाया। भक्तजन श्री हनुमान जी की आराधना में लीन थे। पाठ के मध्य में भजनों का गायन भी किया गया। श्री सुंदरकांड के पाठ के उपरांत पुनः श्री हनुमान चालीसा का पाठ करके महाआरती करके भक्तजनों को प्रसाद वितरित किया गया। पुष्पा देवी पोद्दार ने केसरिया पेड़ा सेवा श्रवण ढानढनिया ने चना प्रसाद सेवा मुकेश मित्तल ने गिरिगोला सेवा एवम राजेश जयसवाल ने फल प्रसाद सेवा निवेदित की। इस अवसर पर मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी प्रथम महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया श्रवन ढानढनिया अनिल नारनोली स्नेह पोद्दार सहित बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित थे।

सीएम अविलंब जेएसएससी-सीजीएल के परीक्षार्थियों को बुला कर वार्ता करें : विजय शंकर नायक

रांची : मंगलवार को आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष सह पूर्व विधायक प्रत्याशी विजय शंकर नायक ने जेएसएससी कार्यालय घेराव करने वाले छात्रो पर सरकार दवारा प्राथमिकी दर्ज करने पर अपनी प्रतिक्रिया मे उक्त बातें कही। इन्होने यह भी कहा कि 16 नामजद छात्रो एंव 1 हजार अज्ञात छात्रो पर एफआईआर दर्ज करना राज्य के युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड करना है जो माफी योग्य नही है। सरकार को तुरंत इन छात्रो पर किये गये प्राथमिकी को निरस्त किया जाना चाहिए और अविलंब छात्रो से वार्ता कर जेएसएससी-सीजीएल परीक्षा को रद्द करने की दिशा मे सकरात्मक पहल किया जाना चाहिए ताकि छात्रो का भविष्य मे बर्बाद ना हो सके।

श्री नायक ने आगे कहा कि जेएसएससी कार्यालय घेराव करने पर पुलिस दवारा पत्थरबाजी करने का आरोप लगाकर 16 छात्रो पर नामजद व 1 हजार अज्ञात छात्रो पर एफआईआर दर्ज किया गया जो राज्य के छात्रो के लिए एवं सरकार के लिए शुभ संकेत नही है।

राजभाषा पखवाड़ा उत्साह के साथ मनाया गया

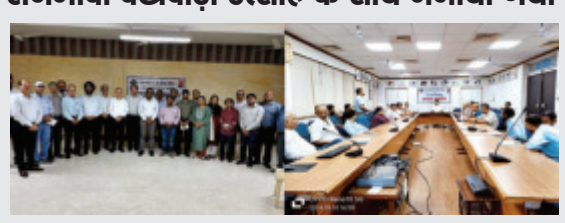

रांची : राजभाषा पखवाड़ा - 2024, सीईटी और आरडीसीआईएस, रांची में अति उत्साह के साथ मनाया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिसमे आधिकारियों सहित कार्मिको ने भी बढ़ चढ़ कर रुचि दिखाई। राजभाषा पखवाड़े का समापन समारोह 30-09-2024 को श्री एस के वर्मा कार्यपालक निदेशक, सीईटी और एस के कर, कार्यपालक निदेशक, आरडीसीआईएस के मार्गदर्शन मे किया गया।

देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत रहने वाले व्यक्ति थे लाल बहादुर शास्त्री

मुकेश तिवारी

कोई कोई भी महान व्यक्ति जब तक हमारी आंखों के सामने रहता है हम उसका मूल्यांकन ठीक से नहीं कर पाते लेकिन उसके दृष्टि से ओझल होते ही उसकी महानता सामने आने लगती है सूर्य का महत्व रात्रि में अंधकार में ही समझ में आता है। जो व्यक्ति भविष्य को पढ़ने की क्षमता रखता है उसी के अनुसार स्वयं पथ पर अग्रसर होता है और लोगों को उस पर चलने की प्रेरणा देता है। वही महान होता है।

जवाहरलाल नेहरू के निधन के पश्चात देश के समक्ष एक चुनौती खड़ी हो गई थी कि अगला प्रधानमंत्री किसे बनाया जाए ऐसे में श्री लाल बहादुर शास्त्री को हिंदुस्तान का दूसरा प्रधानमंत्री बनने पर आम सहमति हो गई उन कठिन परिस्थितियों में जब उन्होंने देश का नेतृत्व संभाला, तो उनकी कार्य कुशलता, समझदारी, धैर्य परिपक्वता आदि बहुत से गुणों से सारा मुल्क भली-भांति अवगत हुआ साथ ही लोगों के सामने यह भी उदाहरण उभर कर आया कि हिंदुस्तान जैसे देश का प्रधानमंत्री एक साधारण घर का व्यक्ति भी हो सकता है।

व्यक्ति कठोर परिश्रम,आत्मावलंबन, आत्मसम्मान, दूरदर्शिता, विनम्रता और सहनशीलता जैसे गुणों के कारण ही महान बनता है। इसके ज्वलंत उदाहरण थे-लालबहादुर शास्त्री

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अकटूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में हुआ था। इनके पिता का नाम मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव और मां का नाम राम दुलारी देवी था। शास्त्री जी के पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। उन्हे लोग मुंशी जी कहकर संबोधित करते थे। शास्त्री जी के बाल्यकाल में ही इनके सिर से इनके पिता का साया उठ गया था। पिता के निधन के पश्चात उनकी मां रामदुलारी देवी अपने पिता हजारीलाल के घर मिजार्पुर आ गई। हालांकि कुछ समय बाद ही शास्त्री के नाना भी चल बसे ऐसी स्थिति में लालबहादुर शास्त्री की परवरिश करने में उनके मौसा मौसी ने उनकी मां की हर तरह से मदद की। इस सबके बावजूद वे उन सुनहरे दिनों से वंचित हो गए जिसके वे हकदार थे। खेलने खाने की उम्र में उन्हें अभावों में जीवन यापन करने पर विवश होना पड़ा। यही अहम् वजह थी कि उनमें स्वावलंबन की प्रवृत्ति बाल्यकाल से भरी हुई थी। वे बाल्यकाल से ही भोजन बनाने। कपड़े साफ करने से लेकर अपना सारा काम स्वयं ही अपने हाथों से करते थे। अभावों ने उन्हें संयमशील, परिश्रमी, कर्मशील, स्वाभिमानी और स्वावलंबी बनाया, जो जीवनपर्यंत उनकी पूंजी रही, लालबहादुर शास्त्री जी में ज्ञान प्राप्ति की इतनी बलवती थी कि उसके आगे अभाव रुपी सारी बाधाएं बोनी हो जाती। पढ़ने की लगन और अभावों के बीच जब अंतर्द्वंद्व छिड़ता तो अभाव ही हमेशा पराजित होता। यह बात इस उदाहरण से स्पष्ट होती है कि जब शास्त्री जी के पास नाविक को देने के लिए पैसे नहीं होते थे। तो वे रामनगर से गंगा नदी को तैरकर पार करके हरिश्चंद्र स्कूल पहुंचते और अपनी कक्षा में सबसे ज्यादा अंकों से उत्तीर्ण होते थे।

आगे चलकर स्वयं के सभी काम अपने हाथ से करना उनकी आदत बन गई थी। वह जेल में होते थे या बाहर अपने कपड़े स्वयं ही धोते थे। प्रधानमंत्री बनने पर भी कभी-कभी वह अपने कमरे की सफाई स्वयं कर लेते थे। नौकर जब तक बिस्तर बछाने के लिए आते तब तक वे स्वयं ही बिछा चुके होते थे। उनकी इस आदत को देखकर

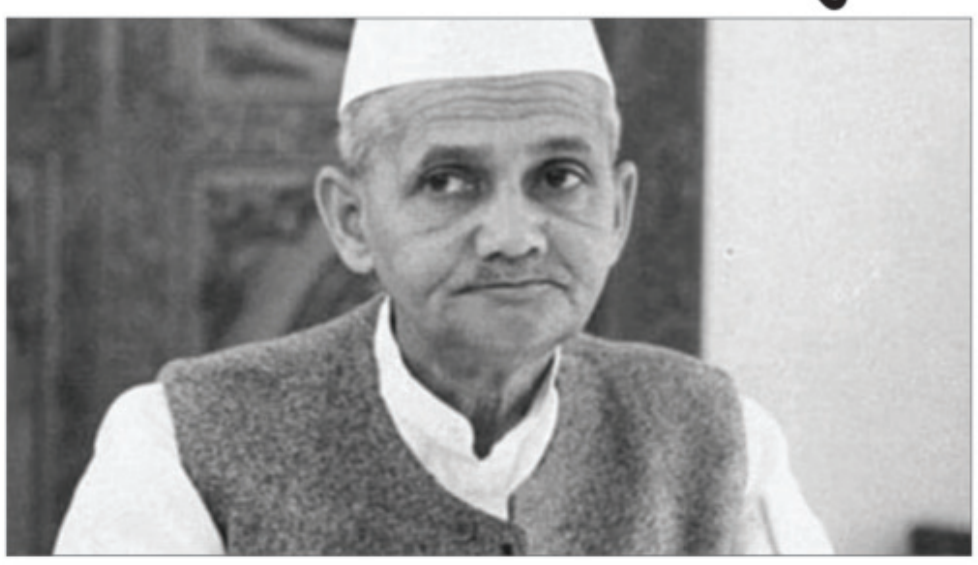

यदि कोई उन्हें मना करता तो वे बड़े आदर से कहते भाई। जो आदत बाल्यकाल से बनी है। उसमें क्यों परिवर्तन किया जाए। ईश्वर ने जब हाथ पैर सही सलामत दिए हैं तब दूसरों को कष्ट क्यों दिया जाए। शास्त्री जी ने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कर्म की ही उपासना की उन्होंने किसी आवश्यक वस्तुओं की। अभिलाषा कभी नहीं रखी यह उनके व्यक्तित्व कि सबसे बड़ी खासियत थी। शास्त्री जी सदा आत्मसम्मानी को बनाए रखने में भरोसा करते थे। पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण कर देने पर शास्त्री जी ने सैनिकों का मनोबल बढ़ाया तथा किसानों को भी उनके बराबर का दर्जा दिया। जय जवान जय किसान का नारा देकर उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों में दोनों को आवश्यक माना। शास्त्री जी सैनिकों को सतत रूप से खाद्य साम्रगी की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए हफ्ते में स्वयं एक दिन व्रत रखते थे। साथ ही उन्होंने समूचे देशवासियों से भी एक दिन का व्रत रखने की अपील की। इसका सकारात्मक प्रभाव यह हुआ कि पूरा देश उनसे सहमत होकर एक दिवसीय उपवास रखने लगा और इस तरह उपवास से बचा राशन सीमा पर जूझ रहे जवानों को उपलब्ध होता रहा इसका सकारात्मक प्रभाव शास्त्री जी के जीवन पर यह पड़ा कि उनके हृदय में दीन-हीन। पिछड़े ,शोषित तथा उपेक्षित वर्ग के लोगों के लिए करुणा का भाव उमड़ पड़ा था। अभावों ने उन्हें संयमशील, परिश्रमी कर्मशील, स्वाभिमानी व स्वावलंबी बनाया जो मरते दम तक उनकी पूजी रही।

इससे यह बात स्पष्ट होती है कि यदि किसी बात के लिए व्यक्ति दृढ़ संकल्प ले ले तो उसे अपने कार्य में सफलता अवश्य मिलती है। शास्त्री जी का व्यक्तित्व गलत बातों को कभी भी स्वीकार नहीं कर सका। प्रायः ऐसा होता है कि हम दूसरों को तो नसीहत देते हैं परंतु स्वयं उस नसीहत का पालन नहीं करते। शास्त्री जी स्वयं कोई कार्य करके। तब दूसरों को नसीहत देते थे। उदाहरणार्थ घर के भीतर टहलते हुए वे पुस्तकों, पेन, पेंसिल, रबर, कपड़ों आदि को यथा स्थान रख देते थे, इससे उनका तात्पर्य मात्र इतना ही था कि घर के अन्य सदस्य यह सीख ले कि वस्तुओं को यथा स्थान पर रखना चाहिए। हकीकत में सदस्यों को कुछ कहने सुनने की अपेक्षा उनके ऊपर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता और वे मन ही मन यह दृढ़ निश्चय करते कि अब आगे से उन्हें वैसा करने का मौका नही देता।

ऐसे अनेक उदाहरण है। जो लाल बहादुर शास्त्री के स्व - प्रणेता होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। शास्त्री जी अपने वाक चातुर्य से कर्म क्षेत्र में सदैव ही अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ने में सफल रहे। उनकी खासियत यह थी कि वह प्रत्येक कार्य वक्त पर करते थे। शास्त्री जी अपने जीवन में नैतिक गुणों पर ज्यादा बल देते थे। कोई भी प्रलोभन उन्हें सही मार्ग से विचलित नहीं कर सका। इस शास्त्री जी का कहना था कि व्यक्ति कहीं भी रहें। कितना भी ऊंचा उठ जाए या नीचे गिरे। उसे अपने भीतर के सत्य को नही शास्त्री जी विनम्र व सहनशील व्यक्ति थे। यदि कोई उन्हें कठोर शब्दों में कुछ बोल देता था तो भी वे उस का तत्काल प्रतिकार नहीं करते थे। शास्त्री का खान-पान पूर्णतः शाकाहारी था। भोजन में उन्हें दाल रोटी, सब्जी, चावल पसंद थे। शास्त्री जी का जीवन सादगीपूर्ण था। उनके घर में सिर्फ वही वस्तुएं थी, जो दैनिक जीवन के लिए जरूरी होती है। लालबहादुर शास्त्री के सादगीपूर्ण व्यक्तित्व को संजोने में जिन शख्सियतों का प्रभाव था। वे थे-महात्मा गांधी, पुरुषोत्तम दास टंडन, आचार्य नरेंद्रदेव, डॉक्टर भगवान दास ,पंडित जवाहरलाल नेहरू, इन्हीं के जीवन आदर्शों को शास्त्री जी अपना आदर्श समझकर आजीवन चलते रहे। उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ही पंडित अटल बिहारी वाजपेई ने यह टिप्पणी की थी---

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि वैचारिक मतभेद कभी भी चारित्रिक उज्जवलता को कलुषित नहीं कर सकते। शास्त्री जी से मेरा यद्यपि वैचारिक मतभेद था। परंतु उनकी चारित्रिक उज्जवलता का शुभ स्वरूप मुझे आलोकित करता रहा है। शास्त्री जी बचपन से स्वावलंबी एवं स्वाभिमानी प्रवृति के थे। वे बचपन से ही भोजन बनाने से लेकर कपड़े धोने आदि कार्य स्वयं किया करते थे। वे कहते थे परमपिता परमेश्वर ने जब दो हाथ-दो पैर सही सलामत दिए हैं। तब दूसरों को कष्ट क्यों दिया जाए। शास्त्री जी ने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत कर्म की उपासना की। उन्होंने किसी आवश्यक वस्तुओं की। अभिलाषा कभी नहीं रखी यह उनके व्यक्तित्व पति सबसे बड़ी खासियत थी। शास्त्री जी सदा आत्मसम्मान को बनाए रखने में विश्वास करते थे। पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण कर देने पर शास्त्री जी ने सैनिकों का मनोबल बढ़ाया तथा किसानों को भी उनके बराबर का दर्जा दिया। जय जवान जय किसान का नारा देकर उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों में दोनों को आवश्यक माना। शास्त्री जी सैनिकों को निरंतर खा आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए हफ्ते स्वयं एक दिन उपवास रखते थे। साथ ही उन्होंने समूचे हिंदुस्तान वासियों से भी एक दिन उपवास रखने की अपील की। इसका सकारात्मक प्रभाव यह हुआ कि समूचा हिंदुस्तान इससे सहमत होकर सप्ताह में एक दिन व्रत रखने लगा। इस तरह उपवास से बचा राशन सीमा पर जूझ रहे जवानों को उपलब्ध होता रहा। इस काम से दो फायदे हुए। एक तो यह कि देश ने अमेरिका सहित किसी भी पश्चिमी देश के सामने भोजन की याचना नहीं कि एवं इससे हमारे आत्मसम्मान की भी रक्षा हो सकी।

दूसरे हम विदेशी कर्ज से भी बचे रहें ऐसा नहीं है कि लाल बहादुर शास्त्री केवल हिंदुस्तान के आत्मसम्मान की रक्षा करते थे उन्होंने अपने जीवन में भी इसका पालन किया। वह अपनी जरूरतें स्वयं पूरा करते थे। स्वयं शास्त्री जी के शब्दों में मैं अपनी आवश्यकताएं उतनी ही रखता हूं जितनी आवश्यक होती है। लाल बहादुर शास्त्री जी अनुकूल तथा विपरीत। दोनों ही परिस्थितियों में समान रहते थे। शास्त्री जी सच्चे भारतीय थे। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व में देश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी उन्होंने देश के साथ कभी भी विश्वासघात नहीं किया। चाहे वह पाकिस्तान से युद्ध के पश्चात ताशकंद समझौते की बात रही हो अथवा खाद्यान्न मंगाने के लिए विदेशों से कर्ज लेने की बात। यह भावना उनकी दिनचर्या में भी देखने को मिलती थी। वे बहुत पहले ही यथास्थिति को भांप लेते थे और तदनुसार सही कार्यविधि अपनाकर वांछित लक्ष्य प्राप्त करते थे। उनकी दूरदर्शिता का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि उन्होंने देश का प्रथम बजट बचत का पेश किया।

संपादकीय

त्रासदी कब तक झेलेंगे

पड़ोसी देश नेपाल में पिछले कई दिनों से हो रही भारी बारिश से बिहार में कहर बरपा हुआ है। कोसी, गंडक और बागमती नदियों में आए भीषण उफान का कहर राज्य के 15 जिलों में दिखने लगा है। बाढ़ के ड़रावने रूप का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि राज्य की 13 नदियां खतरे के निशान से काफी ऊपर बहर रही हैं। इस प्राकृतिक आपदा के चलते करीब 25 लाख से ज्यादा आबादी पानी में घिरी हुई है, अब तक पांच लोगों की मरने की खबर है जबकि बड़ी संख्या में घर और मवेशियों के बह जाने की खबर है। सरकार का आपदा प्रबंधन फिलहाल असहाय दिख रहा है। शनिवार रात से रविवार सुबह तक उत्तर बिहार में पांच जगहों पर तटबंध टूटने से काफी बड़ी इलाके में बाढ़ का पानी फैल गया है। कमोबेश बाढ़ की विभीषिका पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश के कई जिले को भी अपनी चपेट में लिये हुए हैं। यहां भी बारी बारिश के बाद आई बाढ़ से जान-माल को भारी नुकसान पहुंचा है। उत्तर प्रदेश में बारिश से नदियां उफनाई हुई हैं। खास बात है कि मानसून की शुरूआत में राज्य में वैसी बारिश नहीं हुई मगर जाते-जाते मानसून राज्य में तबाही फैला रहा है। अब तक यहां पांच लोगों की मरने की खबर है। सबसे ज्यादा नुकसान की बात करें तो उत्तर बिहार में बाढ़ ने भयानक तबाही मचाई है। यहां तक कि दक्षिण-पूर्व राज्य के कई जिलों मसलन; भागलपुर, मुंगेर और आसपास के जिलों में अच्छी-खासी आबादी करीब हफ्ता-दस दिन से भारी संकट में है। सरकार भले उन्हें सहायता दिए जाने का दावा कर रही है, मगर जो दृश्य और जो पीड़ा बाढ़ पीड़ितों के वायरल हुए हैं, उसने सरकार के इंतजाम की पोल खोल कर रख दी है। यह सब तब है जब सरकार को इस बात की जानकारी थी कि नेपाल में भारी बरसात हो रही है। स्वाभाविक तौर पर जब नेपाल में बारिश होगी तो इसका असर नेपाल से सटे भारत के उन इलाकों में भी जरूर होगा। इसके बावजूद बचाव, राहत और मुआवजे के बारे में योजना नहीं बनाई गई। हालांकि कुछेक साल से राज्य सरकार के बेहतर इंतजाम से तबाही को बेअसर भी किया गया, मगर इस बार सरकारी तंत्र लापरवाह दिखा। बिहार में इस बार बाढ़ की त्रासदी कई बरस बाद देखी गई है। बहरहाल, सरकार को अब फसल की तबाही का आकलन कर मुआवजे का ऐलान करना होगा। साथ ही डेंगू-मलेरिया जैसी बीमारियों की रोकथाम का खाका खींचना होगा। यह काम जितना जल्दी हो सरकार और जनता दोनों के लिए अच्छा होगा।

चिंतन-मनन

उत्सव है बुद्धत्व

बुद्धत्व मौलिक रूप से प्राप्ति है, विद्रोह है, बगावत है। काशी के पंडितों की सभा प्रमाणपत्र थोड़े ही देगी बुद्ध को! बुद्धपुरुष तुम्हें पोप की पदवियों पर नहीं मिलेंगे और न शंकराचार्यरें की पदवियों पर मिलेंगे। क्योंकि ये तो परंपराएं हैं। और परंपरा में जो आदमी सफल होता है, वह मुर्दा हो तो ही सफल हो पाता है। परंपरा के द्वारा पद पाना सिर्फ मुर्दों के भाग्य में हैं, जीवंत लोगों के नहीं। यह सौभाग्य है जीवितों का और मुर्दों का दुर्भाग्य! इसलिए तुम कैसे पहचानोगे? और पूरी पहचान का तुम विचार ही मत करना। क्योंकि तुम पूरा पहचानोगे तो तुम बुद्ध हो जाओगे और तुम बुद्ध होते तो पहचानने की जरूरत न थी। तुम नहीं हो, इसीलिए तो पहचानने चले हो। इसलिए पूरे-पूरे का खयाल मत करना। छोटा सा टुकड़ा चांदनी का तैर आए तुम्हारे पास, तो बहुत धन्यभाग! अहोभाग! तुम उतने ही पर भरोसा करना। उस चांदनी के टुकड़े को पकड़ कर अगर बढ़ते रहे, चलते रहे, तो किसी दिन पूरे चांद के भी मालिक हो जाओगे। किसी दिन पूरा आकाश भी तुम्हारा हो जाएगा। तुम्हारा है; लेकिन अभी तुम्हें पहुंचना नहीं आया, चलना नहीं आया। अभी तुम घुटने के बल चलते हुए छोटे बच्चे की भांति हो। अभी तुम्हें चलने का अभ्यास करना है। तो संत उदास नहीं होंगे। बुद्धपुरुष उदास नहीं होंगे। जिनको तुम देखते हो मंदिरों-मस्जिदों में बैठे गुरु-गंभीर लोग, लंबे चेहरों वाले लोग, बुद्धपुरुष वैसे नहीं होंगे। बुद्धपुरुष तो उत्सव है। बुद्धपुरुष तो ऐसा है जिसमें अस्तित्व के कमल खिल गए। बुद्धपुरुष गंभीर नहीं।

समय की बलिहारी- अपनी उपेक्षा के प्रति चिंतित संघ...?

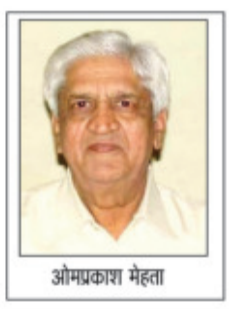

ओमप्रकाश मेहता

एक तरफ शताब्दी वर्ष के दौर की खुशी तो दूसरी ओर उपेक्षा का गम, आज इसी दौर से गुजर रहा है राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आज उसकी सबसे बड़ी चिंता यही है, उसकी सोच है कि आजादी के बाद से अब तक सर्वाधिक काल तक कांग्रेस सत्ता में रही, किंतु उस दौर में भी उसकी (संघ की) केंद्रीय सत्ता द्वारा इतनी उपेक्षा नही हुई, जितनी की आज भाजपा के शासनकाल में हो रही है।

पिछले साल लगभग इन्हीं दिनों महाराष्ट्र के पूणे में संघ की अखिल भारतीय समन्वय बैठक हुई थी, जिसमें भाजपा की चुनावी रणनीति पर विस्तृत चर्चा हुई थी जिसमें संघ की उपेक्षा के गंभीर आरोप लगे थे, इसके बाद इसी साल केरल में आयोजित संघ की समन्वय बैठक में भाजपाध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा का अचानक पहुंचना और वहां यह प्रकट करना कि संघ भाजपा को अपने अधीन न समझे, भाजपा का संघ से समान विचारधारा के अतिरिक्त कोई रिश्ता नही है, यह स्पष्ट करता है कि देश पर राज कर रही भाजपा संघ को अपना संरक्षक नही मानता। इन्हीं दो प्रसंगों ने संघ की चिंता बढ़ा दी हे, यद्यपि संघ प्रमुख मोहन भागवत ने अब तक इन दोनों घटनाक्रमों के संदर्भ में कुछ नही कहा है, किंतु वे चिंतित अवश्य है और अपने संघ के भावी अस्तित्व के प्रति गंभीर भी। अब इस स्थिति में यह भी संभव है कि संघ प्रमुख भागवत जी स्वयं अपने अस्तित्व की चुनौति को स्वीकार लें और अपने ही स्तर पर संघ को हर दृष्टि से मजबूत और आदर्श संगठन बनाने की ठान ले, इस घटना के बाद संघ प्रमुख की अपनी राष्ट्रव्यापी शाखाओं के प्रति बढ़ी सक्रीयता तो यही संदेश दे रही है, अब उन्होंने देश के सभी राज्यों के संघ प्रमुखों से जीवंत सम्बंध बनाए रखने तथा समय-समय पर उनसे चर्चा करते रहने का भी निश्चय कर लिया है, इसलिए अब संघ ने भाजपा शासित राज्यों में भी अपनी सक्रीयता बढ़ा दी है तथा वह अब अपने अस्तित्व की रक्षा में पूरी तरह जुट गया है।

संघ की इस सक्रीयता से भाजपा तथा केन्द्र की चिंता बढ़ना स्वाभाविक है, इसलिए राज्यों के भाजपा प्रमुखों के केंद्रीय संगठन से गोपनीय आदेश जारी किए गए है, जिनमें संघ की दैनंदिनी गतिविधियों पर तीखी नजर रखने को कहा गया है, अर्थात अब संघ और भाजपा दोनों की ही एक-दूसरे पर तीखी नजर है।

आज संघ की सबसे बड़ी और अहम् शिकायत ही यही है कि आजादी से अब तक के पचहत्तर वर्षों के कार्यकाल में अधिकांश समय कांग्रेस ही सत्ता में रही किंतु कांग्रेस के शासनकाल में भी संघ की इतनी उपेक्षा नही की गई, जितनी पिछले एक दशक से केन्द्र सरकार द्वारा की जा रही है, अटल-आडवानी जी के राज में भी संघ का निर्णायक अस्तित्व कायम था, जो आज नजर नही आ रहा है और फिर संघ की केरल बैठक में जाकर भाजपाध्यक्ष का दो टूक कथन अपने आपमें भाजपा संघ के रिश्तों के लिए काफी महत्व रखता है।

आज संघ में हर स्तर पर यही बिन्दू विशेष मंथन का विषय बना हुआ है और संघ तथा भाजपा के भावी सम्बंधों पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा रकता है, इसी संभावना को दृष्टिगत रखते हुए दोनों ही संगठनों ने अपने-अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए एक-दूसरे से सम्बंधों पर गंभीर चिंतन शुरू कर दिया है, भाजपा ने जहां अपने शासित राज्यों में संघ की गतिविधियों पर तीखी नजर रखना शुरू कर दिया है, वही संघ ने और अधिक शाखाओं में वृद्धि कर इसे पूरे राष्ट्र में हर स्तर पर कायमी कर उन्हें सक्रिय करने का फैसला लिया है, ऐसी स्थिति में यदि यह माना जाए कि देश में भाजपा व संघ पृथक संगठन बन गए है, तो कतई गलत नही होगा, क्योंकि भाजपा जहां सत्ता के मद में है तो संघ अपना पुरातन वजूद कायम रखने की चिंता में।

अब इस स्थिति का परिणाम क्या होगा? यह तो भविष्य के गर्भ में है, किंतु भाजपा व संघ के बुजूर्ग वर्ग इस स्थिति को लेकर चिंता मग्न अवश्य है।

वन नेशन वन इलेक्शन आज के भारत की आवश्यकता

प्रहलाद सबनानी

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में लोकसभा एवं विभिन्न प्रदेशों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ ही होते रहे हैं। परंतु केंद्र सरकार द्वारा कुछ विधानसभाओं को 1950 एवं 1960 के दशक में इनकी अवधि समाप्त होने के पूर्व ही भंग करने के चलते कुछ विधानसभाओं के चुनाव लोकसभा से अलग कराने की आवश्यकता पड़ी थी, उसके बाद से लोकसभा, विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं एवं स्थानीय स्तर पर नगर निगमों, निकायों एवं पंचायतों के चुनाव अलग अलग समय पर कराए जाने लगे। आज स्थिति यह निर्मित हो गई है कि लगभग प्रत्येक सप्ताह अथवा प्रत्येक माह भारत के किसी न किसी भाग में चुनाव हो रहे होते हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि पिछले पांच वर्षों के दौरान प्रत्येक वर्ष केवल 65 दिन ऐसे रहे हैं जब भारत के किसी स्थान पर चुनाव नहीं हुए हैं।

किसी भी देश में चुनाव कराए जाने पर न केवल धन खर्च होता है बल्कि जनबल का उपयोग भी करना पड़ता है। जनबल का यह उपयोग एक तरह से अनुत्पादक श्रम की श्रेणी में गिना जाना चाहिए क्योंकि इस प्रकार के श्रम से किसी प्रकार का उत्पादन तो होता नहीं है परंतु एक तरह से श्रमदान जरूर करना होता है। यह श्रम यदि बचाकर किसी उत्पादक कार्य में लगाया जाय तो केवल कल्पना ही की जा सकती है कि इस श्रम से देश के सकल घरेलू उत्पाद में अतुलनीय वृद्धि दर्ज की जा सकती है। अमेरिकी थिंक टैंक के एक अर्थशास्त्री के अनुसार, देश में बार बार चुनाव कराए जाने के चलते उस देश का सकल घरेलू उत्पाद लगभग एक प्रतिशत से कम हो जाता है। चुनाव कराने के लिए होने वाले खर्च पर भी यदि विचार किया जाय तो भारत में केवल लोकसभा चुनाव कराने के लिए ही 60,000 करोड़ रुपए का खर्च किया जाता है। आप कल्पना कर सकते हैं इस राशि में यदि विभिन्न प्रदेशों की विधानसभाओं, नगर निगमों, निकायों एवं ग्राम पंचायतों के चुनाव पर किए जाने वाले खर्च को भी जोड़ा जाय तो खर्च का यह आंकड़ा निश्चित ही एक लाख करोड़ रुपए के आंकडें को पार कर जाएगा।

उक्त बातों के ध्यान में आने के पश्चात केंद्र सरकार ने विचार किया है कि भारत में 'वन नेशन वन इलेक्शन' के नियम को लागू किया जाना चाहिए। इस विचार को आगे बढ़ाने एवं इस संदर्भ में नियम आदि बनाने के उद्देश्य से भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी की अध्यक्षता में एक विशेष समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट हाल ही में राष्ट्रपति/केंद्र सरकार को सौंप दी है। इसके बाद, केंद्र सरकार के मंत्रिमंडल की समिति ने इस रिपोर्ट को स्वीकृत कर लिया है एवं इसे अब लोकसभा एवं राज्यसभा के सामने विचार के लिए प्रस्तुत किया जाएगा। किसी भी देश की लोकतंत्रीय प्रणाली में समय पर चुनाव कराना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। चुनाव किस प्रकार हों, समय पर हों एवं सही तरीके से हों, इसका बहुत महत्व होता है। परंतु देश में चुनाव बार बार होना भी अपने आप में ठीक स्थिति नहीं कही जा सकती है। विश्व के कई देशों, यथा स्वीडन, ब्राजील, बेलजियम, दक्षिण अफ्रीका, आदि में समस्त प्रकार के चुनाव एक साथ ही कराए जाने के नियम का पालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। चुनाव एक साथ कराने के कई फायदे हैं जैसे इन देशों में चुनाव कराने सम्बंधी खर्चों पर नियंत्रण रहता है। दूसरे, सुरक्षा हेतु पुलिसकर्मियों एवं चुनाव करवाने के लिए स्थानीय कर्मचारियों की बड़ी मात्रा में आवश्यकता को कम किया जा सकता है। तीसरे, देश में चुनाव एक साथ कराने से अभिशासन पर अधिक ध्यान दिया जा सकता है एवं चौथे विभिन्न स्तर के चुनाव एक साथ कराने से चुनाव में वोट डालने वाले नागरिकों की संख्या में निश्चित ही वृद्धि होती है क्योंकि नागरिकों को मालूम होता है कि पांच साल में केवल एक बार ही वोट डालना है अतः वह अन्य कार्यों को दरकिनार करते हुए अपने वोट डालने के अधिकार का उपयोग करना पसंद करता है। इसी प्रकार यदि कोई नागरिक किसी अन्य नगर यथा दिल्ली में कार्य कर रहा है और उसके मुंबई का निवासी होने चलते उसे वोट डालने के लिए मुंबई जाना होता है तो पांच वर्ष में एक बार तो इस महान कार्य के लिए वह दिल्ली से मुंबई आ सकता है परंतु पांच वर्षों में पांच बार तो वह दिल्ली से मुंबई नहीं जा पाएगा। इसके अलावा लोकसभा, विधानसभाओं, स्थानीय निकायों एवं पंचायतों के चुनाव अलग अलग होने से विभिन्न पार्टियों के पदाधिकारी, इनमें केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों के मंत्री आदि भी शामिल रहते हैं, अपना सरकारी कार्य छोड़कर चुनाव प्रचार के लिए अपना समय देते हैं। जबकि, यह समय तो उन्हें देश एवं प्रदेश की सेवा में लगाना चाहिए। इससे देश में अभिशासन की गुणवत्ता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। वन नेशन वन इलेक्शन के लिए गठित उक्त विशेष समिति ने यह सलाह दी है कि शुरूआत में लोकसभा एवं समस्त प्रदेशों की विधान सभाओं के चुनाव एक साथ कराए जा सकते है। यदि ऐसा होता है तो यह भी सही है कि देश में लोकसभा एवं विधान सभा चुनाव एक साथ कराने के लिए संसाधनों की भारी मात्रा में आवश्यकता पड़ेगी, इसका हल किस प्रकार निकाला जाएगा इस पर भारतीय संसद में विचार किया जा सकता है। साथ ही, भारत में 6 राष्ट्रीय दल, 54 राज्य स्तरीय दल एवं 2000 से अधिक गैर मान्यता प्राप्त दल हैं जिनके बीच में सामंजस्य स्थापित करने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही, भारत में अंतिम बार लोकसभा एवं विधानसभाओं के चुनाव एक साथ 1960 के दशक में कराए गए थे। आज भारतीय नागरिकों को भी शिक्षित करने की आवश्यकता होगी कि लोकसभा, विधान सभाओं एवं स्थानीय निकायों के चुनाव एक साथ किस प्रकार कराए जा सकते हैं ताकि उन्हें वोट डालने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो। इन समस्याओं का हल भारतीय संसद में चर्चा के दौरान निकाला जा सकता है। यदि किसी कारण से केंद्र में लोकसभा अथवा किसी प्रदेश में विधानसभा पांच वर्ष की समय सीमा के पूर्व ही गिर जाती है तो लोकसभा अथवा उस प्रदेश की विधान सभा के चुनाव शेष बचे हुए समय के लिए पुनः कराए जा सकते हैं, ऐसे प्रावधान को कानूनी रूप प्रदान दिया जा सकता है। इससे विभिन्न राजनैतिक दलों के सांसदों एवं विधायकों पर भी यह दबाव रहेगा कि वे लोकसभा अथवा विधानसभा को समय पूर्व भंग कराने अथवा गिराने का प्रयास नहीं करें।वन नेशन वन इलेक्शन के सम्बंध में कुछ संशोधन तो देश के वर्तमान कानून में करने ही होंगे और फिर पूर्व में भी विभिन्न विषयों पर अलग अलग खंडकाल में (समय समय पर) 100 बार से अधिक संशोधन कानून में किए ही जा चुके हैं।

यह तर्क भी सही नहीं है कि देश में एक साथ चुनाव कराने से भारत के नागरिक केंद्र एवं राज्यों में एक ही राजनैतिक दल की सरकार चुनने को प्रोत्साहित होंगे। परंतु, भारत का नागरिक अब पूर्ण रूप से परिपक्व एवं सक्षम हो चुका है कि वह लोकसभा एवं विधान सभा चुनाव एक साथ कराए जाने पर केवल एक ही दल की सरकार को नहीं चुनेगा। देश में ऐसा कई बार हुआ है कि लोकसभा एवं विधान सभा के एक साथ हुए चुनवा में लोकसभा में एक दल के सांसद को चुना गया है एवं विधान सभा में किसी अन्य दल के विधायक को चुना गया है। भारत आज एक विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है, ऐसे समय में भारत को अपने संसाधनों का उत्पादक कार्यों के लिए उपयोग करना आवश्यक होगा न कि रक्षा एवं सरकारी कर्मचारी देश में बार बार हो रहे चुनाव के कार्यों में व्यस्त रहें। कुल मिलाकर वन नेशन वन इलेक्शन, देश के हित में उठाया जा रहा एक मजबूत कदम है। इस विषय पर, भारत के हित में, देश के समस्त राजनैतिक दलों को गम्भीरता से विचार कर इस नियम को भारत में लागू किया जाना चाहिए।

अवैध संबंध के कारण पति ने ही सुपारी देकर कराई थी पत्नी के प्रेमी की हत्या, तीन गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : जिले के सायको थाना कुदा ग्राम निवासी भोंज मुंडा नामक युवक की हत्या की गुत्थी सुलझाते हुए पुलिस ने तीन आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अनुसंधान में इस बात का खुलासा हुआ कि अवैध संबंध के कारण सादिर उर्फ सुकरा मुंडा ने ही अपनी पत्नी के प्रेमी भोंज मुंडा की हत्या सुपारी देकर कराई थी। यह जानकारी खूंटी के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी वरूण रजक ने मंगलवार को अपने कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। उन्होंने बताया कि दो माह पूर्व हुए हत्याकांड में शामिल तीनों आरोपितों अड़की थानांतर्गत ग्राम बगड़ी निवासी फगुआ मुंडा उर्फ चुन्नू उर्फ मांगा उर्फ लंबू उर्फ पंकज मुंडा (28 वर्ष),

एतवा पूर्ति उर्फ टुनू उर्फ दीपक (22 वर्ष) तथा अड़की के तिनतिला गांव निवासी एसी सगुन दास (20 वर्ष) को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार आरोपितों ने पुलिस के समक्ष अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। उनकी निशानदेही पर पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त धारदार हथियार(लोहे की दउली), एक चाकू और एक मोटरसाइकिल बरामद की है। एसडीपीओ ने बताया कि दो माह पूर्व 26 जुलाई की देर शाम जिऊरी गांव स्थित फुटबॉल मैदान के समीप एक खेत में भोंज मुंडा की गला काट कर हत्या कर दी गई थी। इस संबंध में अज्ञात अपराधियों के विरुद्ध सायको थाने में मामला दर्ज कर पुलिस ने जब अनुसंधान शुरू किया, तो पता चला कि कुदा गांव के सांदिर उर्फ सुकरा मुंडा की पत्नी के साथ मृतक भोंज मुंडा का अवैध संबंध था। इस पर पुलिस ने संदेही आरोपित सुकरा मुंडा को पकड़ने का प्रयास किया, तो सुकरा मुंडा ने एक अगस्त को न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया। बाद में सुकरा मुंडा से पूछताछ की गई, तो उसने पत्नी से अवैध संबंध के कारण भोंज मुंडा की हत्या के लिए पूर्व नक्सली फगुआ मुंडा और एतवा पूर्ति उर्फ दीपक को 70 हजार रुपये की सुपारी देने की बात स्वीकार करते हुए बताया कि इसके लिए आरोपितों को 40 हजार रुपये का भुगतान भी कर दिया था। एसडीपीओ ने बताया कि गिरफ्तार आरोपित फगुआ मुंडा पूर्व में नक्सली संगठन पीएलएफआई से जुड़ा था। उसके विरुद्ध 11 वर्ष पूर्व सायको बाजार में खूंटी के व्यवसायी बनवारी लाल साव और उनके जवान पुत्र विनय कुमार गुप्ता सहित चार लोगों की गोली मारकर की गई हत्या और ओतोंगगोड़ा ग्रामप्रधान पौलुस मुंडा की चार वर्ष पूर्व उसके घर में ही गोली मारकर की गई हत्या के मामले में मुरहू और सायको थाने में दो मामले दर्ज हैं, जबकि पूर्व माओवादी एतवा पूर्ति उर्फ दीपक के विरुद्ध भी सायको थाने में दो अलग-अलग हत्या के मामले दर्ज हैं। उक्त मामलों में दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। एसडीपीओ ने बताया कि भोंज मुडा हत्याकांड के उद्भेदन के लिए खूंटी एसडीपीओ के नेतृत्व में गठित छापामार टीम में खूंटी अंचल के पुलिस निरीक्षक किशुन दास, एसएसबी उलिहातू के इंस्पेक्टर विकास कुमार, सायको थाना के एसआई वीरेंद्र कुमार, एसआई मनीष कुमार सहित सशस्त्र बल और एसएसबी के जवान शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

ऑनलाइन-ऑफलाइन एडमिट कार्ड के चक्कर में 78 छात्र हुए परेशान

बोकारो : एक ओर झारखंड सरकार के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जहां बोकारो के चंदनकियारी के चण्डीपुर में शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की उपलब्धियां गिना रहे थें। वहीं, दूसरी ओर झारखंड एकेडमिक काउंसिल रांची द्वारा कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों के लिए आयोजित परीक्षा के पहले दिन परीक्षार्थियों को अव्यस्था का सामना करना पड़ा। मामला बोकारो जिला के जरीडीह प्रखंड से जुड़ा है। जरीडीह प्रखंड के टांड़ बालीडीह पंचायत क्षेत्र स्थित राज्य सम्पोषित उच्च विद्यालय में परीक्षा के पहले दिन ऊहापोह की स्थिति रही। जरीडीह प्रखंड के पाथुरिया प्लस टू स्कूल के विद्यार्थी परीक्षा देने टांड़ बालीडीह उच्च विद्यालय पहुंचे. लेकिन यहां पहुंचे सभी परीक्षार्थियों के बैठने की समुचित व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी। इस केंद्र में कक्षा 9 तथा 10 के करीब 421 परीक्षार्थी की परीक्षा होनी थी। जबकि बैठने की समुचित व्यवस्था के अभाव में कक्षा 9 के करीब 100 विद्यार्थियों को 9:45 से करीब 11 साढ़े 11 बजे परीक्षा में शामिल होने के लिए इंतजार करना पड़ा. इस पर विद्यार्थियों के परिजनों नाराजगी जताई। स्कूल प्रबंधन को खरी-खोटी सुनाई। इसके बाद स्कूल प्रबंधन हरकत में आया ऑनलाइन फार्म भरने के फेर में विद्यार्थियों को हुई परेशानी-इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) जगरनाथ लोहरा ने बताया कि पाथुरिया प्लस टू स्कूल के कई विद्यालयों ने ऑनलाइन के बजाय ऑफ लाइन फार्म भरा था। इससे कारण परेशानी हुई परीक्षा में ऑफलाइन फॉर्म भरने वाले विद्यार्थी भी परीक्षा में शामिल होने पहुंचे। जबकि व्यवस्था ऑनलाइन फार्म भरने वाले सभी परीक्षार्थियों के लिए समुचित व्यवस्था की गई थी। ऐसे में परीक्षार्थियों की संख्या बढ़ गई. फिर चास स्टोर रूम से बाकी बचे परीक्षार्थियों के लिए संबंधित कागजात आदि की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई सभी परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में शामिल हुए। इधर, परीक्षा में शामिल होने पहुंची कक्षा 9 की बालिकाओं ने बताया कि कई विद्यार्थियों का ऑनलाइन फार्म नहीं भरा गया था। लेकिन हम सभी को हमारे स्कूल द्वारा ऑफलाइन एडमिट कार्ड जारी किया गया है। इस कार्ड में परीक्षा केंद्र का नाम नहीं है कहा कि पाथुरिया प्लस टू स्कूल के प्रधानाचार्य के कहने पर ही सभी परीक्षार्थी इस परीक्षा केंद्र में पहुंचे।

एक नजर

तीन साल की मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म का प्रयास आरोपी गिरफ्तार

चतरा : टंडवा थाना क्षेत्र के गाढ़ी गांव से इंसानियत को शर्मसार कर देने वाला एक मामला प्रकाश में आया है। मामले में एक मनचले युवक ने एक तीन वर्षीया मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म का प्रयास किया है। पुलिस ने स्थानीय लोगों की सूझबूझ और मदद से गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी से पुलिस कड़ाई से पूछताछ कर रही है। आरोपित गाढ़ी क्षेत्र का ही निवासी हैं। जानकारी के अनुसार मासूम बच्ची स्थानीय नदी से नहाकर निर्वस्त्र हालत में अपने परिवार के लोगों के साथ पैदल अपने घर जा रही थी तभी बाईक सवार मनचले युवक ने उसे रोककर दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया। वहीं आरोपित के विरुद्ध मामला दर्ज की गई है?। वहीं थाना प्रभारी अनिल उरांव ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर मामला दर्ज करते हुए उससे कड़ाई से पूछताछ की जा रही है।

मोदी की जनसभा में लाखों लोग होंगे शामिल : आदित्य

हजारीबाग : हजारीबाग प्रमंडलीय प्रभारी व राज्यसभा सदस्य आदित्य साहू ने मंगलवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन को लेकर हजारीबाग प्रमंडल तैयार है। क्षेत्र की जनता को प्रधानमंत्री का इंतजार है। कार्यक्रम को लेकर तैयारी पूरी कर ली गई है। इस कार्यक्रम में लाखों की संख्या में लोग शामिल होंगे। साहू ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी हजारीबाग में तीन कार्यक्रमों में शामिल होंगे। इसमें बिना भावे विश्वविद्यालय परिसर के बिनोदिनी पार्क में होने वाले पहले सरकारी कार्यक्रम में वह कई राष्ट्रीय योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे।

उषा मार्टिन ने गरीबों को सरकारी योजनाओं से जोड़ने का चलाया अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : गांव के गरीब जनजातीय समाज के लोगों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवा मुहैया कराने के लिए उषा मार्टिन फॉउंडेशन ने अभिनव पहल की है। फॉउंडेशन और सरकारी संस्थानों के सहयोग से सुदूर जंगल में स्थित गांवों में कैंप लगाकर 135 गरीब लोगों का आयुष्मान स्वास्थ्य कार्ड बनवाया गया है। सिलवई पंचायत के उलातू गांव के सात टोला में यह अभियान चलाया गया। इसके अलावा सामाजिक सुरक्षा के लिए सालों से वंचित वृद्धजनों को ओल्ड एज पेंशन स्कीम से जोड़ने के लिए कार्ड बनवाया गया है। अभी तक 12 से अधिक लोगों का वृद्धावस्था पेंशन कार्ड बनवाया गया है। उषा मार्टिन फॉउंडेशन के माध्यम से मासू और उलातू गांव में गरीब किसानों को सरकारी योजना से जोड़ने का अभियान चल रहा है। फॉउंडेशन के सुपरवाइजर मेवालाल महतो ने बताया कि उलातू गांव नामकोम

प्रखंड का सबसे पिछड़ा गांव है, जहां अधिकतर आबादी जंगल और पहाड़ पर रहती है। यहां के बच्चे सामान्यतः अनीमिया और कुपोषित ग्रस्त हैं। इनको बेहतर स्वास्थ्य लाभ के लिए शालिनी अस्पताल के माध्यम से महीना में तीन कैंप लगाकर कर ऐसे कुपोषित बच्चों का इलाज कराया जा रहा है। इसके अलावा गांव में आयुर्वेद और योगा कैंप लगाकार लोगों को जागरूक किया जा रहा है। गांवों के 15 दिव्यांगों को सरकारी योजना से जोड़ने के लिए विकलांगता प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र और यूडीआईडी कार्ड बनवाया गया है। फॉउंडेशन की सुपरवाइजर मोनीत बूतकुमार ने बताया कि इन दिव्यांगों को दीपशिखा के माध्यम से विकलांगता की जांच करायी गयी है। इन जांच के परिणाम के आधार पर इस माह सभी लोगों को व्हिलचेयर, ट्राईसाईकिल, ईयर मशीन आदि मुहैया कराया जायेगा। ऐसे दिव्यांग समूह को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मशरूम का प्रशिक्षण दिलवाया गया है। दीपशिखा के माध्यम से कंप्यूटर का बेसिक कार्यक्रम से भी जोड़ा जा रहा है।

स्कूल में पेंटिंग प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

रांची : उषा मार्टिन फॉउंडेशन के माध्यम से महिलौंग राजकीयकृत मध्य विद्यालय में पर्यावरण जागरूकता के लिए पेंटिंग और भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इसमें ओजोन लेयर से होने वाले प्रभाव को पेंटिंग का विषय बनाया गया। इसमें पहला पुरस्कार सातवें वर्ग के शिवम स्वांसी, दूसरा पुरस्कार श्रीद्धि कुमारी और तीसरा पुरस्कार कमलेश लोहरा को मिला। विद्यालय की प्राचार्या हेमलता कुमारी ने सभी सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। यह जानकारी सुपरवाइजर संगीत कुमारी ने दी।

चार अक्टूबर को कार्डिनल तेलेस्फोर पी. टोप्पो की पुण्यतिथि मनाई जाएगी

चैनपुर : चैनपुर के संत जॉन चर्च में आयोजित पल्ली कौंसिल की बैठक में स्वर्गीय कार्डिनल तेलेस्फोर पी टोप्पो की प्रथम पुण्यतिथि की तैयारी पर चर्चा हुई। यह बैठक फादर पवन लकड़ा की अध्यक्षता में हुई। कैथोलिक सभा की नेत्री सह पूर्व मुखिया एमरेंसिया कुजूर ने बताया कि 4 अक्टूबर को स्व. कार्डिनल तेलेस्फोर पी. टोप्पो की प्रथम पुण्यतिथि मनाई जाएगी। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में पूर्व शिक्षा मंत्री बंधु तिर्की, सांसद सुखदेव भगत, मांडर विधायक शिल्पी नेहा तिर्की, गुमला विधायक भूषण तिर्की मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। कार्यक्रम की शुरूआत सुबह 9 बजे पावन खीस्तयाग से होगी, जिसके मुख्य अनुष्ठान विकर जनरल बिशप हाउस गुमला होंगे। इस अवसर पर पल्ली के लोग जोर-शोर से तैयारी कर रहे हैं ताकि यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

Govt. of Jharkhand
OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
Field Survey Division, Advance Planning, Road Construction Department, Nirupan Bhawan, 4th floor, 56-Set Chowk, Doranda, Ranchi-834002
e-mail--- eeredapfsdran-jhr@nic.in
e-Procurement Very Short Notice
e-Tender Reference No .-RCD/FSD /AP/ RAN/30/24-25 Dated 30.09.2024

1-	Name of Work	Consultancy services for preparation of Detailed project report for construction of - Shivapahar (Patna-Hiranpur RCD road) to Lakhipur (Jojodari -Mohabbatpur RCD road) via Kunwarpur and Link road from Kunwarpur to Banskola RCD road including replacement of culverts and bridges, proposal of new culverts and bridges, complete LAP including ownership details, Resettlement and Rehabilitation Proposal and Forest Diversion Proposal including clearance of all stages etc as required all complete as per latest guidelines, at Sahebganj in the state of Jharkhand. from Consultants empanelled in Category -I with the Road Construction Department, Government of Jharkhand vide letter no - 3063(S) W.E dated 22-08-2022 are allowed to bid.
2-	Work completion time	60 Days
3-	Tentative Length	25.00 km
4-	Cost of Tender Document & Earnest Money Deposit (EMD)	**Cost of Tender Document** - Rs 5,000/- (Rupees Five Thousand) (Non-Refundable) through online mode only. **EMD** :- Rs- 40,000/- (Rupees Forty Thousand) through online mode only. As per the Departmental Letter no.- 4652(5) dated 06.10.2023, cost of tender document and Earnest Money Deposit will be received in online mode only through e-procurement portal (https://jharkhandtenders.gov.in) by Internet banking/ NEFT/ RTGS facility as per Standard Operating Procedure (SOP) issued by Information Technology & e-Governance Department, Government of Jharkhand vide letter no- 120 dated 03.10.2023.
5-	Date and Time of Publishing of Tender on official website	04.10.2024, 05.00 PM
6-	Last date and Time of submission of Tender (With Tender Fee and EMD)	14.10.2024, 12.30 PM
7-	Date and Timing of Bidopening	15.10.2024, 12.30 PM
8-	Tender Inviting Authority	Executive Engineer, Field Survey Division, Advance Planning, RCD, Ranchi, Nirupan Bhavan, 56 set Chowk, Doranda, Ranchi - 834002, Mobile No - 8051090751
9-	Mode of Bid Submission	e-Tendering (http://jharkhandtenders.gov.in)

For further information please go through the website http://jharkhandtenders.gov.in
PR 337817 Road (24-25)D
Executive Engineer
Field Survey Division,A.P
Road Construction Department,Ranchi

चैनपुर प्रखंड कार्यालय में विधानसभा निर्वाचन की तैयारियों पर समीक्षा बैठक संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : चैनपुर प्रखंड कार्यालय के सभागार कक्ष में मंगलवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा की अध्यक्षता में आगामी विधानसभा निर्वाचन 2024 के तैयारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में प्रखंड के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा ने बैठक में विधानसभा निर्वाचन के लिए आवश्यक तैयारियों पर चर्चा की और अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे निर्वाचन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। बैठक में मतदान केंद्रों की तैयारी, मतदाता सूची की अद्यतन,

और निर्वाचन के लिए सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया। इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा ने कहा कि विधानसभा निर्वाचन 2024 के लिए हमें सभी आवश्यक तैयारियों को पूरा करना होगा ताकि निर्वाचन शांतिपूर्ण और निष्पक्ष तरीके से संपन्न हो सके। बैठक में उपस्थित अधिकारियों ने विधानसभा निर्वाचन के लिए अपनी तैयारियों की जानकारी दी और आवश्यक निदेर्शों का पालन करने का आश्वासन दिया। इस प्रकार, चैनपुर प्रखंड कार्यालय में विधानसभा निर्वाचन 2024 के लिए तैयारियों की समीक्षा बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई और अधिकारियों को निर्वाचन के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए।

ससुराल वालों से तंग आकर युवक ने लगाई फांसी

दुमका : पत्नी की बेवफाई और ससुराल वालों से मारपीट से तंग आकर एक युवक ने फांसी के फंदे झूल जान दे दिया। मामला नगर थाना क्षेत्र के राखाबनी मुहल्ले की है। मृतक की पहचान 35 वर्षीय प्रताप कुमार राम के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलने के बाद मंगलवार सुबह करीब 8 बजे पुलिस मौके पर पहुंच शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप कार्रवाई में जुट गई है। मृतक के परिजनों का आरोप है कि 30 सितंबर की रात को ससुराल पक्ष के सदस्यों ने प्रताप के घर पर आकर मारपीट और गाली-गलौज करते हुए जान मारने की धमकी दी। जिससे प्रताप को आजीज होकर आत्महत्या को मजबूर हो गया।

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
NATIONAL HIGHWAYS DIVISION, GUMLA JHARKHAND, PIN CODE-835207
(EMPLOYMENT EXCHANGE BUILDING, GUMLA)
Email ID- eenhgumla-jhr@nic.in/eenhgumlajhr@gmail.com

Very Short Notice Inviting Quotation
Quotation Ref. No. NH/GUMLA/QUOT./01/2024-25 Dated : 01.10.2024

Name of work: Hiring of Commercial Vehicles of Two Nos. of Innova Crysta (Latest Top Modal) on monthly hire basis for The Chief Engineer, National Highways Wing, Jharkhand, Ranchi & The Superintending Engineer, National Highway Circle, Ranchi, Jharkhand - Reg.
Time Period: One year and likely to be extendable up to a maximum period for Two (02) years on same terms and conditions.

Sealed Quotation are hereby invited from established, experienced and reputed individuals, firms/ Organizations and other agencies having adequate experience in execution of such works.

The blank BOQ and terms & conditions for the above may be obtained from the office of the **The Chief Engineer, National Highways Wing, Jharkhand, Ranchi & The Superintending Engineer, National Highway Circle, Ranchi, Jharkhand and** Undersigned office on any working day from 09.10.2024 on 11:00 AM office hours by submitting a copy of online receipt towards payment of cost of document of Rs.500/- (Rupees Five Hundred only/-) on NTRP Portal-https://bharatkosh.gov.in/Ministry Info.aspx through Pay & Account Office Code : 034756- PAO(NH)- Kolkata and Drawing & Disbursing Office (DDO) Code: 202122-Regional Officer, Ministry of Road Transport Highways.

[Earnest Money Deposit/ Bid Security / Performance Security] :- Rs 20,000/- in the form of Fixed Deposit issued from any scheduled bank issued within Jharkhand and pledged in favour of Executive Engineer, National Highway Division, Gumla.

The duly filled quotation in sealed envelope can be submitted in the office of the undersigned up to **03:00 PM** on **14.10.2024**. The quotation will be opened on **14.10.2024** at **03:30 PM** in the presence of intending quotationers or its authorized representatives, who choose to remain present.

This office reserves the right to reject all Quotations and cancel the Quotations without assigning any reasons.

Sd/-
Executive Engineer
National Highways Division, Gumla
Ph: 8789523476.

PR 337780 (Road) 24-25 (D)

लातेहार में एके-47 के साथ दो नक्सली गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

लातेहार : झारखंड जनमुक्ति परिषद (जेजेएमपी) नक्सली संगठन के दो सब जोनल कमांडर को पुलिस ने अत्याधुनिक हथियार के साथ गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार नक्सलियों में सब जोनल कमांडर खुर्शीद अंसारी, पोचरा, लातेहार और फेंकू भुईयां बालूमाथ शामिल हैं। नक्सलियों के पास से पुलिस ने एक एके-47 स्वचालित राइफल और आठ जिंदा गोली बरामद की है। एसपी कुमार गौरव ने मंगलवार को पत्रकार वार्ता में बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि सदर थाना क्षेत्र के नारायणपुर जंगल के पास दो नक्सली हथियार के साथ घूम रहे हैं। सूचना के बाद पुलिस की एक टीम बनाई गई और

नक्सलियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की गई। पुलिस जैसे ही जंगल में पहुंची तो पुलिस को देखकर नक्सली भागने लगे लेकिन पुलिस ने घेराबंदी कर दोनों नक्सलियों को पकड़ लिया। इनके पास से एक एके-47 राइफल और गोलियां भी बरामद हुई। पूछताछ में दोनों ने बताया कि ये नक्सली संगठन जेजेएमपी के कमांडर हैं। एसपी ने बताया कि गिरफ्तार दोनों नक्सलियों पर लातेहार के अलावा आसपास के दूसरे जिलों में भी उग्रवादी कांड से संबंधित कई मामले दर्ज हैं। पुलिस को उनकी कई दिनों से तलाश थी। एसपी ने छापेमारी अभियान में थाना प्रभारी प्रमोद कुमार सिन्हा के अलावा सब इंस्पेक्टर रंजन कुमार पासवान, देवेंद्र कुमार, सुरेंद्र कुमार महतो, मनोज कुमार, भागीरथ पासवान, रमाकांत गुप्ता, कुबेर प्रसाद देव, नागेश्वर महतो, उमापद महतो समेत अन्य पुलिस अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमंडल, सिमडेगा
अति अल्पकालिन निविदा आमंत्रण सूचना 34/2024-25

1 विज्ञापन दाता का नाम – कार्यपालक अभियंता, भवन प्रमंडल, सिमडेगा।
2 परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि एवं समय – 15.10.2024 को अपरा 12:00 बजे तक।
3 निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय – 16.10.2024 के अपरा 2:30 बजे तक।
4 निविदा खोलने की तिथि एवं समय – 16.10.2024 के अपरा 3:00 बजे से।
5 परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान – (i) अधीक्षण अभियंता भवन निर्माण विभाग, भवन अंचल सं-2, रांची का कार्यालय। (ii) कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन प्रमंडल सिमडेगा।
6 निविदा प्राप्ति का स्थान – कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन प्रमंडल, सिमडेगा।
7 कार्य विवरणी :–

Sl. No.	Name of work	Estimated Cost	Earnest Money	B.O.Q Cost	Time Of Completion
1	Renovation of Bal Sanpresan Grih Simdega in the District of Simdega. and Renovation of DTO Office Simdega in the District of Simdega. and Renovation of Sahyog Village at Simdega in the District of Simdega.	7,48,462.00	15,000.00	1,250.00	15 (Fifteen) Days
2	Renovation in Civil SDO Residence at Simdega in the District Simdega (Part 1) and Renovation in Civil SDO Residence at Simdega in the District Simdega (Part 2) and Renovation of Boundary Wall & Guard Room & Residence in Civil SDO Simdega District Simdega.	7,47,566.00	15,000.00	1,250.00	15 (Fifteen) Days
3	Construction of Baricading Helipad at Shoy Block-Bano & Office Campus Simdega in District of Simdega.	2,47,140.00	5,000.00	500.00	15 (Fifteen) Days
4	E/R to Deep Boring in Officer's Colony, Simdega.	2,47,900.00	5,000.00	500.00	07 (Seven) Days
5	E/R to Roof Treatment and Others Work in Gopniya Shalcha, DC Residencial Campus Simdega. and E/R to Misleneous Work in DC Residence Simdega. and E/R to Roof Treatment of Residencial Building (Qtr. No- C-13 to C18) in Officer's Colony Simdega.	7,44,600.00	15,000.00	1,250.00	15 (Fifteen) Days

निविदा की शर्तें– WWW.jharkhand.gov.in एवं कार्यालय के सूचना पट पर देखा जा सकता है।
PR 337741 Simdega (24-25)_D
कार्यपालक अभियंता,
भवन प्रमंडल, सिमडेगा

एक नजर

विद्यालय प्रबंध समिति का हुआ गठन

बरहरवा : मंगलवार को महाराजपुर पंचायत अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय महाराजपुर में प्रबंध समिति का गठन हुआ। जिसमे 12 मेंबर्स को चुना गया था, तारिकुल आलम को निर्विरोध अध्यक्ष एवं सुनाती कुमारी को उपाध्यक्ष चुना गया। मौके पर परिवेचक लाल बहादुर प्रभात, विद्यालय प्रभारी जनार्धन कुमार मंडल, कांग्रेस पंचायत अध्यक्ष तैमूर जहां अंसारी, वार्ड सदस्य अमीरूल इस्लाम, वार्ड सदस्य पति रतन पाईन, सहायक शिक्षक गयानाथ घोष, देबरथ कुमार मंडल, अनिता दे, स्कूल सदस्य सऊद आलम, मसूद आलम,हैदर मंसूरी एवं ग्रामीणगण मौजूद थे।

पप्पू ने झामुमो से दिया इस्तीफा

चांडिल : सरायकेला जिला के चांडिल रिसोर्ट में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए झामुमो के केन्द्रीय सदस्य रहे पप्पू वर्मा ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा में 26 साल तक पार्टी में जुड़ा रहा और पार्टी का विभिन्न कार्यक्रमो का बखूबी संचालन किया। उन्होंने कहा कि पूर्व उपमुख्यमंत्री सुधीर महतो एक अभिभावक के रूप में साथ लेकर चला । उन्होंने कहा कि झामुमो के केन्द्रीय सदस्यता एवं पार्टी सदस्यता से भी 26 साल के बाद पार्टी को अपना इस्तीफा सौंप दिया। उन्होंने कहा कि पार्टी में इतने लम्बे समय तक रहने के बाद पार्टी के संबंध में किसी तरह का टीप्पणी नही करूंगा। किसी अन्य राजनीतिक पार्टी में शामिल होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि 4 अक्टूबर को इस संबंध में निर्णय लेकर घोषणा किया जाएगा। झामुमो छोड़ने के सवाल पर उन्होंने कहा कि कुछ कारण है जो खुलासा करना उचित प्रतीत नही होता है। उन्होंने कहा कि किसी पर आरोप लगाने या किसी के ऊपर कोई कमेंट करना हमारे संस्कार में शामिल नही है, इसलिए इस संबंध में कुछ नही कहना है। फिलहाल झामुमो से इस्तीफा दे दिया गया है और आगे का रणनीति पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आपने चाहने वालों से भी विचार विमर्श किया जाएगा और 4 अक्टूबर को इस संबंध में पत्रकारों के साथ संवाद कर घोषणा किया जाएगा। हालांकि विशेष सुत्र से पता चल रहा है कि पप्पू वर्मा भाजपा का दामन थाम सकते हैं। हालांकि उन्होंने इस संबंध में कुछ भी बताने से साफ इंकार किया।

हिट एंड रन मामले में जिरवाबाड़ी थाना में केस दर्ज

साहिबगंज : हिट एंड रन मामले में जिरवाबाड़ी थाना में दर्ज कांड संख्या 142/24 के तहत पुलिस ने आजाद नगर मोहल्ले से एक बुलेट जब्त की है। उक्त बुलेट शहर के आजादनगर स्थित ग्रो-डोर ग्रोसरी मॉल के मालिक अभिषेक कुमार शर्मा की बताई जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार 3 सितंबर को उक्त बुलेट की टक्कर से बाइक सवार झारखंड सशस्त्र वहिनी 9 में पदस्थापित बिहार के गया जिला निवासी महेंद्र कुमार सिंह घायल हो गए थे। वहीं इलाज के क्रम में उनकी मौत हो गई थी।जिरवाबाड़ी थाना प्रभारी पंकज दूबे ने बताया कि छानबीन में पता चला है कि उक्त बुलेट अभिषेक का दोस्त सोनू कुमार चला रहा था। उन्होंने बताया कि मामले की छानबीन की जा रही है।

आरपीएफ ने मानव तस्करों के विरुद्ध विशेष अभियान चलाकर तीन नाबालिग को छुड़ाया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : आरपीएफ पुलिस ने सोमवार को बरहरवा रेलवे स्टेशन पर सक्षम प्राधिकारी के आदेशानुसार मानव तस्करों के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया। एएसआई जेके दुबे, एएसआई एके हंसदा और आरपीएफ/पोस्ट/ बीएचडब्लू के एचसी संजय कुमार ने पीसी बीएचडब्लू संजीव कुमार की देखरेख में बरहरवा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म क्षेत्र में 19/40 बजे तक विशेष अभियान चलाया। तलाशी के दौरान सिग्नल ऑफिस के पास प्लेटफॉर्म संख्या 1 पर एक अन्य वयस्क व्यक्ति के साथ संदिग्ध तरीके से घूमते हुए 03 नाबालिग लड़कों का पता चला। पूछने पर उन्होंने अपना नाम चरण मुर्मू पुत्र-कन्हय मुर्मू, दूसरा सांखो टुडू पुत्र-चांद टुडू, तीसरा गार्ड हेम्ब्रोम पुत्र छोटो हेम्ब्रोम बताया। इसके अलावा एएसआई जेके दुबे से पूछताछ के दौरान पता चला कि उपरोक्त 03 नाबालिग लड़कों ने यह भी बताया कि उपरोक्त तस्कर मोजिबुल अंसारी उम्र 48 वर्ष पुत्र इजाबुल हैं। उनके साथ एक और व्यक्ति था और योजना के अनुसार उन्हें बरहरवा से फरक्का एक्सप्रेस ट्रेन द्वारा नगरोथा में मजदूरी के लिए जम्मू तवी लाया गया। आगे की पूछताछ में उपरोक्त 03 नाबालिग लड़कों ने बताया कि दूसरा व्यक्ति उनके परिवार का प्रबंधन करता है और उन्हें दूसरे राज्य में काम करने के लिए तस्करी करके लाया गया था और वे बरहरवा रेलवे स्टेशन से रेलवे टिकट संख्या युटीएस-43 जी 2 डीवीवाई 54 एच, 43 जी2 डीवीवाई 55ड, 43 जी2 डीवीवाई 551 एक्स-बीएमडब्ल्यू से जम्मू तवी के लिए ट्रेन से आगे बढ़ेंगे। इसके बाद दूसरे व्यक्ति को पकड़ा गया। उसने बताया कि मजदूर के रूप में काम करने के लिए जम्मू तवी ले जा रहा था और कंपनी ने दो महीने और दस दिनों के भीतर काम किया और उन्होंने कंपनी द्वारा उसे दिए गए दो महीने और दस दिनों के श्रम प्रभार में प्रति मजदूर का भुगतान किया। इसके बाद 03 नाबालिग लड़कों के साथ सभी कानूनी औपचारिकताओं को अपनाया और कानूनी औपचारिकताओं के बाद मानव तस्कर को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए शिकायत के साथ जीआरपीएस/ बीएचडब्ल्यू को सौंप दिया। शिकायत के आधार पर जीआरपी/बरहरवा ने कांड संख्या 55/2024 दिनांक- 1-10-2024 यू/एस-137(2), 143(5) बीएनएस और 75/81 जेजे एक्ट पंजीकृत किया और इस मामले की जांच के लिए एस आई/ मोहम्मद फखरुद्दीन/जीआरपी/ बीएचडब्ल्यू को भेजा।

संक्षिप्त खबरें

विधायक ने 3 करोड़ 49 लाख की लागत से बनने वाली सड़क का किया शिलान्यास

निमडीह : मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना से स्वीकृत नीमडीह प्रखंड क्षेत्र के पीडब्लूडी रोड सासनटांड होते हुए लाकड़ी तक 3.18 किमी सड़क का शीलान्यास मंगलवार को विधायक सविता महतो ने विधिवत शीलापट्ट अनावरण कर किया। इस दौरान विधायक सविता महतो ने कहा 349.948 लाख रुपये कि लागत से सड़क का निर्माण होगा। वही इसी क्रम में विधायक ने विधायक योजना से 12 लाख 5 हाजार 3 सौ 60 रुपए कि लागत से निर्माण होने वाले चांडिल बाजार स्थित मेघोपाट मे चारदीवारी निर्माण का भी शीलान्यास विधिवत शीलापट्ट अनावरण कर किया। इस दौरान विधायक ने कहा पक्के सड़क का निर्माण होने से ग्रामीणों को यातायात मे सुविधा होगी। विधायक ने कहा लोगों के मांगों के अनुसार विकास योजनाओं का निर्माण कार्य हो रहा है। इस अवसर पर झामुमो नेता ओम प्रकाश लायेक, झामुमो केंद्रीय सदस्य काबलु महतो, प्रखंड अध्यक्ष कृष्णा किशोर महतो, हरिदास महतो, समर भुईया, विश्वनाथ गोप, राहुल वर्मा, शंकर लायेक, हरिपदों महतो, शंकर सिंह सरदार, सचिन गोप, यदुपति महतो, समेत काफी संख्या मे झामुमो कार्यकर्ता व ग्रामीण लोग उपस्थित थे।

सदर अस्पताल में रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

साहिबगंज : जिला प्रशासन की ओर से सदर अस्पताल परिसर स्थित ब्लड बैंक में मासिक रक्तदान शिविर का आयोजन मंगलवार को किया गया। जहां रक्तदान शिविर कार्यक्रम का उद्घाटन सिविल सर्जन डॉक्टर प्रवीण कुमार संथालिया, उपाधीक्षक डॉक्टर रंजन कुमार सहित अन्य लोगों ने फीता काटकर किया। इस दौरान मात्र चार लोगों ने ही सदर अस्पताल पहुंचकर अपना रक्तदान किया। जहां रक्तदान करने वालों की संख्या काफी कम देखी गई। उधर रक्तदान करने वालों में स्वास्थ्य विभाग के ब्लड बैंक में कार्यरत डाटा ऑपरेटर अंजली कुमारी सहित अन्य तीन लोगों ने ही रक्तदान किया। उधर रक्तदान करने वाले कई संस्थाओं के रक्त वीरों को सिविल सर्जन कार्यालय में सम्मानित करने के लिए बुलाया गया था जहां संस्था के सदस्यों ने सामूहिक रूप से रक्तदान करने वाले संस्था के सभी सदस्यों एवं अन्य लोगों को एक ही मंच पर सम्मानित करने की बात करते हुए प्रशस्ति पत्र लेने से इनकार कर दिया।

एक दिवसीय धरने पर बैठीं प्रखंड क्षेत्र की सहिया व सहिया साथी

साहिबगंज : जिला के बोरियो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बोरियो के अंतर्गत विभिन्न इलाकों में स्वास्थ सेवा दे रही, सहिया व सहिया साथियों ने मगंलवार के दिन एक दिवसीय धरने पर बैठ गई। सहिया साथियों की मांग है कि रोक कर रखे गए, मानदेय और प्रोत्साहन राशि का भूगतान जल्द से जल्द, उन्हें किया जाए। धरना प्रदर्शन सीएचसी परिसर के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी कार्यालय के समक्ष किया गया। सहिया साथियों ने बताया कि इस वर्ष फरवरी महीने से लेकर अब तक उन्हें मानदेय भूगतान नहीं किया गया है, वहीं इसी वर्ष जनवरी माह से उन्हें प्रोत्साहन राशि का भूगतान नहीं किया गया है। इसे लेकर सहिया साथियों ने बीपीएम और बेम को कई बार मौखिक रूप से भूगतान के लिए आग्रह किया है।

दुर्गा पूजा को लेकर थाना में शांति समिति की हुई बैठक

साहिबगंज : जिला के तालझारी प्रखंड में दुर्गा पूजा को लेकर मंगलवार को तालझारी थाना परिसर में शांति समिति की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी बीडीओ साल्खू हेंब्रम ने की। इस दौरान शांति समिति सदस्यों ने शांति पूर्ण दुर्गा पूजा मानने एवं एक दूसरे को सहयोग करने की बात कही। वहीं बीडीओ ने कहा कि किसी प्रकार का किसी भी धर्म या समुदाय को ठेस पहुंचाने वाले पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। किसी प्रकार का अफवाह सोशल मीडिया या अन्य माध्यम से फैलाने की कोशिश करने वालों व शांति व्यवस्था भंग करने का प्रयास करने वालों से पुलिस सख्ती से निपटेगी। बताया कि तालझारी थाना क्षेत्र अंतर्गत सुकसेना, बांस्कोला, सकरीगली कमिटी के सभी लोग बैठक में शामिल हुए उन्होंने बताया कि विसर्जन के दिन शाम 5 बजे तक प्रतिमा विसर्जन शांतिपूर्वक तरीके से कर लेने की सहमति पूजा समितियों ने जताई है। उन्होंने बताया कि संवेदनशील इलाकों व हर चौक चौराहों पर पुलिस बलों की तैनाती रहेगी। पंडालों में अग्निशमन व्यवस्था, पेयजल सहित अन्य व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। कहा कि हाईकोर्ट के निर्देश के अनुसार डीजे पर प्रतिबंध रहेगा। आदेश नहीं मानने पर लाउडस्पीकर एक्ट के तहत कार्रवाई होगी। वहीं डीजे जब्त कर लिया जाएगा। साउंड हर हाल में 90 डेसिबल से ज्यादा नहीं होगा। शराब पीने वालों से प्रशासन सख्ती से निपटेगी। मौके पर राजमहल पुलिस निरीक्षक श्यामलाल हंसदा, थाना प्रभारी के तत्काल प्रभार में अनिल कुमार यादव, एसआई सियाराम पंडित एवं मनोज कुमार आजाद पुलिस प्रशासन व पूजा समिति के जनप्रतिनिधि कृपानंद मंडल, मंटू राय, मनोज यादव, प्रदुमन साह, लखन पंडित सहित शांति समिति के सदस्य मौजूद थे।

बर्तन चोरी का आरोपी धराया लोगों ने किया पुलिस के हवाले

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला के मंडरो प्रखंड अंतर्गत मिजाचौकी थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम-पंचायत कौड़ी खुटाना में सोमवार रात एक युवक घर में घुसकर बर्तन चोरी कर भागने का प्रयास कर रहा था। उसी के दौरान पीड़ित परिवार ने घर का दरवाजा की आवाज सूनकर घर से बाहर निकला और चोर को दौड़ाकर धर दबोचा और इसकी सूचना मंगलवार शुबह मिजाचौकी पुलिस को दी गई। चोरी के आरोप में पकडा.गया युवक का पहचान मेहरमा थाना क्षेत्र के बिशनपुर गांव निवासी जाफर अंसारी पिता जाकिर अंसारी के रूप में हुई है। इधर चोरी की सूचना पाकर मिजाचौकी थाना के एसआई पवन कुमार पुलिस बल के साथ पहुंचा और आरोपी युवक को अपने साथ थाना ले गया। वही पीड़ित परिवार ने कौड़ीखुटाना गांव के आसपास पूर्व में घटित चोरी की घटना में संलिप्ता की बात भी पुलिस को कहा है। बताते चले की मिजाचौकी थाना क्षेत्र के साथ-साथ भगैया के सीमावर्ती बिहार इशीपुर बाराहाट थाना क्षेत्र में भी ताजा कई चोरी की घटना घटित हुई है जिसे लेकर आसपास के ग्रामीण बेहद आक्रोशित है।

बोड़ाम उप डाकपाल ने शराब के नशे में अंडरवियर में कार्यालय पहुंच किया हंगामा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : किसी भी सरकारी कार्यालय में कार्य के दौरान शराब पीकर जाने की सक्त मनाही होती है। लेकिन हद तो तब हो गई जब पूर्वी सिंहभूम जिले के बोड़ाम के उप डाकघर के उप डाकपाल राजकुमार भगत अपने ऑफिस में ही रोजाना मयखाना बनाकर जाम छलकाते हुए वीडियो वायरल हुआ इससे वहां के कर्मचारियों के साथ-साथ काम कराने के लिए डाकघर में पहुंचने वाले लोगों को भी भारी परेशानी होती है।
मंगलवार की सुबह भी कुछ इसी तरह की हरकत करते हुए नजारा पेस करते राजकुमार भगत को देखा गया।ड्यूटी के दौरान उप डाकपाल अंडरवियर पहनकर खुले बदन ऑफिस में नशे की हालत में घूम रहे थे।
इस बीच ही डाकघर में काम कराने पहुंचे लोगों ने विरोध किया।इसके बाद हंगामा हो गया।लोगों ने शराब पीते वीडियो शूट किया और उसे वायरल कर दिया। वायरल वीडियो में उप डाकपाल को शराब पीते हुए साफ साफ देखा जा रहा है। घटना के बाद लोगों ने कहा कि अब घटना की लिखित शिकायत एसएसपी से की जाएगी।ग्रामीणों का आरोप है कि जब से राजकुमार ने योगदान दिया है । लोग परेशान हैं। वे रोजाना शराब पीते हैं और अपने ऑफिस में ही जाम छलकाते रहते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यह उप डाकघर डाकघर कम मयखाना अधिक मालूम होता है। इस दौरान उप डाकपाल द्वारा बोड़ाम के काम कराने आए युवकों को डाकघर से बाहर निकालते वीडियो में देखा गया। बता दे कि कुछ माह पहले बोड़ाम प्रखंड के लावजोड़ा डाकघर से भी ग्रामीणों के करीब साढ़े चार लाख के गबन का मामला उजागर हुआ था। जिसमे ग्रामीणों ने डाक विभाग के कई वरीय पदाधिकारियों को भी बंधक बनाया था। जिसके बाद विभाग ने ग्रामीणों का पैसा वापस करने का बात कबूला था।

थाना परिसर में दुर्गा पूजा को लेकर हुई शांति समिति की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहेबगंज : मंगलवार के दिन मुफ्फसील थाना परिसर में शांम चार बजे आगामी दुर्गा पूजा को लेकर मुफ्फसील थाना प्रभारी मदन कुमार की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। वही इस बैठक में मुफ्फसील थाना के एस आई उमाकांत ओझा, ब्रजेश कुमार, अजीत लकड़ा, अनिल कुमार ओझा उपस्थित थे। जहाँ दुर्गा पूजा को शांति पूर्ण तरीके के साथ संपन्न कराने को लेकर जिला प्रशासन के द्वारा दिए गए निदेशों को शांति समिति के सदस्य को बताया गया। वहीं इस बैठक में शांति समिति के सदस्यों को थाना प्रभारी ने कहा कि सभी पूजा पंडाल में सीसीटीवी कैमरा को लगाना पूजा समिति के वॉलिंटियर्स को अपने बैच के साथ पूजा पंडाल के पास रहना है,अग्निशामक की भी व्यवस्था की जानी है डीजे पर पूर्णत प्रतिबंध रहेगी रात के 10:00 के बाद लाउडस्पीकर को बंद कर देना है एवं व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर शांति समिति के सदस्य एवं थाना के स्टाफ को जोड़कर एक ग्रुप का निर्माण किया जाना है। अगर कहीं भी किसी तरह की कोई अप्रिय घटना होती है तो तुरंत इस ग्रुप पर शांति समिति के सदस्य सूचित करें। इसके आगे थाना प्रभारी ने विसर्जन को लेकर कहा कि निर्धारित रूट होकर ही विसर्जन जुलूस को लेकर समय सीमा के अंदर विसर्जन कर देना है। वही शांति समिति के सदस्यों ने बताया कि 3 अक्टूबर से पूजा प्रारंभ हो जाएगी एवं 14 अक्टूबर को विसर्जन समय सीमा के अंदर कर लिया जाएगा। वही इस बैठक में शांति समिति के सदस्य एवं समाज के बुद्धिजीवी वर्ग के मनोज यादव, हनान डीलर, सुनील मंडल, जगदीश पासवान, शत्रुघन यादव, ब्रह्मदेव यादव, मोहम्मद जबीर, लोग उपस्थित थे।

महामारी की रोकथाम को लेकर आपदा प्रबंधन की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : अपर समाहर्ता गौतम भगत के अध्यक्षता में कार्यालय प्रकोष्ठ में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में फसल क्षति एवं उत्पन्न महामारी की रोकथाम हेतु पूर्व तैयारी व आपदा प्रबंधन अन्तर्गत संचालित योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक की। अपर समाहर्ता ने सर्वप्रथम दोनों अनुमंडल के बाढ़ की वर्तमान स्थिति कि जानकारी ली। अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा बताया गया की बाढ़ के पानी में नियंत्रण कमी आ रही है जिससे हालात अच्छे बने हुए हैं। बाढ़ के दौरान ग्रामीणों के बीच वितरण किए गए खाद्य समाग्रियों के रिपोर्ट के विषय में जानकारी ली एवं कहा कि वितरण हेतु खाद्य समाग्रियों की जरुरत हो तो वह अधोहस्ताक्षरी को डिमांड प्रतिवेदन समर्पित करें। अपर समाहर्ता ने बताया कि बाढ़ के पानी से होने वाले मुख्य स्वास्थ्य जोखिम जल-जनित बीमारियों का संक्रमण हैं। बाढ़ के पानी के संपर्क में आने से पेट की बीमारी, घाव और त्वचा में संक्रमण और चकत्ते हो सकते हैं। बाढ़ के पानी के संपर्क में आए दूषित फल और सब्ज़ियां खाने से भी बीमारी हो सकती है। अपर समाहर्ता सभी अंचलाधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा वह अपने क्षेत्र में नजर बनाए रखेंगे ताकि कोई घटना न हो। बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम सदर अनुमंडल पदाधिकारी अंगार नाथ स्वर्णकार, राजमहल अनुमंडल पदाधिकारी कपिल कुमार, सभी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी उपस्थित थे।

गंगा घाट पर चलाया गया स्वच्छता अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे नमामि गंगे परियोजना के अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा 2024 गंगा विचार मंच के वॉलिंटियर के द्वारा साहिबगंज शहर के बीच स्थित मुक्तेश्वर धाम गंगा घाट पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस सफाई अभियान के नियमित गंगा विचार मंच के प्रदेश संयोजक धर्मेंद्र कुमार ने कहा कि मां गंगा नदी हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं गंगा नदी जीवन दायिनी हैं। प्राकृतिक रुप से बहुत सारे जीव-जन्तु और प्राणी जल के लिए नदियों पर ही निर्भर हैं लेकिन पर्यावरण में फैलता हुआ प्रदूषण नदियों के लिए अभिषाप बन गया है सबको जीवन देने वाली नदियों का अस्तित्व खुद खतरें में हैं कुछ नदियां अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी हैं तो कुछ लुप्त होने की कगार पर हैं ऐसे में नदियों का सरंक्षण करना अति आवश्यक हो गया है औद्योगिक विकास, मानव द्वारा फैलाए जा रहे प्रदूषण और कई स्वार्थ के कारण अनेक नदियां आज मृतप्राय होती जा रही हैं। प्रदूषित और बीमार इन नदियों को आज संरक्षित करने की जरूरत है विश्व की सभी प्राचीन सभ्यतायें नदियों के किनारे ही विकसित, पुष्पित और पल्लवित हुई है। नदियां जहां स्वच्छ जल का संवाहक होती हैं वहीं आखेट, कृषि, पशुपालन तथा यातायात का संवाहिका भी होती हैं एशिया महाद्वीप का हिमालय पर्वत अनेक नदियों का उद्गम स्रोत है, गंगा, यमुना, सिन्धु, झेलम, चिनाव, रावी, सतलज, गोमती, घाघरा, राप्ती, कोसी, हुबली तथा ब्रहमपुत्र आदि सभी नदियों का उद्गम स्रोत हिमालय है ये सभी नदियां हिन्द महासागर में जाकर समाहित हो जाती है हिन्दू धर्म में मां गंगा को माता की तरह हितकारिणी नदियों को देवी के रूप में पूजा जाता है। इसके साथ ही उन्होंने गंगा नदी में स्नान कर रहे सभी लोगों से यह आग्रह भी किया कि सभी लोग गंगा नदी में साबुन, सर्फ से अपने कपड़े को ना धोए और साथ ही साथ घरों की पूजा में इस्तेमाल किए गए सामानों को मां गंगा नदी में ना फेंके उन सभी सामानों को गंगा किनारे छोटा सा गड्ढा खोदकर उसमें डाल दें जिससे मां गंगा प्रदूषित होने से भी बची रहेगी। उन्होंने ये भी लोगों से आग्रह किया कि सभी लोग प्लास्टिक का प्रयोग न करें और उसके स्थान पर कपड़े वाले थैले का प्रयोग करें। प्रदेश संयोजक धर्मेंद्र कुमार ने जिला प्रशासन से मांग करते हुए कहा कि वर्तमान में साहिबगंज जिला में कुल 16 घाट नमामि गंगे के द्वारा निर्माण कराया गया है किंतु देखभाल के अभाव में यह सभी जर्जर अवस्था में हैं सभी निर्मित 16 घाट को पर्यटन मॉडल के रूप में विकसित करते हुए यहां पर महिला एवं पुरुष के लिए अलग-अलग शौचालय एवं चेंजिंग रूम, बैठने के लिए चबूतरा, पर्याप्त मात्रा में अस्थाई कूड़ा दान की व्यवस्था की जाए, हवन कुंड का निर्माण सहित सोलर वेस्ट लाइट की व्यवस्था हो। साथ ही साहिबगंज एवं राजमहल में बिजली चालित शवदाह गृह निर्माण करवाया जाए। इस कार्यक्रम के अवसर पर वार्ड नंबर 2 के निवर्तमान वार्ड पार्षद सुशील भरतीया, दिनेश पाण्डे, दीपक कुमार, मुंगेरी मिश्रा, प्रो पुरोषत्तम मिश्रा, कुमार सार्थक इत्यादि लोग उपस्थित थे।

एक नजर

राष्ट्रीय वायोश्री योजना के तहत सहायक उपकरण का किया गया वितरण

अनगड़ा : खिजरी विधानसभा क्षेत्र अनगडा राष्ट्रीय वयोश्री योजना के तहत के धुमकुड़िया भवन, गेतलसूद में वरिष्ठ नागरिकों के बीच सहायक उपकरण का वितरण किया गया। सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा क्षेत्र के 206 वरिष्ठ नागरिकों के बीच वितरण हुआ। मुख्य अतिथि रांची लोकसभा के लोकप्रिय सांसद रक्षा राज्य मंत्री आदरणीय संजय सेठ जी पूर्व विधायक रामकुमार पाहन जी, जैलेंद्र कुमार जी, सत्यदेव मुंडा जी, जिला परिषद सदस्य अनुराधा मुंडा, अनगडा प्रमुख दीपा उरांव, दिव्यांग अध्यक्ष तबरेज अंसारी, लीला देवी, अजय उरांव, मुखिया शांति मुंडा आदि शामिल थे।

सरला बिरला में गांधी जी के आदर्शों की गूंज

अनगड़ा : सरला बिरला पब्लिक स्कूल, रांची में गांधी जयंती मनाई गई। जिसमें महात्मा गांधी के शांति, अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों को याद किया गया। इस अवसर पर एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन हुआ। जिसमें वैष्णव जनह्य गीत प्रस्तुत किया गया। छात्रों ने नृत्य, कविताएँ और भाषणों के माध्यम से गांधीजी के विचारों को प्रदर्शित किया। सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा ह्यगांधी दर्पण नामक एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जिसमें गांधीजी के जीवन की प्रमुख घटनाओं को दशार्या गया। भारत छोड़ो आंदोलन, दांडी मार्च, और नई तालीम को प्रमुखता दी गई। प्रदर्शनी में नेल आर्ट और टैटू के स्टॉल भी लगाए गए थे। प्राचाया परमजीत कौर ने छात्रों को गांधीजी के पदचिह्नों पर चलने और शांति व सद्भावना के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

आजसू पार्टी का पांच दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट संपन्न

चैनपुर : सोमवार को लूथरन मैदान में आजसू पार्टी द्वारा आयोजित पांच दिवसीय फुटबॉल टूनार्मेंट का फाइनल मैच खेला गया। इस टूनार्मेंट ने युवाओं में खेल की भावना को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया। इस अवसर पर केंद्रीय सचिव सह गुमला विधानसभा प्रभारी बोनीफास कुजूर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आजसू पार्टी युवाओं को जोड़कर कंधे से कंधा मिलाकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध है। टूनार्मेंट में गुमला विधानसभा क्षेत्र के सभी प्रखंडों से लगभग 80 टीमों ने भाग लिया। झड़गांव की टीम ने विजेता का खिताब जीता, जबकि परमवीर अल्बर्टा मेमोरियल कॉलेज चैनपुर की टीम उपविजेता रही। विजेता टीम झाड़गाव को 21,000 रुपये का नकद और एक खस्सी का पुरस्कार और उपविजेता अल्बर्ट एक्का मेमोरियल कॉलेज की टीम को 15,000 रुपये का नकद व एक खस्सी पुरस्कार दिया गया। इसके अलावा, तीसरे और चौथे स्थान पर रही टीमों को भी एक एक खस्सी देकर पुरूस्कृत किया गया। इस दौरान केंद्रीय सचिव बोनिफास कुजुर ने कहा कि हमारे क्षेत्र के युवाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है बस यहां व्यवस्था की कमी है। उन्होंने कहा कि चैनपुर अनुमंडल क्षेत्र में एक अच्छा स्टेडियम रहने से यहां के खेल प्रीमियम खिलाड़ियों को काफी अच्छा लगेगा।

विश्रामपुर विस क्षेत्र में बिना निष्पादित टेंडर का विधायक लगवा रहे झूठा शिलापट्ट : अभिमन्यु

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू): विश्रामपुर विधानसभा के विपक्षी बोल अभिमन्यु सिंह ने प्रेसवार्ता का आयोजन किया। जिसमें विश्रामपुर के भाजपा विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी पर जनता के आंख में फिर से धूल झोंककर ठगने का गंभीर आरोप लगाया है। मौके पर समाजसेवी अभिमन्यु सिंह ने बताया कि चुनाव जीतने के बाद क्षेत्र से नदारद रहने वाले विश्रामपुर विधायक अपने दस- बीस समर्थकों के साथ जगह-जगह बिना टेंडर प्रक्रिया के योजनाओं का झूठा शिलान्यास करते फिर रहे हैं। विधानसभा चुनाव से पूर्व हड़बड़ाहट में सड़क निर्माण योजना टेंडर बैगर किसी संवेदक को कार्य आर्वाटित होने से पहले ही बगैर अधिकारी, और बिना ठेकेदार की मौजूदगी में अपने नाम का शिलापट्ट घूम-घूमकर लगा रहे हैं। इतना ही नहीं बिना प्राक्कलन राशि की जानकारी दिए निवेदक में कार्यपालक अभियंता का पदनाम लिखवाकर विधायक और उनके समर्थक असंवैधानिक कार्य भी कर रहे हैं। साथ ही बताया कि कार्यपालक अभियंता ने मौखिक रूप से विधायक को शिलापट्ट लगाने की मनाही कर दी है, लेकिन हताश निराश विधायक झूठा शिलान्यास कर अपने नाम का अवैध शिलापट्ट लगाने से हर रोज बाज नहीं आ रहे हैं। जो साबित कर रहा है कि उन्हें ज्ञात हो चुका है कि उनका विधायिका पूरा हो चुका है एवं हार तय है। विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र पर चंद्रग्रहण के रूप में विधायक पद पर विराजमान रामचंद्र चंद्रवंशी के छलावे को अभिमन्यु सिंह ने उजागर करते हुए बताया कि जिस सड़क की ओर दस साल के कार्यकाल में विधायक वोट मांगने के अलावा झांकी मारने भी नहीं गए, उस सड़क को नीजी खर्च से जनता के चलने लायक अंजू सिंह ने बनवाया। पांच साल से गुमशुदा विधायक उन्हीं सड़कों का चुनाव से दस दिन पहले ताबड़तोड़ झूठा शिलान्यास करके जनता के आंखों में धूल झोंकने का काम कर रहे हैं। विभाग से टेंडर हो रहे सड़क निर्माण योजना की सूची निकाल कर जगह-जगह योजनाओं का शिलापट्ट लगाने से उनके भ्रष्ट कार्यकाल पर पर्दा नहीं पड़ेगा। पांच साल जनता के बीच रहकर सच्चाई बताने का काम टीम अंजू सिंह ने किया है। अपनी हार स्वीकार कर चुके वर्तमान विधायक का अंत्तोगत्वा चेहरा भी जनता के सामने हमने बेनकाब करने का काम किया है।

दुर्गा पूजा को लेकर चैनपुर थाना में शांति समिति की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : दुर्गा पूजा को लेकर चैनपुर थाना परिसर में मंगलवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक हुई। बीडीओ यादव बैठा ने दुर्गा पूजा त्योहार के दौरान शांति व्यवस्था, सौहार्द वातावरण बनाए रखने को लेकर सभी समुदाय के लोगों से विभिन्न पहलुओं पर चर्चा किए। वही थाना प्रभारी ने पूजा में शराब बंदी, साफ सफाई, यातायात व्यवस्था पर विशेष रूप से चर्चा की । दुर्गा पूजा के दौरान पूर्ण रूप से शराबबंदी रहेगी और साउंड सिस्टम पर नियंत्रण रखेंगे, किसी भी तरह का असामाजिक भड़काऊ गाना नहीं बजाएं और वॉलंटियर की तैनाती रखेंगे। वहीं सोशल मीडिया पर भ्रामक खबर फैलाने वालों पर पैनी नजर रखने को कहा गया। इस दौरान विधि व्यवस्था से जुड़े कई मामलों पर चर्चा की गई। मौके पर मुख्य रूप से प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा, अंचल अधिकारी दिनेश कुमार गुप्ता, चैनपुर मुखिया शोभा देवी, थाना प्रभारी कुंदन कुमार चौधरी सहित चैनपुर प्रखंड के सभी गणमान्य लोग उपस्थित थे।

भाकपा ने विभिन्न इलाकों में चलाया जनसंपर्क अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के जिला सचिव सह राष्ट्रीय परिषद सदस्य रूचिर कुमार तिवारी ने बदलाव यात्रा के 10 वां दिन चैनपुर, कुदागा, नेउरा, सेमरा, लोहरसिमी, सलतुआ में आम जनता से जनसंपर्क अभियान कर सभा किया सभा की अध्यक्षता शंभू सिंह चेरो ने किया एवं संचालन अंचल सचिव प्रभु साव ने किया सभा को संबोधित करते हुए डालटेनगंज के भावी विस उम्मीदवार रुचिर कुमार तिवारी ने कहा कि यह बदलाव यात्रा आम जनता के जीवन यापन उनके शिक्षा स्वास्थ्य चिकित्सा भोजन और आवास की व्यवस्था में बदलाव लाएगा जरूरत है । इस बदलाव यात्रा के साथ चलकर मजबूत करने की। डाल्टनगंज विधानसभा के सभी जनप्रतिनिधियों ने चाहे वह बीजेपी हो कांग्रेस हो या अन्य सभी ने जनता का वोट लेकर उनको चलने का काम किया है चाहे कांग्रेस की प्रतिज्ञा यात्रा हो या भाजपा की परिवर्तन यात्रा ना तो आज तक कांग्रेस की प्रतिज्ञा पूरा हुआ और नहीं भाजपा के परिवर्तन यात्रा से आम जनता के जीवन शैली रहन-सहन में कोई परिवर्तन हुआ। ऐसी स्थिति में जनता इस बार दोनों को सबक सिखा कर गरीब मजदूर किसान छात्र नौजवानों के के पार्टी की के पक्ष में गोलबंद होवे। सभा को संबोधित करते हुए वरिष्ठ कम्युनिस्ट नेता शंभू सिंह चेरों ने कहा कि रूचिर कुमार तिवारी का यह बदलाव यात्रा को आम जनता सफल बनाएगी। अभय कुमार भूइंया ने कहा कि दलित गरीब आदिवासियों के एक मात्र सेवक रूचिर कुमार तिवारी के बदलाव यात्रा को समर्थन देकर उनके हाथों को मजबूत करें तभी डाल्टनगंज विस का विकास संभव है। किसान सभा के जिला अध्यक्ष उमेश सिंह चोरों ने कहा कि भाजपा को मजबूत करें किसानों के हर खेत में पानी मिलेगा।

अवैध शराब बिक्रेता सचेत हो जायें अन्यथा होगी कार्रवाई : एसडीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : सदर एसडीओ सुलोचना मीणा, सीओ अमरदीप सिंह बल्होत्रा, थाना प्रभारी उत्तम कुमार राय व उत्पाद विभाग की टीम ने सदर प्रखंड क्षेत्र में अवैध शराब के खिलाफ छापेमारी आभियान चलाया। छापेमारी अभियान के दौरान ग्राम मटपुरही, सुआ शराब भाट्ठी समेत सदर थाना क्षेत्र के लाईन होटलों , किराना दुकानों में अवैध शराब की जांच की गई। इस दौरान पुलिस को कुछ जगहों से अवैध शराब भी बरामद हुआ है। इधर प्रशासन द्वारा चलाये गये छापेमारी अड्डभियान की भनक लगते ही शराब बिक्रेता घर छोड़कर भाग गये। सदर एसडीओ ने कहा कि लाईन होटलों व किराना दुकानों में भी छापेमारी की गई। साथ ही शराब भाट्ठी में जांच की गई इस दौरान शराब बिक्रेता फरार हो गये हैं। उन्होंने कहा कि दुर्गा पूजा व विधानसभा चुनाव को लेकर सदर अनुमंडल क्षेत्र में लगातार अवैध शराब के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने शराब भट्ठी संचालक व शराब बिक्रेताओं को चेतावनी देते हुए कहा कि अवैध शराब की बिक्री बंद कर दें। छापेमारी में अवैध शराब के साथ पकड़े जाने कार्रवाई की जायेगी। सदर अंचलाधिकारी अमरदीप सिंह बल्होत्रा ने बताया कि आये दिन ग्रामीणों द्वारा सूचना दी जाती है कि सदर प्रखंड में महुआ का अवैध शराब बनाकर बेचा जाता है। उन्होंने कहा कि किसी भी हालत में अवैध शराब की बिक्री नहीं करने दी जायेगी। अवैध शराब बेचना गैर कानूनी है। अवैध शराब बेचनेवालों को बख्शा नहीं जायेगा। उन पर मामला दर्ज कर कार्रवाई की जायेगी। मौके पर सदर थाना प्रभारी उत्तम कुमार राय ने कहा कि दुर्गा पूजा के दौरान शराब पर प्रतिबंध लगाया गया है। कहा कि इस दौरान गश्ती बल की तैनाती की जायेगी। क्षेत्र में अवैध शराब बिक्री करनेवाले सुधर जायें अन्यथा जेल भेजा जायेगा। शरारती तत्वों पर पुलिस की पैनी निगाह रहेगी। छापेमारी अभियान में उत्पाद विभाग के सब इंस्पेक्टर, एएसआई भारत बाूषण समाड़, सदर पुलिसकर्मी शामिल थे।

शिवाजी मैदान में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस पार्टी को समर्थन देने की ली शपथ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : स्थानीय शिवाजी मैदान में प्रतिज्ञा यात्रा के २२वां दिन प्रतिज्ञा यात्रा के समापन के शुभ अवसर पर प्रतिज्ञा सम्मेलन का अयोजन किया गया। जहां डाल्टनगंज विधानसभा के विभिन्न प्रखंडो से हजारों-हजार की संख्या में कार्यकर्त्ताओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। पुरा शिवाजी मैदान में कार्यकर्ताओ से खचाखच भरा हुआ था। जहां सैकड़ो कार्यकर्ताओ ने के एन त्रिपाठी को फूल और मालाओं से लाद दिया। जिसके बाद द्विप-प्रज्वलित कर और स्वागत गान के बाद कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। सर्वप्रथम शंभू चौरसिया ने कहा कि हमने देखा 2019 में वोकस वोट कोसियारा में डालने का विरोध किया तो कितना हंगामा खड़ा कर दिया गया । चाहे जो हो जाए वोकस वोट नहीं देने देंगे, ये वादा है। वहीं हूंटार निवासी दिलीप चंद्रवंशी ने कहा कि यहां तो लगता भी नही कि कोई विधायक हैं जब केएन त्रिपाठी विधायक थे तो गरीब गुरबों कि आवाज बनकर 24 घंटे हाजिर रहते थे। दिलीप चंद्रवंशी ने कहा कि 10 वर्षों में इस विधानसभा की दुर्दशा हो गई है। वहीं मौके पर विवेका त्रिपाठी ने कहा हमने देखा, जब के० एन० त्रिपाठी मंत्री थे, तब हम सभी को लगता था, जैसे किसी ऑफिस में काम करते हैं। सुबह से शाम तक केवल जनता का काम करते रहते थे। उन्होने कहा लोग पुछते थे कि आज किधर कैम्प लगेगा। मगर अब यहां कि जनता विधायक के कार्यों से छुब्ध है और निराश है। आगे कार्यकर्ताओ को संबोधित करते हुए के०एन० त्रिपाठी ने कहा कि अगर आपको अपने क्षेत्र में विकास चाहिए तो पैसा लेकर वोट ना करें क्योंकि जितना पैसा आप लेकर वोट करते हैं, उससे कहीं ज्यादा बढ़कर कई गुना अधिक यहां के नेता अफसर उसे आपसे हॉस्पिटल कचहरी पुलिस तरह-तरह कई तरह के उपाय से आपसे वसूल कर लेते हैं।

झारखंड के सर्वांगीण विकास के लिए हेमंत सरकार है जरूरी : रविंद्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

छतरपुर पलामू : छतरपुर प्रखंड के झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सह मुखिया संघ के उपाध्यक्ष स्थानीय विधायक उम्मीदवार रविंद्र राम ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि जन-जन में हेमंत सरकार की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर विपक्षी लोग तिलमिला उठे हैं। कहा राज्य भर में बहुत मजबूती के साथ झारखंड मुक्ति मोर्चा सरकार बनाएगी। लोगों को सरकारी कार्यों को लेकर कार्यालय के न जाने कितने चक्कर लगाने पड़ते थे जिसे ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने आपकी योजना आपके सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का शुरूआत किए। यह कार्यक्रम लोगों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण व कारगर साबित हुआ। इस कार्यक्रम का जितनी प्रशंसा की जाय वह कम होगा। इस दौरान उन्होंने कहा कि अबुआ आवास योजना, मुख्यमंत्री मइयां सम्मान योजना, सीएम उत्कृष्ट विद्यालय, सर्वजन पेंशन योजना, मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना, गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड, मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना, सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना, विद्यार्थियों के लिए साइकिल वितरण, फूलो झानो आशीर्वाद योजना, सभी योग्य लोगों को राशन कार्ड से जोड़ना, बिरसा सिंचाई कूप, विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति कि व्यवस्था, जेपीएससी जेएसएससी जैसी नियुक्तियां, पारदेशीय छात्रवृत्ति योजना, ग्रामीण सड़क सुदृढ़ीकरण की योजना, मेगा लिफ्ट सिंचाई किसान पाठशाला, मुख्यमंत्री सारथी योजना,महिला सशक्तिकरण के साथ-साथ सोना सोबरन धोती साड़ी योजना, मुख्यमंत्री पशुधन योजना, बिरसा हरित ग्राम योजना, कृषि ऋण का माफी, बिजली बिल माफी के साथ 200 यूनिट बिजली फ्री देने जैसी बहुत से योजना लाकर हेमंत सरकार झारखंड वासियों के लिए बड़े ही उत्कृष्ट कार्य किया है। इन सभी के साथ-साथ सरकार स्वास्थ्य के दिशा में भी बेहतर कार्य कर रही है। कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जो सपना देखा था कि हमारा झारखंड सुखी झारखंड,समृद्ध झारखंड और स्वास्थ्य झारखंड होगा उस सपना को साकार करने के लिए उन्होंने रात दिन एक कर सभी योजनाओं को धरातल पर उतारने का कार्य किया है और इस दिशा में पूरे समर्पण भाव से अग्रसर भी हैं। कहा की राज्य में सरकार की गठन के बाद शुरूआती दिनों में कोरोना महामारी का मार झेलने से विकास की गति पर थोड़ी फर्क पड़ी थी परंतु स्थिति सामान्य होने के बाद राज्य को विकसित राज्य बनाने के लिए उन्होंने रात दिन एक कर दिया और दिलो जान से इस राज्य के चाहूमुखी विकास के लिए खुद को समर्पित कर दिया। शहरों से लेकर गांव तक झारखंड मुक्ति मोर्चा के बढ़ती हुई इस लोकप्रियता को देखकर विपक्ष के लोग मुद्दा विहीन हो गए हैं तथा वे सरकार के बारे में अनर्गल बातें भी करने से कतराते नहीं। परंतु इस बार झारखंड की जनता उन्हें करारा जवाब देगी और पूरे राज्य भर में हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखंड मुक्ति मोर्चा पहले की अपेक्षा और भी मजबूती के साथ सरकार बनाएगी।

संक्षिप्त खबरें

मैं बहनों की आवाज बनूंगी : अरुणा शंकर

मेदिनीनगर (पलामू) : प्रथम महापौर अरुणा शंकर ने सलतूवा ग्राम में चौपाल लगाते हुए कहा 3 तारीख से मां दुर्गा कि पूजा शुरू होने वाली है जहां पूरा देश में नारी शक्ति स्वरूप मां की पूजा 10 दिनों तक होगी। हम नारीयो को भी अपनी शक्ति का एहसास सरकार को बदलकर करा देना है। शंकर ने कहा हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हम आधी आबादी महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देकर अस्त्र-शस्त्र दे दिया अब हम बहनों की आवाज लोकसभा, विधानसभा एवं निकाय से लेकर गांव के खलियान तक गूंजेगी। एक समय था जब हम बहनों को अबला तक कहा जाता था लेकिन प्रधानमंत्री ने हम बहनों को 35 प्रतिशत आरक्षण देकर आवाज दे दी है। प्रथम महापौर ने चौपाल में आई सभी बहनों से कहा मैं आप सबों की आवाज बनूंगी और हर दुख सुख में आप सबों के साथ खड़ी रहूंगी। इस अवसर पर प्रथम महापौर ने पूर्णकालिक भाजपाई को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन अरुण कुमार राम ने किया। कार्यक्रम में काफी संख्या में महिलाएं उपस्थित थी वही समाजसेवी बद्री प्रसाद, छात्रधारी, हरिद्वार, सोनू, नागराज, सीताराम साहू, बिंदेश्वर प्रसाद, अनीता, मुन्नी देवी, राजेश्वर साहू, रामबरत विश्वकर्मा, छोटेलाल गुप्ता, पुरानचंद, देवनारायण, विनोद, मधु, मनोज, कौशल तथा काफी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे। कार्यक्रम में बच्चों ने स्वागत गान से सबों को मंत्र मुक्त कर दिया और एक बच्ची ने अपने हाथों से प्रथम महापौर की खूबसूरत सी तस्वीर बनाकर उपहार स्वरूप दिया।

मीना गुप्ता ने डाल्टनगंज भंडरिया विस क्षेत्र का किया सघन दौरा

पलामू : चैनपुर की पूर्व जिला परिषद सदस्य सह भाजपा नेत्री मीना गुप्ता डाल्टनगंज भंडरिया विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम बसरिया, सोकरा, दुलसुलमा, गेनुवा टोला आदि गांवों का सघन दौरा कर क्षेत्र की ज्वलंत समस्याओं को लेकर बैठक की जिसमें ग्रामीणों ने बिजली, पानी, सड़क जैसी मूलभूत समस्याओं के साथ ही बेरोजगारी को प्रमुखता से बताया इस क्षेत्र के सोकरा गांव में ग्रेफाइट का माइंस है जो वर्षों से बंद है जो विश्व प्रसिद्ध माइंस है। जिसमें 80 प्रतिशत तक ग्रेफाइट मौजूद है। परंतु आज इस माइंस में काम करने वाले मजदूर बेरोजगार हो गए हैं उनकी आर्थिक स्थिति काफी खराब है यहां लोग इसको लेकर आंदोलन करते-करते थक गए है। उनकी समस्या को मैंने भी कई बार राज्य सरकार को संज्ञान में देने का काम किया परंतु सरकार व जनप्रतिनिधि के द्वारा इस पर कोई पहल नहीं किया गया। लोग इस सरकार में अपने आप को ठगा सा महसूस कर रहे हैं क्षेत्र भ्रमण के दौरान गेनुवा टोला पहुंचे जहां पर एक वार्ड सदस्य द्वारा सड़क निर्माण कराया गया था परंतु वह भी वर्तमान में जर्जर अवस्था में हो गया है जहां कि आना-जाना भी मुश्किल है। एक तरफ भारत सरकार के केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के द्वारा झारखंड सरकार से बार-बार सड़क का प्रपोजल मांगा जा रहा है परंतु वर्तमान में हेमंत सरकार को विकास से कोई लेना-देना नहीं है ऐसे निष्क्रिय सरकार को जड़ से उखाड़ कर भाजपा की सरकार बनाने का संकल्प बैठक में ग्रामीणों के द्वारा लिया गया। बैठक में कर्मदेव राम, बनारसी सिंह, सुनील भुईयां, सरिता देवी महिमा देवी, प्रतिमा देवी, बिंदिया देवी, गीता देवी, दिनेश सिंह सीमन सिंह, कमलेश भुईयां आदि काफी संख्या में ग्रामीण उपस्थित हुए थे।

भव्य होगा भगवान परशुराम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह : कमलेश शुक्ला

मेदिनीनगर (पलामू) : राष्ट्रीय परशुराम सेना भार्गव के द्वारा पलामू में बनाए जा रहे हैं भगवान परशुराम मंदिर निर्माण अब अपने अंतिम चरण में है तकरीबन हर कार्य संपन्न हो चुका है। मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा होनी है जिसको लेकर के राष्ट्रीय परशुराम सेना भार्गव के पलामू जिला अध्यक्ष मधुकर शुक्ला की अध्यक्षता में एक कोर कमेटी की बैठक मंदिर परिसर पर आयोजित की गई जिसमें मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा को भव्य बनाने के लिए क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए इसको लेकर के गहन विचार विमर्श किया गया मंदिर निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने वाले कमलेश शुक्ला ने बताया कि भगवान परशुराम मंदिर निर्माण से लेकर के अभी तक जिस प्रकार लोगों ने अपना तन मन धन देकर के मंदिर निर्माण पूर्ण करने में अपनी महत्ती भूमिका अदा की है उसी प्रकार सभी की ललक है कि उनके आराध्य भगवान परशुराम के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा भी भव्य एवं अतुलनीय होनी चाहिए जिसको लेकर सभी मे एक अलग उत्साह का माहौल है। राष्ट्रीय परशुराम सेना भार्गव के द्वारा इस आयोजन को भव्य तरीके से संपन्न करने के लिए प्रतिबद्धता समाज को जग जाहिर की जाती है। बैठक में उपस्थित प्रदेश संरक्षक सुनील तिवारी ने बताया कि जो सभी कि राय आई हैं कि उक्त प्राण प्रतिष्ठा समारोह में पलामू प्रमंडल के हर एक परशुराम वंशी समेत हर गांव के सभी सम्मानित लोगों को आयोजन में आमंत्रित किया जाएगा जिसके लिए रथ बना करके आमंत्रण गांव गांव घुमाया जाएगा। प्रदेश संरक्षक मुकेश तिवारी ने बताया कि सभी की बातों और सुझावों को मद्देनजर रखते हुए किस प्रकार कार्यक्रम भव्य हो इसके लिए कार्य किया जाएगा। जिला अध्यक्ष पलामू मधुकर शुक्ला ने कहा कि कार्यक्रम को भव्य बनाने को लेकर के सभी का विचार आया है और जल्द ही समाज की बैठक बुलाकर के विद्वानों के मत्तानुसार मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तिथि और पांच दिवसीय अनुष्ठान कार्यक्रम की तिथि की घोषणा करते हुए यज्ञ कमिटी विस्तार किया जाएगा। बैठक में कोर कमेटी के प्रदेश संरक्षक अजय तिवारी अकेला, बसन्त तिवारी, परमेश तिवारी, प्रदेश पर्यवेक्षक अभिषेक तिवारी चिंटू, प्रदेश शिक्षा सलाहकार अविनाश पांडे, रमेश पांडे, राकेश तिवारी, संजीत पांडे, मनी तिवारी, जिला कोषाध्यक्ष अंकित पांडे, रितिक चौबे, अप्पू तिवारी सहित तमाम कोर कमिटी के सदस्य उपस्थित रहे।

नन प्रैक्टिशनर अधिवक्ताओ को वेल्फेयर की मिलने वाली राशि से वंचित करने की उठी मांग

मेदिनीनगर (पलामू) : जिला अधिवक्ता संघ के सदस्य विक्रम त्रिपाठी ने 275 अधिवक्ताओ के हस्ताक्षर युक्त आवेदन संघ के अध्यक्ष रामदेव प्रसाद यादव को देकर संघ से मिलने वाले वेलफेयर की राशि को नियमित अधिवक्ताओं में वितरण करने व नन प्रैक्टिशनर अधिवक्ताओं को कमेटी बनाकर वेलफेयर की राशि से वंचित करने को ले आवेदन सौपा हैं।अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष व महासचिव के नाम सौंप गए आवेदन पत्र में लिखा गया है कि वोट की राजनीति के लिए अब तक वेलफेयर की राशि का बंदरबाट होता आया है। नियमित अधिवक्ता सालों भर हर परिस्थिति का सामना कर विधि व्यवसाय करते हैं। जिससे संघ को आर्थिक लाभ होता है और जब इनके द्वारा अर्जित की हुई वेलफेयर की राशि का वितरण करने का समय आता है तो वैसे नन प्रैक्टिशनर अधिवक्ता को जो संघ में निबंधन कराने के बाद प्राथमिकता के आधार पर किसी न किसी अन्य संस्था, विभाग, व्यवसाय में सालों भर ब्यस्त रहते हैं। और होली दशहरा के समय वकालत खाना में आकर बेल्फेयर की राशि ले जाते हैं। अधिवक्ताओ ने सिर्फ नियमित अधिवक्ता के बीच ही वेलफेयर की राशि बितरण करने की मांग की है तथा नन प्रैक्टिशनर अधिवक्ता को मिलने वाली वेलफेयर की राशि से बंचित करने की मांग की है।

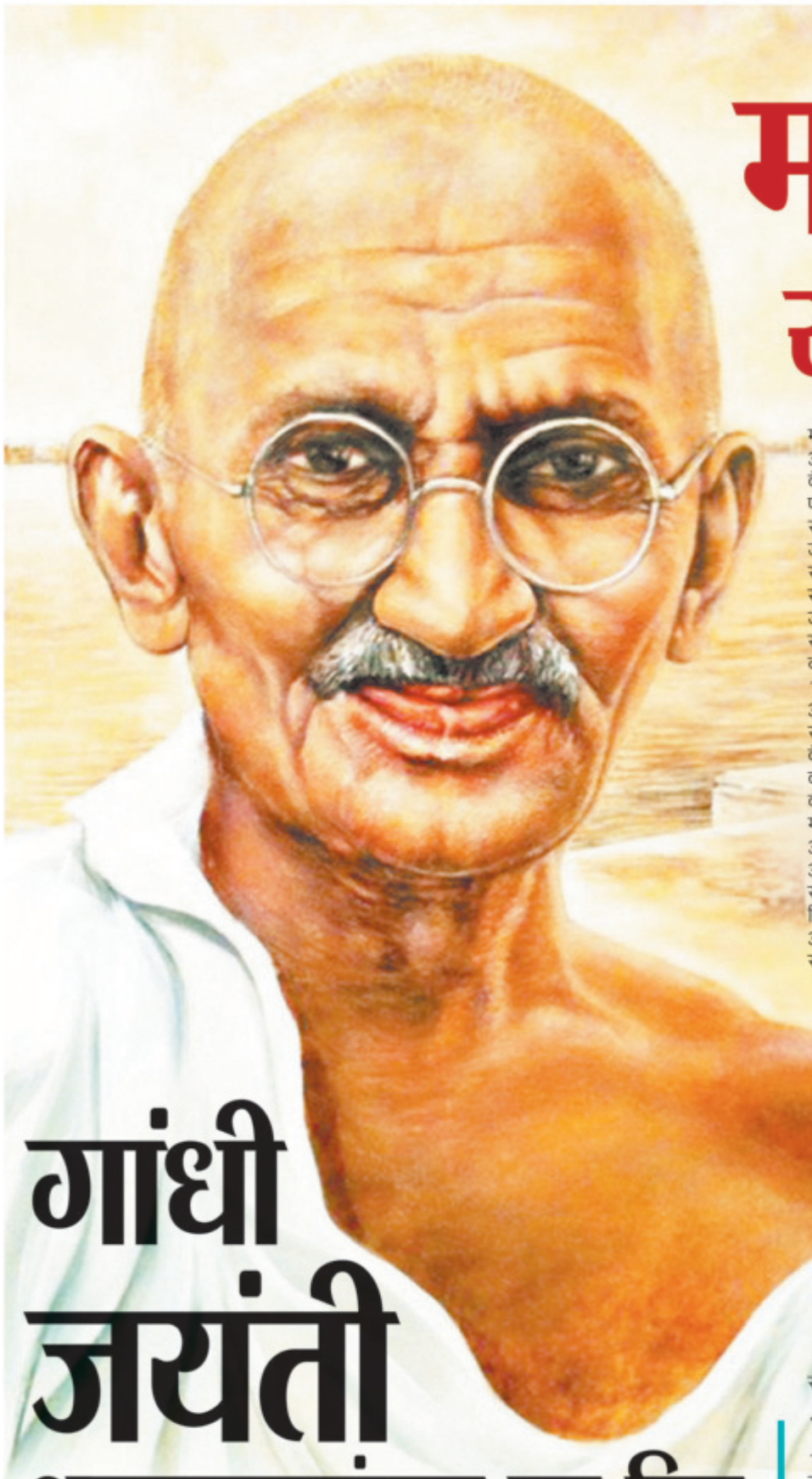

महात्मा गांधी
स्वतंत्र भारत के पिता

भारत के राष्ट्रपिता मोहनदास कर्मचंद गांधी जिन्हें बापू या महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है, के जन्म दिन 2 अक्तूबर को गांधी जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। वस्तुतः गांधीजी विश्व भर में उनके अहिंसात्मक आंदोलन के लिए जाने जाते हैं, और यह दिवस उनके प्रति वैश्विक स्तर पर सम्मान व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है ।

मोहनदास करमचंद गांधी (2 अक्तूबर 1869 - 30 जनवरी 1948) भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह - व्यापक सविनय अवज्ञा के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव संपूर्ण अहिंसा पर रखी गई थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति आंदोलन के लिए प्रेरित किया।उन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत- महात्मा अथवा महान आत्मा एक सम्मान सूचक शब्द जिसे सबसे पहले रवीन्द्रनाथ टेगौर ने प्रयोग किया और भारत में उन्हें बापू के नाम से भी याद किया जाता है। उन्हें सरकारी तौर पर राष्ट्रपिता का सम्मान दिया गया है 2 अक्टूबर को उनके जन्म दिन राष्ट्रीय पर्व गांधी जयंती के नाम से मनाया जाता है और दुनियाभर में इस दिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है। सबसे पहले गांधी ने रोजगार अहिंसक सविनय अवज्ञा प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका, में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु प्रयुक्त किया। 1915 में उनकी वापसी के बाद उन्होंने भारत में किसानों , कृषि मजदूरों और शहरी श्रमिकों को अत्याधिक भूमि कर और भेदभाव के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए एकजुट किया। 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभालने के बाद गांधी जी ने देशभर में गरीबी से राहत दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण, आत्म-निर्भरता के लिए अस्पृश्यता का अंत आदि के लिए बहुत से आंदोलन चलाएं। किंतु इन सबसे अधिक विदेशी राज से मुक्ति दिलाने वाले स्वराज की प्राप्ति उनका प्रमुख लक्ष्य था। गाँधी जी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नमक कर के विरोध में 1930 में दांडी मार्च और इसके बाद 1942 में , ब्रिटिश भारत छोड़ो आन्दोलन छेड़कर भारतीयों का नेतृत्व कर प्रसिद्धि प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीका और भारत में विभिन्न अवसरों पर कई वर्षों तक उन्हें जेल में रहना पड़ा। गांधी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिए वकालत भी की। उन्होंने आत्म-निर्भरता वाले आवासीय समुदाय में अपना जीवन गुजारा किया और पंरपरागत भारतीय पोशाक धोती और सूत से बनी शॉल पहनी जिसे उसने स्वयं ने चरखे पर सूत कात कर हाथ से बनाया था। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि तथा सामाजिक प्रतिकार दोनों के लिए लंबे-लंबे उपवास भी किए।

गांधी दक्षिण अफ्रीका में (1895)

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी को भारतीयों पर भेदभाव का सामना करना पड़ा। आरम्भ में उन्हें प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इन्कार करने के लिए ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इतना ही नहीं पायदान पर शेष यात्रा करते हुए एक यूरोपियन यात्री के अन्दर आने पर चालक की मार भी झेलनी पड़ी। उन्होंने अपनी इस यात्रा में अन्य भी कई कठिनाइयों का सामना किया। अफ्रीका में कई होटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। इसी तरह ही बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने नहीं माना। ये सारी घटनाएँ गान्धी के जीवन में एक मोड़ बन गईं और विद्यमान सामाजिक अन्याय के प्रति जागरुकता का कारण बनीं तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुईं। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गान्धी ने अंग्रेजी साम्राज्य के अन्तर्गत अपने देशवासियों के सम्मान तथा देश में स्वयं अपनी स्थिति के लिए प्रश्न उठाये।

1906 के जुलु युद्ध में भूमिका

1906 में, दक्षिण अफ्रीका में नए चुनाव कर के लागू करने के बाद दो अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला गया। बदले में अंग्रेजों ने जूलू के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। गांधी जी ने भारतीयों को भर्ती करने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों को सक्रिय रूप से प्रेरित किया। उनका तर्क था अपनी नागरिकता के दावों को कानूनी जामा पहनाने के लिए भारतीयों को युद्ध प्रयासों में सहयोग देना चाहिए। तथापि, अंग्रेजों ने अपनी सेना में भारतीयों को पद देने से इंकार कर दिया था। इसके बावजूद उन्होने गांधी जी के इस प्रस्ताव को मान लिया कि भारतीय घायल अंग्रेज सैनिकों को उपचार के लिए स्टेचर पर लाने के लिए स्वैच्छा पूर्वक कार्य कर सकते हैं। इस कोर की बागडोर गांधी ने थामी। 21 जुलाई 1906 को गांधी जी ने इंडियन ओपिनिय में लिखा कि 23 भारतीय निवासियों के विरूद्ध चलाए गए आप्रेशन के संबंध में प्रयोग द्वारा नेटाल सरकार के कहने पर एक कोर का गठन किया गया है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों से इंडियन ओपिनियन में अपने कॉलमों के माध्यम से इस युद्ध में शामिल होने के लिए आग्रह किया और कहा, यदि सरकार केवल यही महसूस करती हे कि आरक्षित बल बेकार हो रहे हैं तब वे इसका उपयोग करेंगे और असली लड़ाई के लिए भारतीयों का प्रशिक्षण देकर इसका अवसर देंगे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष

1915 में, गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत में रहने के लिए लौट आएं।उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों पर अपने विचार व्यक्त किए, लेकिन वे भारत के मुख्य मुद्दों, राजनीति तथा उस समय के कांग्रेस दल के प्रमुख भारतीय नेता गोपाल कृष्ण गोखले जो एक सम्मानित नेता थे पर ही आधारित थे।

चंपारण और खेड़ा - गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन और खेड़ा सत्याग्रह, आंदोलन में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकाश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भता दिया गया जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गांवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढता ही गया। यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा, गुजरात में भी यही समस्या थी। गांधी जी ने वहां एक आश्रम बनाया जहाँ उनके बहुत सारे समर्थकों और नए स्वेच्छिक कार्यकर्ताओं को संगठित किया गया। उन्होंने गांवों का एक विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया जिसमें प्राणियों पर हुए अत्याचार के भयानक कांडों का लेखाजोखा रखा गया और इसमें लोगों की अनुत्पादकीय सामान्य अवस्था को भी शामिल किया गया था। ग्रामीणों में विश्वास पैदा करते हुए उन्होंने अपना कार्य गांवों की सफाई करने से आरंभ किया जिसके अंतर्गत स्कूल और अस्पताल बनाए गए और उपरोक्त वर्णित बहुत सी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए ग्रामीण नेतृत्व प्रेरित किया।

असहयोग आन्दोलन - गांधी जी ने असहयोग, अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ़ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। पंजाब में अंग्रेजी फोजों द्वारा भारतीयों पर जलियावाला नरसंहार जिसे अमृतसर नरसंहार के नाम से भी जाना जाता है ने देश को भारी आघात पहुंचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी। गांधीजी ने ब्रिटिश राज तथा भारतीयों द्वारा प्रतिकारात्मक रवैया दोनों की की। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों तथा दंगों के शिकार लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा पार्टी के आरंभिक विरोध के बाद दंगों की भर्त्सना की। गांधी जी के भावनात्मक भाषण के बाद अपने सिद्धांत की वकालत की कि सभी हिंसा और बुराई को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है। किंतु ऐसा इस नरसंहार और उसके बाद हुई हिंसा से गांधी जी ने अपना मन संपूर्ण सरकार आर भारतीय सरकार के कब्जे वाली संस्थाओं पर संपूर्ण नियंत्रण लाने पर केंद्रित था जो जल्दी ही स्वराज अथवा संपूर्ण व्यक्तिगत, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक आजादी में बदलने वाला था।

स्वराज और नमक सत्याग्रह - गांधी जी सक्रिय राजनीति से दूर ही रहे और 1920 की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता , शराब, अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ आंदोलन छेड़ते भी रहे। उन्होंने पहले 1928 में लौटे एक साल पहले अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक नया संवेधानिक सुधार आयोग बनाया जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। इसका परिणाम भारतीय राजनैतिक दलों द्वारा बहिष्कार निकला। दिसंबर 1928 में गांधी जी ने कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा गया था अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में संपूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहें। गांधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे पुरूषों द्वारा तत्काल आजादी की मांग के विचारों को फलीभूत किया बल्कि अपनी स्वयं की मांग को दो साल की बजाए एक साल के लिए रोक दिया। अंग्रेजों ने कोई जवाब नहीं दिया। नहीं 31 दिसंबर 1929 , भारत का झंडा फहराया गया था लाहौर में है . 26 जनवरी 1930 का दिन लाहौर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने मनाया। यह दिन लगभग प्रत्येक भारतीय संगठनों द्वारा भी मनाया गया। इसके बाद गांधी जी ने मार्च 1930 में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया जिसे 12 मार्च से 6 अप्रेल तक नमक आंदोलन के याद में 400 किलोमीटर (248 मील) तक का सफर अहमदाबाद से दांडी, गुजरात तक चलाया गया ताकि स्वयं नमक उत्पन्न किया जा सके। समुद्र की ओर इस यात्रा में हजारों की संख्या में भारतीयों ने भाग लिया। भारत में अंग्रेजों की पकड़ को विचलित करने वाला यह एक सर्वाधिक सफल आंदोलन था जिसमें अंग्रेजों ने 80,000 से अधिक लोगों को जेल भेजा।

द्वितीय विश्व युद्ध और भारत छोड़ो - द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में जब छिड़ने नाजी जर्मनी आक्रमण पोलैंड. आरंभ में गांधी जी ने अंग्रेजों के प्रयासों को अहिंसात्मक नैतिक सहयोग देने का पक्ष लिया किंतु दूसरे कांग्रेस के नेताओं ने युद्ध में जनता के प्रतिनिधियों के परामर्श लिए बिना इसमें एकतरफा शामिल किए जाने का विरोध किया। कांग्रेस के सभी चयनित सदस्यों ने सामूहिक तौर पर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। लंबी चर्चा के बाद, गांधी ने घोषणा की कि जब स्वयं भारत को आजादी से इंकार किया गया हो तब लोकतांत्रिक आजादी के लिए बाहर से लड़ने पर भारत किसी भी युद्ध के लिए पार्टी नहीं बनेगी। जैसे जैसे युद्ध बढता गया गांधी जी ने आजादी के लिए अपनी मांग को अंग्रेजों को भारत छोड़ो आन्दोलन नामक विधेयक देकर तीव्र कर दिया। यह गांधी तथा कांग्रेस पार्टी का सर्वाधिक स्पष्ट विद्रोह था जो भारतीय सीमा से अंग्रेजों को खदेड़ने पर लक्षित था। गांधी जी के दूसरे नंबर पर बैठे जवाहरलाल नेहरू की पार्टी के कुछ सदस्यों तथा कुछ अन्य राजनैतिक भारतीय दलों ने आलोचना की जो अंग्रेजों के पक्ष तथा विपक्ष दोनों में ही विश्वास रखते थे। कुछ का मानना था कि अपने जीवन काल में अथवा मौत के संघर्ष में अंग्रेजों का विरोध करना एक नश्वर कार्य है जबकि कुछ मानते थे कि गांधी जी पर्याप्त कोशिश नहीं कर रहे हैं। भारत छोड़ो इस संघर्ष का सर्वाधिक शक्तिशाली आंदोलन बन गया जिसमें व्यापक हिंसा और गिरफ्तारी हुई। पुलिस की गोलियों से हजारों की संख?या में स्वतंत्रता सेनानी या तो मारे गए या घायल हो गए और हजारों गिरफ्तार कर लिए गए। गांधी और उनके समर्थकों ने स्पष्ट कर दिया कि वह युद्ध के प्रयासों का समर्थन तब तक नही देंगे तब तक भारत को तत?काल आजादी न दे दी जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार भी यह आन्दोलन बन्द नहीं होगा यदि हिंसा के व्यक्तिगत कृत्यों को मूर्त रूप दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके चारों ओर अराजकता का आदेश असली अराजकता से भी बुरा है। उन्होंने सभी कांग्रेसियों और भारतीयों को अहिंसा के साथ करो या मरो (अंग्रेजी में डू ऑर डाय) के द्वारा अन्तिम स्वतन्त्रता के लिए अनुशासन बनाए रखने को कहा।

स्वतंत्रता और भारत का विभाजन

गांधी जी ने 1946 में कांग्रेस को ब्रिटिश केबीनेट मिशन के प्रस्ताव को ठुकराने का परामर्श दिया क्योंकि उसे मुस्लिम बाहुलता वाले प्रांतों के लिए प्रस्तावित समूहीकरण के प्रति उनका गहन संदेह होना था इसलिए गांधी जी ने प्रकरण को एक विभाजन के पूर्वाभ्यास के रूप में देखा। हालांकि कुछ समय से गांधी जी के साथ कांग्रेस द्वारा मतभेदों वाली घटना में से यह भी एक घटना बनी। चूंकि नेहरू और पटेल जानते थे कि यदि कांग्रेस इस योजना का अनुमोदन नहीं करती है तब सरकार का नियंत्रण मुस्लिम लीग के पास चला जाएगा। 1948 के बीच लगभग 5000 से भी अधिक लोगों को हिंसा के दौरान मौत के घाट उतार दिया गया। गांधी जी किसी भी ऐसी योजना के खिलाफ थे जो भारत को दो अलग अलग देशों में विभाजित कर दे।भारत में रहने वाले बहुत से हिंदुओं और सिक्खों एवं मुस्लिमों का भारी बहुमत देश के बंटवारे के पक्ष में था। इसके अतिरिक्त मुहम्मद अली जिन्ना, मुस्लिम लीग के नेता ने, पश्चिम पंजाब, सिंध, उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत और ईस्ट बंगाल में व्यापक सहयोग का परिचय दिया। व्यापक स्तर पर फैलने वाले हिंदु मुस्लिम लड़ाई को रोकने के लिए ही कांग्रेस नेताओं ने बंटवारे की इस योजना को अपनी मंजूरी दे दी थी। कांगेस नेता जानते थे कि गांधी जी बंटवारे का विरोध करेंगे और उसकी सहमति के बिना कांग्रेस के लिए आगे बढ़ना बसंभव था चुकि पाटर्टी में गांधी जी का सहयोग और संपूर्ण भारत में उनकी स्थिति मजबूत थी। गांधी जी के करीबी सहयोगियों ने बंटवारे को एक सर्वोत्तम उपाय के रूप में स्वीकार किया और सरदार पटेल ने गांधी जी को समझाने का प्रयास किया कि नागरिक अशांति वाले युद्ध को रोकने का यही एक उपाय है। मज़बूर गांधी ने अपनी अनुमति दे दी।

हत्या

30 जनवरी 1948 गांधी की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई जब वे नई दिल्ली के बिड़ला भवन के मैदान में रात चहलकदमी कर रहे थे। गांधी का हत्यारा नाथूराम गौड़से हिन्दू राष्टवादी थे जिनके कट्टरपंथी हिंदु महासभा के साथ संबंध थे जिसने गांधी जी को पाकिस्तान को भुगतान करने के मुद्दे को लेकर भारत को कमजोर बनाने के लिए जिम्मेदार ठहराया था। गोड़से और उसके उनके सह षड़यंत्रकारी नारायण आप्टे को बाद में केस चलाकर सजा दी गई तथा 15 नवंबर1949 को इन्हें फांसी दे दी गई।

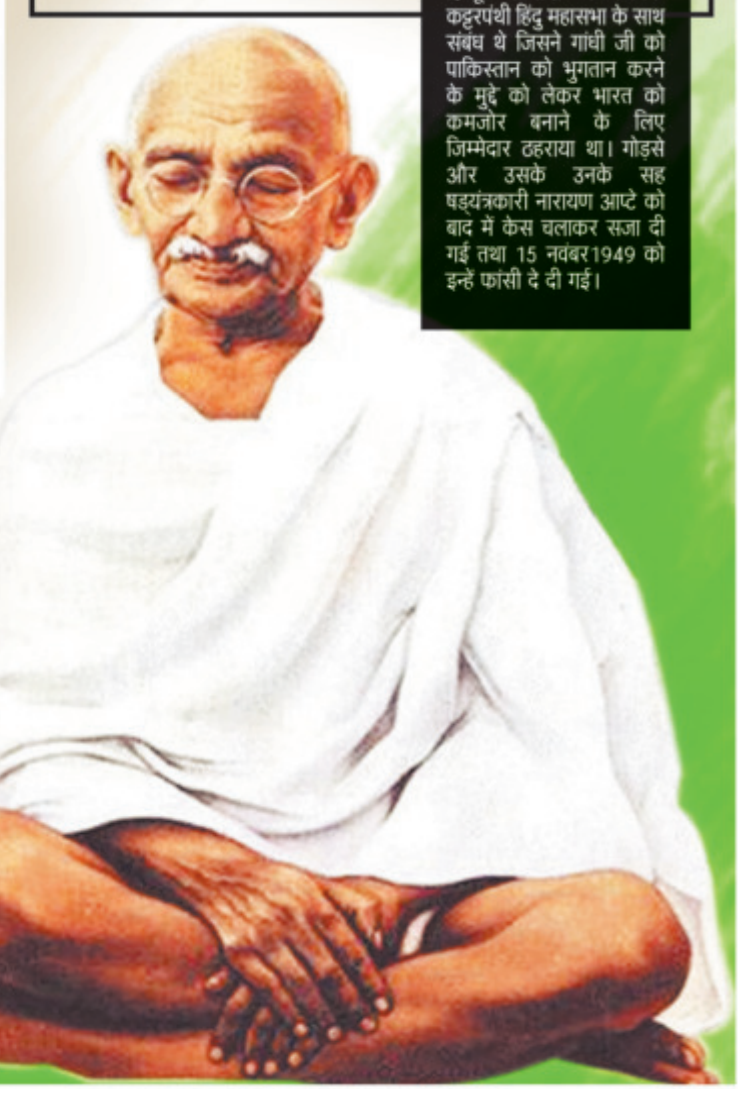

गांधी जयंती
आत्ममूल्यांकन का दिन

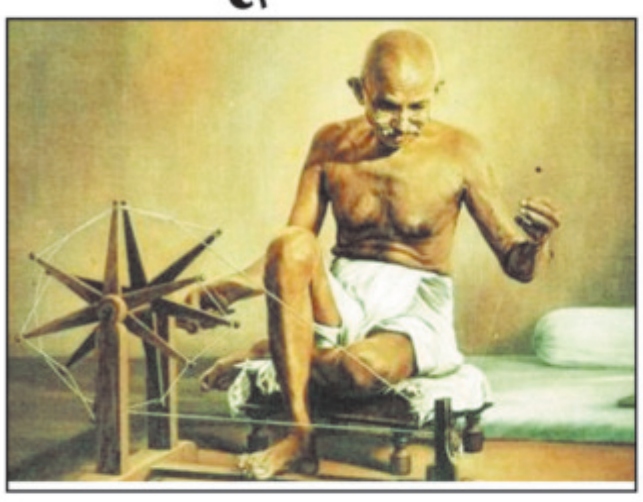

आज गांधी जयंती है। गांधी प्रतिमाओं और उनकी तस्वीरों को पिछली पुण्यतिथि के बाद धोने-पोंछने का यह पहला अवसर आया है। प्रत्येक वर्ष ऐसा ही होता है, जयंती और पुण्यतिथि के बीच की अवधि में गांधीजी के साथ कोई नहीं होता है। कड़वी बात तो यह है कि बचे-खुचे गांधीवादी भी नहीं। वे गांधीजी का साथ दे भी नहीं सकते हैं क्योंकि जरूरतों और परिस्थितियों ने उन्हें भी सिखा दिया है कि गांधी बनने से केवल प्रताड़ना मिल सकती है, संपदा, संपत्ति नहीं। वैचारिक धरातल में यह खोखलापन एक दिन या एक माह या एक वर्ष में नहीं आ गया। जान-बूझकर धीरे-धीरे और योजनाबद्ध ढंग से गांधी सिद्धांतों को मिटाया जा रहा है क्योंकि यह मौजूदा स्वार्थों में सबसे बड़े बाधक हैं। गांधी सिद्धांतों को मिटाने की इस गतिविधि को देखा नहीं गया, ऐसा नहीं है। सब चुप हैं क्योंकि अपना-अपना लाभ सभी को चुप रहने के लिए प्रेरित कर रहा है। आमतौर पर जन्मदिन या जयंती के दिन आस्था के फूल अर्पित करने की परंपरा है। इस दिन कड़वी बातों को कहने का रिवाज नहीं है। यदि इस रिवाज को तोड़ा जा रहा है, तो मजबूरी के दबाव को समझे जाने की आवश्यकता है। यह राष्ट्र नेताओं को महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर कीचड़ उछालने की अनुमति कैसे दे रहा है, क्यों दे रहा है? यह कैसी सहिष्णुता है जो राष्ट्र की बुनियादी विचारधारा को मटियामेट करने पर आमादा है?

कहते हैं कि जो राष्ट्र अपने चरित्र की रक्षा करने में सक्षम नहीं है, उसकी रक्षा कोई नहीं कर सकता है। क्या परमाणु बम भारतीयता की रक्षा कर पाएगा? दरअसल, यह भुला दिया गया है कि पहले विश्वास बनता है, फिर श्रद्धा कायम होती है। किसी ने अपनी जय-जयकार करवाने के लिए क्रम उलट दिया और उल्टी परंपरा बन गई। अब विश्वास हो या नहीं हो, श्रद्धा का प्रदर्शन जोर-शोर से किया जाता है। गांधीजी भी श्रद्धा के इसी प्रदर्शन के शिकार हुए हैं। उनके सिद्धांतों में किसी को विश्वास रहा है या नहीं, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। जयंती और पुण्यतिथि पर उनकी कसमें खाकर वाहवाही जरूर लूटी जा रही है। गांधीजी के विचार बेचने की एक वस्तु बनकर रह गए हैं। वे छपे शब्दों से अधिक कुछ नहीं हैं। इसलिए ही गांधीजी की जरूरत आज पहले से कहीं अधिक है। इस जरूरत को पूरा करने की सामर्थ्य वाला व्यक्तित्व दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा है। हर कोई चाहता है कि आदर्श और मूल्य इतिहास में बने रहें और इतिहास को वह पूजता भी रहेगा। परंतु अपने वर्तमान को वह इस इतिहास से बचाकर रखना चाहता है। अपने लालच की रक्षा में वह गांधी की रोज हत्या कर रहा है, पल-पल उन्हें मार रहा है और राष्ट्र भीड़ की तरह तमाशबीन बनकर चुपचाप उसे देख रहा है। शायद कल उनमें से किसी को यही करना पड़े! अपने हितों की विरोधी चीजों को इतिहास में बदल देने में भारतीयता आजादी के बाद माहिर हो चुकी है। वर्तमान और इतिहास की इस लड़ाई में वर्तमान ही जीतता आ रहा है क्योंकि इतिहास की तरफ से लड़ने वाले शेष नहीं हैं। आज गांधी जयंती है। गांधीजी की प्रतिमा के सामने आंख मूंदकर कुछ क्षण खड़े रहने वाले क्या यह पश्चाताप कर रहे होंगे कि वे गांधीजी के बताए रास्तों पर क्यों नहीं चल रहे हैं? नहीं, वे यह कतई नहीं सोच रहे होंगे। तब वे मन ही मन क्या कह रहे होंगे? सोचिए और उस पर मनन कीजिए। गांधी जयंती पर यही बड़ा काम होगा।

गांधीजी ने बजाया था सत्याग्रह का बिगुल

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद भारतवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए गांधी जी नेशनल इण्डियन कांग्रेस की स्थापना की। पहली बार सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग किया और विजय भी पाई। इस प्रकार सन? 1914-15 में गांधी जब दक्षिण अफ्रीका से वापिस भारत लौटे, तब तक इन विचारों और जीवन-व्यवहारों में आमूल-चूल परिवर्तन आ चुका था।

भारत लौटकर कुछ दिन गांधी जी देश का भ्रमण कर वास्तविक स्थिति का जायजा लेते रहे। फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संस्था को पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य देकर संघर्ष में कूद पड़े। क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध में वचन देकर भी अंग्रेज सरकार ने भारतीयों के प्रति अपने रवैये में कोई परिवर्तन नहीं किया था, इससे गांधी जी और भी चिढ़ गए और अंग्रेजी कानूनों का बहिष्कार और सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। भारतवासियों के मानवाधिकारों का हनन करने वाले रोलट एक्ट का स्थान-स्थान पर विरोध-बहिष्कार होने लगा। सन 1919 में जलियां-वाला बाग में हो रही विरोध-सभा पर हुए अत्याचार ने गांधी जी की अंतरात्मा को हिलाकर रख दिया। सो अब ये समूचे स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर सम्हाल खुलम-खुल्ला संघर्ष में कूद पड़े। इनका संकेत पाते ही सारे देश में विरोधी आंदोलनों की एक आंधी सी छा गई। अंग्रेज सरकार की लाठी-गोलियां भी अंधाधुंध बरसने लगीं। जेलें सत्याग्रहियों से भर उठीं। गांधीजी को भी जेल में डाल दिया गया। बिहार की नील सत्याग्रह, डाण्डी यात्रा या नमक सत्याग्रह, खेड़ा का किसान सत्याग्रह आदि गांधी जी के जीवन के प्रमुख सत्याग्रह हैं। इन्हें कई बार महीने-महीने भर का उपवास भी करना पड़ा। अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए इन्होंने नवजीवन और यंग इण्डिया जैसे पत्र भी प्रकाशित किए। विदेशी-बहिष्कार और विदेशी माल का दाह, मद्य निषेध के लिए धरने का आयोजन, अछूतोद्धार, स्वदेशी प्रचार के लिए चर्खे और खादी को महत्व देना, सर्वधर्म-समन्वय और विशेषकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रचार इनके द्वारा आरंभ किए गए अन्य प्रमुख सामाजिक सुधारात्मक कार्य माने गए हैं। इस प्रकार के स्वतंत्रता दिलाने वाले प्रयासों के लिए अक्सर बीच-बीच में इन्हें जेलयात्रा भी करनी पड़तीं। सन 1931 में इग्लैंड में संपन्न गोलमेज कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिए गांधी जी वहां गए, पर जब इनकी इच्छा के विरुद्ध हरिजनों को निर्वाचन का विशेषाधिकार हिन्दुओं से अलग करके दे दिया, तो भारत लौटकर गांधी जी ने पुनः आंदोलन आरंभ कर दिया। बंदी बनाए जाने पर जब ये अनशन करने लगे, तो सारा देश क्षुब्ध हो उठा। फलतः ब्रिटिश सरकार को गांधी जी के मतानुसार हरिजनों का पृथक निर्वाचनाधिकार का हठ छोड़ना पड़ा।

भारत का ऑलराउंड प्रदर्शन, बांग्लादेश को दूसरे टेस्ट में हराकर किया क्लीन स्वीप

कानपुर (एजेंसी)। कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में खेला गया भारत और बांग्लादेश के बीच दूसरा टेस्ट मैच भारतीय टीम ने 7 विकेट से अपने नाम किया। इसके साथ ही रोहित ब्रिगेड ने दो मैचों की सीरीज को 2-0 से अपने नाम किया है। कानपुर टेस्ट की जीत किसी करिश्माई जीत से कम नहीं थी, क्योंकि मैच के दो दिन का खेल बारिश के कारण बाधित रहा था और पहले दिन महज 35 ओवर का ही खेल हुआ था।

यशस्वी जायसवाल ने दोनों पारियों में बेहतरीन पारी खेकर अर्धशतक जड़े। दूसरे टेस्ट मैच के आखिरी दिन भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती ये थी कि बांग्लादेश के 8 विकेट गिराने हैं। ये काम भारत के लिए जसप्रीत बुमराह (3), रविंद्र जडेजा (3), अश्विन (3) और आकाशदीप (1) ने मिलकर कर दिया। दिन के पहले सेशन में बांग्लादेश को 146 पर ढेर कर दिया। इस तरह जीत के लिए 95 रनों का लक्ष्य

भारत को मिला, जिसे रोहित एंड कंपनी ने 17.2 ओवर में 3 विकेट खोकर हासिल कर लिया। बांग्लादेश ने पहली पारी में 233 रन बनाए थे।

इसके जवाब में भारत ने 285/9 पर पारी घोषित कर दी थी। बांग्लादेश की दूसरी पारी को भारत ने 146 पर समेट दिया था। भारत ने आसानी से 95 रनों के लक्ष्य को चेज कर लिया। वहीं इस टेस्ट सीरीज को जीतने के बाद टीम इंडिया ने अपने नाम एक महारिकॉर्ड दर्ज कराया। रोहित ब्रिगेड ने वह कारनामा कर दिखाया जो आजतक दुनिया की कोई भी टीम नहीं कर पाई।

दरअसल, भारतीय टीम ने नवंबर 2012 में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज हारने के बाद अपने घर में एक बार भी हार नहीं झेली। बांग्लादेश के खिलाफ मिली टेस्ट सीरीज में जीत के बाद भारत ने ये रिकॉर्ड बरकरार रखा।

वहीं 12 साल से टीम इंडिया अपने घर में कोई भी टेस्ट सीरीज नहीं हारी है। भारत ने घर में पिछले 51 टेस्ट मैचों में सिर्फ 4 मैच गंवाए हैं। वहीं, टीम इंडिया ने साल 2012 से लेकर अभी तक अपने घर में 40 टेस्ट मैच जीते। इस दौरान 7 टेस्ट मैच ड्रॉ पर खत्म हुए।

अश्विन डब्लूटीसी के तीनों संस्करणों में 50 विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बने

कानपुर (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के दिग्गज स्पिनर आर अश्विन ने बांग्लादेश के खिलाफ यहां खेले जा रहे दूसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में तीन विकेट लेने के साथ ही एक अहम रिकार्ड अपने नाम कर लिया। अब अश्विन विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्लूटीसी) के तीनों की संस्करणों में 50 से ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गये हैं। अश्विन ने बांग्लादेश की पहली पारी में शाकिब अल हसन का विकेट लेते ही अपने 50 विकेट पूरे किये। अश्विन ने इसके बाद बांग्लादेश की दूसरी पारी में भी 2 विकेट लिए।

अश्विन के नाम अब डब्ल्यूटीसी के इस सत्र में 52 विकेट हो गए हैं। उनसे ज्यादा विकेट किसी अन्य गेंदबाज ने नहीं लिए हैं। वहीं ऑस्ट्रेलिया के जोश हेजलवुड 51 विकेट के साथ ही दूसरे नंबर पर हैं, इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया के ही पैट कमिंस 48 विकेट लेकर तीसरे नंबर पर हैं। अश्विन ने इससे पहले डब्ल्यूटीसी (2019-21) के पहले सत्र में 71 विकेट लिए थे। वे पहले सत्र में सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में दूसरे नंबर पर थे। इसके बाद उन्होंने दूसरे सत्र में कुल 61 विकेट लिए। इस प्रकार अश्विन ने डब्ल्यूटीसी के तीन सत्रों के 37 मैचों में कुल 182 विकेट लिए हैं। अब उन्हें नाथन लायन 187 का रिकार्ड तोड़ने के लिए छह विकेट की जरुरत है।.

मोर्कल ने जडेजा को मैच विजेता खिलाड़ी बताया

कानपुर (एजेंसी)। भारतीय टीम के गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल ने ऑलराउंडर रविन्द्र जडेजा की जमकर प्रशंसा करते हुए उसे एक संपूर्ण खिलाड़ी बताया है। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व क्रिकेटर रहे मोर्कल ने कहा कि जडेजा एक मैच विजेता खिलाड़ी हैं जो अपनी गेंदबाजी और बल्लेबाजी के बल पर किसी भी मैच का रुख बदल सकते हैं। कोच ने कहा कि जिस प्रकार जडेजा ने 74 मैचों टेस्ट मैचों में ही 3000 रन और 300 विकेट हासिल किये उससे उनकी क्षमताओं का अंदाजा होता है। इससे पहले केवल इंग्लैंड के महान ऑलराउंडर इयान बॉथम ने 72 मैचों में 3000 टेस्ट रन और 300 विकेट लिए थे। जडेजा ने बांग्लादेश हसन महमूद को आउट कर अपने 300 विकेट पूरे किये। मोर्कल ने कहा कि मेरे लिए जडेजा एक ऐसा खिलाड़ी है जो किसी भी भूमिका चाहे वह बल्लेबाजी हो या गेंदबाज खरा उतरता है। हैवह मैदान पर ऐसा खिलाड़ी है जो जादू कर सकता है। वह ऐसा खिलाड़ी है जिसे आप हमेशा अपनी टीम में रखना चाहेंगे। वह पिछले कई वर्षों से भारत के लिए लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। मोर्कल के अनुसार 300 क्लब में शामिल होना एक बड़ी उपलब्धि है। वह किसी भी मैच में अपनी ओर से पूरे प्रयास करता है। जडेजा ने आर अश्विन के साथ मिलकर विरोधी टीम के बल्लेबाजों को कोई अवसर नहीं दिया है। मोर्कल ने कहा कि ये दोनो ही बल्लेबाज को कोई अवसर नहीं देते हैं। आपको इहमेशा रन बनाने के तरीके खोजने होंगे। दोनों गेंदबाज अगर एक साथ गेंदबाजी करते है तो बल्लेबाजों को रन बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

विराट कोहली ने शाकिब अल हसन को गिफ्ट किया बल्ला

कानपुर (एजेंसी)। भारतीय स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने कानपुर में दूसरे टेस्ट मैच की समाप्ति के बाद बांग्लादेश के पूर्व कप्तान शाकिब अल हसन को उनके उल्लेखनीय टेस्ट करियर के लिए अपना क्रिकेट बल्ला उपहार में दिया। शाकिब ने घोषणा की है कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आगामी श्रृंखला घरेलू धरती पर उनकी आखिरी श्रृंखला होगी, बशर्ते उन्हें मौका दिया जाए। अन्यथा, भारत के खिलाफ श्रृंखला उनकी विदाई सीरीज के रूप में याद रखी जाएगी।

शाकिब ने कानपुर में भारत के खिलाफ दूसरे टेस्ट से पहले प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि यह मेरी आखिरी टेस्ट सीरीज हो सकती है। मैं दक्षिण अफ्रीका श्रृंखला के लिए उपलब्ध हूं, लेकिन चूंकि घर पर बहुत कुछ हो रहा है, स्वाभाविक रूप से, सब कुछ मुझ पर निर्भर नहीं करता है। मैंने बीसीबी के साथ टेस्ट क्रिकेट के लिए अपनी योजनाओं पर चर्चा की है। विशेष रूप से इस श्रृंखला और घरेलू श्रृंखला के बारे में। मैंने फारूक भाई (बीसीबी अध्यक्ष) और चयनकर्ताओं को बता दिया है। अगर मौका है और अगर मैं खेल सकता हूं, तो मेरा आखिरी टेस्ट मीरपुर में होगा। बोर्ड यह सुनिश्चित

करने की कोशिश कर रहा है कि मैं खेल सकूं और सुरक्षित महसूस कर सकूं, साथ ही मैं बिना किसी रोक-टोक के देश छोड़ सकता हूं। मैं बांग्लादेश का नागरिक हूं, इसलिए मुझे बांग्लादेश वापस जाने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। मेरे करीबी दोस्त और परिवार के सदस्य चिंतित हैं। उम्मीद है कि चीजें बेहतर हो रही हैं। इसका कोई समाधान होना चाहिए।

बहरहाल, अक्टूबर में होने वाली सीरीज अभी अस्थायी है। क्योंकि क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने इस सप्ताह के शुरू में आयोजन स्थल के निरीक्षण के बाद अभी तक सुरक्षा मंजूरी नहीं दी है। ऐसा तब हुआ है जब शेख हसीना ने 5 अगस्त को बांग्लादेश के प्रधान मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया और देश में छात्रों के नेतृत्व में हिंसक विरोध प्रदर्शन के बाद देश छोड़कर भाग गईं। तब शाकिब कनाडा में ग्लोबल टी20 लीग खेल रहे थे। टूर्नामेंट के समापन के बाद वह पाकिस्तान दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला खेलने आए। पाकिस्तान में ऐतिहासिक सीरीज जीतकर बांग्लादेश की टीम भारत पहुंची थी। लेकिन वह यहां भारत से टेस्ट सीरीज नहीं जीत पाई।

बता दें कि इस सप्ताह की शुरुआत में बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) के क्रिकेट संचालन प्रभारी शहरयार नफीस ने कहा था कि जब शाकिब अवामी लीग सरकार के पतन के बाद पहली बार बांग्लादेश लौटेंगे तो उन्हें ÷गलत तरीके से परेशान÷ नहीं किया जाएगा। शाकिब पर पिछले महीने ढाका में एक हत्या के मामले में 147 लोगों के समेत मामला दर्ज किया गया था। 38 वर्षीय इस साल जनवरी में संसद सदस्य बने। इस मामले पर बांग्लादेश के कानून सलाहकार आसिफ नजरूल ने भी उम्मीद जताई थी कि मामले के सिलसिले में शाकिब को गिरफ्तार नहीं किया जाएगा।

यह जादू नहीं, बांग्लादेश के खिलाफ जीत के बाद बोले जसप्रीत बुमराह

कानपुर । भारतीय क्रिकेट टीम के दिग्गज तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने स्वयं को जादूगर कहे जाने पर कानपुर टेस्ट जीतने के बाद कहा कि मैं विशेषण में विश्वास नहीं रखता यह परिस्थितियों के अनुसार अनुभव का उपयोग है। दूसरे टेस्ट मैच में कुल छह विकेट लेने वाले बुमराह ने (स्वयं को जादूगर कहे जाने पर) कहा कि मैं इस तरह के विशेषण में विश्वास नहीं रखता। यह टेस्ट जीत बेहद खास है। ऐसी स्थिति में आप अपने अनुभव का उपयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि चेन्नई की तुलना में यहां जीतना तुलनात्मक तौर पर अलग था। आकाश दीप बढ़िया गेंदबाजी कर रहे हैं और जिस तरह से वह लगातार बेहतर कर रहे हैं, उसे देखकर मैं बेहद खुश हूं। हमारा लंबा टेस्ट सत्र है इसलिए टी-20 विश्वकप के बाद से ब्रेक जरूरी था। अभ्यास भी उतना ही आवश्यक है और यह भी देखना जरूरी था कि इस टेस्ट सत्र के लिए हमारी तैयरी पूरी हो। बुमराह ने बांग्लादेश की पहली पारी में 18 ओवर में 50 रन देकर तीन महत्वपूर्ण विकेट झटके थे। चौथे दिन के पहले सत्र की शुरुआत में जसप्रीत बुमराह ने बांग्लादेश के बल्लेबाज मुश्फिकुर रहीम (11) को अपनी जादुई गेंद पर बोल्ड कर दिया था। इसके बाद बांग्लादेश की दूसरी पारी में भी उन्होंने परिस्थितियों के अनुसार अपने अनुभव का उपयोग करते हुए 10 ओवर में मात्र 17 रन देकर तीन विकेट लिए।

भारतीय महिला टीम ने टी20 विश्वकप के लिए काफी अच्छी तैयारी की - लक्ष्मण

बेंगलुरू । राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण ने कहा है कि भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने टी20 विश्वकप के लिए काफी अच्छी तैयारी की है जिसका परिणाम टूर्नामेंट में मिलेगा। लक्ष्मण के अनुसार कप्तान हरमनप्रीत कौर की टीम ने सेंटर आफ एक्सीलैंस में लगाये गए शिविर में काफी अभ्यास करने के साथ ही मैच भी खेले हैं। भारतीय टीम चार अक्टूबर को दुबई में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहला मैच खेलेगी। लक्ष्मण ने कहा, 'उन्होंने जिस प्रतिबद्धता, समर्पण और ऊर्जा के साथ तैयारी की है, वह सराहना के योग्य है। मुझे उनकी तैयारियों पर गर्व है। यह काफी अच्छा शिविर था और मुख्य कोच अमोल मजूमदार ने इस तरीके से तैयार किया था कि पहले चरण में मानसिक और शारीरिक पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इसके बाद ब्रेक था और दूसरे चरण में कौशल तथा तकनीकी पहलू पर जोर दिया गया। इस दौरान टीम ने केवल नेट्स अभ्यास ही नहीं किया बल्कि मैच भी खेले। लक्ष्मण ने कहा कि महिला प्रीमियर लीग के आने के बाद देश में महिला क्रिकेट तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा, 'मेरा मानना है कि महिला क्रिकेट का ग्राफ तेजी से ऊपर जा रहा है। युवा लड़कियों और अंतरराष्ट्रीय महिला खिलाड़ियों की तैयारी का स्तर पहले से अच्छा हुआ।

एलिस पेरी है विश्व की सबसे धनी महिला क्रिकेटर

मुम्बई । पिछले कुछ समय में महिला क्रिकेट भी काफी ऊपर गया है और इसमें भी पुरुष क्रिकेट की तरह ही लीग टूर्नामेंट शुरु हो गये है। इससे महिला क्रिकेटरों के प्रदर्शन के साथ ही उनकी कमाई भी तेजी से बढ़ी है। आज ऑस्ट्रेलिया और भारत की कई महिला क्रिकेटर करोडों की कमाई कर रही हैं। ये महिलाएं अब अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के अलावा अलग-अलग देशों में लीग क्रिकेट भी खेलती है। विश्व की सबसे धनी महिला क्रिकेटर हैं ऑस्ट्रेलिया की ऑलराउंडर एलिस पेरी हैं। 33 साल की पेरी की कुल नेट वर्थ 14 मिलियन डॉलर तकरीबन 117 करोड़ से ज्यादा भारतीय रुपये है। पेरी क्रिकेट के अलावा विज्ञापनों से भी मोटी कमाई करती हैं। इसके अलावा वह महिला आईपीएल और ऑस्ट्रेलिया की महिला बिग बैश लीग के अलावा कई अन्य टी20 लीग भी खेलती हैं। वहीं कमाई में दूसरे नंबर पर भी ऑस्ट्रेलिया की ही पूर्व कप्तान मेग लैनिंग हैं। लैनिंग की कुल संपत्ति 9 मिलियन डॉलर तकरीबन 75 करोड़ से रुपये हैं। वहीं भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान मिताली राज तीसरे नंबर पर है। मिताली की नेट वर्थ तकरीबन 42 करोड़ रुपये है। वहीं भारतीय टीम की सलामी बल्लेबाज ओपनर स्मृति की नेट वर्थ लगभग 34 करोड़ के आसपास है। इसके अलावा भारतीय टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर की नेट वर्थ लगभग 26 करोड़ है। इंग्लैंड की दिग्गज विकेटकीपर सारा टेलर की कुल संपत्ति लगभग 17 करोड़ है। ऑस्ट्रेलिया की ही एक अन्य ऑलराउंडर हॉली फरलिंग की नेट वर्थ लगभग 13 करोड़ है।

डब्ल्यूटीसी के इतिहास की सबसे सफल कप्तान बने रोहित शर्मा, विराट कोहली और बेन स्टोक्स को पछाड़ा

कानपुर (एजेंसी)। रोहित शर्मा की अगुवाई में टीम इंडिया ने बांग्लादेश टीम को दो मैचों की टेस्ट सीरीज में मात देकर 2-0 से सीरीज अपने नाम कर ली। इसके साथ ही रोहित शर्मा आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप यानी डब्ल्यूटीसी के इतिहास के सबसे सफल कप्तान बन गए। रोहित शर्मा विनिंग पर्सेंटेज के हिसाब से डब्ल्यूटीसी में सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले कप्तान बन गए हैं। इस मामले में रोहित शर्मा अपने ही देश के पूर्व कप्तान विराट कोहली और इंग्लैंड की टीम के मौजूदा कप्तान बेन स्टोक्स को पीछे छोड़ दिया है। इतना ही नहीं, रोहित शर्मा ने इंग्लैंड के पूर्व कप्तान जो रूट की भी बराबरी डब्ल्यूटीसी टेस्ट मैच जीतने के मामले में कर ली है।

भारत की टीम के मौजूदा कप्तान रोहित शर्मा का जीत प्रतिशत डब्ल्यूटीसी के इतिहास में 66.70 हो गया है, जबकि विराट कोहली ने 63.6 प्रतिशत के हिसाब से वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में मैच जीते थे। लिस्ट में तीसरे नंबर बेन स्टोक्स हैं, जिनका जीत प्रतिशत इंग्लैंड के लिए 62.5 है। हालांकि, सबसे ज्यादा टेस्ट मैच पैट कमिंस ने 17 टेस्ट मैच डब्ल्यूटीसी के इतिहास में जीते हैं। बेन स्टोक्स 15 टेस्ट मैचों के साथ दूसरे नंबर पर हैं। विराट कोहली ने 14 टेस्ट डब्ल्यूटीसी में जीते हैं और रोहित शर्मा के साथ जो रूट ने 12-12 टेस्ट मैचों में जीत हासिल की है।

बता दें कि, रोहित शर्मा ने श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज से कप्तानी संभाली थी। इसके बाद से वे एक भी सीरीज हारे नहीं हैं। एक सीरीज ड्रॉ जरुर रही है, लेकिन वे हर एक सीरीज को जीते हैं। हालांकि, एक अपवाद ये भी है कि वे डब्ल्यूटीसी का फाइनल भी हारे हैं।

रोनाल्डो के गोल से अल नस्र ने चैंपियन्स लीग में अल रेयान को हराया

रियाद । क्रिस्टियानो रोनाल्डो के गोल से सऊदी अरब के अल नस्र ने सोमवार को एएफसी चैंपियन्स लीग एलीट ग्रुप चरण के मैच में कतर के अल रेयान को 2-1 से हराया। पांच बार के बैलोन डिऑर पुरस्कार विजेता रोनाल्डो वायरल संक्रमण के कारण इराक के अल शोर्ता के खिलाफ दो हफ्ते पहले 1-1 से ड्रॉ रहे टीम के पहले मैच में नहीं खेल पाए थे। उनका एक गोल ऑफ साइड हो गया लेकिन मैच खत्म होने से 14 मिनट पहले उन्होंने एक और गोल दागकर टीम की जीत सुनिश्चित की। लीवरपूल के पूर्व फारवर्ड सादियो माने ने मध्यांतर से ठीक पहले अल नस्र को बढ़त दिलाई जबकि रोनाल्डो ने टीम की बढ़त को 2-0 किया। मैच खत्म होने से तीन मिनट पहले रोजर गुएडेस ने अल रेयान के लिए गोल दागा लेकिन टीम को हार से नहीं बचा पाए। अन्य मुकाबलों में सऊदी अरब के अल अहली ने यूएई के अल वासल को 2-0 से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की जबकि कतर के अल साद ने ईरान के एस्टेघलाल को इसी अंतर से हराया। ईरान के पर्सेपोलिस और उज्बेकिस्तान के पाख्ताकोर का मुकाबला 1-1 से बराबर रहा।

जर्मनी के खिलाफ घरेलू हॉकी सीरीज की तैयारी के लिये शिविर में 40 संभावित

कानपुर (एजेंसी)। हॉकी इंडिया ने विश्व चैम्पियन जर्मनी के खिलाफ इस महीने के आखिर में यहां होने वाली दो मैचों की श्रृंखला की तैयारी के लिये बेंगलुरू में सीनियर पुरूष राष्ट्रीय कोचिंग शिविर में 40 संभावित खिलाड़ियों का चयन किया है। जर्मनी के खिलाफ 23 और 24 अक्टूबर को मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम पर दो मैच खेले जायेंगे। शिविर एक से 19 अक्टूबर तक चलेगा।

भारतीय टीम ने पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीता और चीन में एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में खिताब बरकरार रखा। शिविर में फोकस खिलाड़ियों के कौशल को निखारने और मैचों के दौरान की रणनीति पर होगा। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा ,'' विश्व चैम्पियन के खिलाफ खेलना बेहतरीन मौका है जिसमें हम अपनी क्षमता दिखा सकते हैं। संभावित खिलाड़ियों में शामिल हर एक के पास विभिन्न स्तर पर अनुभव है और हम एक टीम के रूप में अच्छे प्रदर्शन की कोशिश करेंगे।''

संभावित खिलाड़ी

गोलकीपर = कृशन बहादुर पाठक, पवन, सूरज करकेरा, मोहित

डिफेंडर = जरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, हरमनप्रीत सिंह, सुमित, संजय, जुगराज सिंह, अमनदीप लाकड़ा, नीलम संजीप सेस, वरूण कुमार, यशदीप सिवाच, दिप्सन टिर्की, मनदीप मोर

मिडफील्डर = राजकुमार पाल, शमशेर सिंह, मनप्रीत सिंह, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, नीलाकांता शर्मा, एम रबिचंद्र सिंह, मोहम्मद राहील मौसीन, विष्णुकांत सिंह , राजिंदर सिंह, पूवन्ना सीबी

फॉरवर्ड = अभिषेक, सुखजीत सिंह, ललित कुमार उपाध्याय, मनदीप सिंह, गुरजंत सिंह, अंगद बीर सिंह, आदित्य लालागे, बॉबी सिंह धामी, सुदीप चिरमाको, एस कार्ति, मनिंदर सिंह, शिलानंद लाकड़ा, दिलप्रीत सिंह।

मैच फिक्सिंग के आरोपों से दबाव में रहती थी पाकिस्तानी टीम : मुदस्सर नजर

लाहौर । पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर मुदस्सर नजर ने कहा है कि जब मैच फिक्सिंग के मामले लगातार सामने आ रहे थे तब हमारी मुश्किलें काफी बढ़ गयीं थी क्योंकि अगर हम भारतीय टीम से हारते तो हमपर फिक्सिंग के आरोप लग जाते थे। ऐसे में टीम के ड्रेसिंग रुम का माहौल बेहद तनावपूर्ण रहता था। इसका एक कारण ये भी था कि पाक के कई क्रिकेटरों पर फिक्सिंग के आरोप हैं। इसी कारण मोहम्मद आमिर, मोहम्मद आसिफ, सलमान बट, शरजील खान और खालिद लतीफ जैसे खिलाड़ियों पर प्रतिबंध भी लगाया गया था। इस पूर्व पाक क्रिकेटर ने कहा कि अगर आप 90 के दशक में हमारी टीम को देखें, तो वह ऑस्ट्रेलिया जितनी ही अच्छी थीं पर इसके बाद भी हमें मैच फिक्सिंग के कारण मैच हारने का डर बना रहता था। इसी कारण पाक टीम बेहद दबाव में रहती थी। वे कोई गेम हारते थे, तो लोग सोचते थे कि मैच फिक्स था। कोई भी यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि वे असल में अपने से बेहतर टीम से हारे हैं। मैं भी उस टीम का हिस्सा था जिसे गेम हारने का डर था, और यह पूरी तरह से मैच फिक्सिंग जैसे आरोपों को लेकर था। 1976 से 1989 तक पाकिस्तान के लिए खेल इस क्रिकेटर नजर का यह भी मानना ??है कि मैच फिक्सिंग के इस विवाद ने टीम के प्रदर्शन पर विपरीत प्रभाव डाला। इसी कारण पिछले डेढ़ साल में सभी प्रारूपों में उसका प्रदर्शन नीचे आया है। साथ ही कहा कि कोई भी पाकिस्तानी जानबूझकर भारतीय टीम ने मैच नहीं हारना चाहता था। हमने इसे शारजाह में देखा है और इसीलिए यह इतना बड़ा आयोजन था। क्रिकेट के मामले में ऐसा नहीं था, लेकिन शायद आम जनता के दिमाग में जो बात भर गयी थी उसे हम निकाल नहीं पाये।

मैं यह मैच जीतना चाहता था, बांग्लादेश के खिलाफ जीत में महत्वपूर्ण योगदान देकर बोले जायसवाल

कानपुर (एजेंसी)। बांग्लादेश के खिलाफ दूसरा टेस्ट जीतने के बाद भारतीय ओपनर यशस्वी जायसवाल ने कहा कि मैं यह मैच जीतना चाहता था। भारत ने बांग्लादेश के खिलाफ कानपुर में खेले गए दूसरे और अंतिम टेस्ट मैच में 7 विकेट से जीत दर्ज करते हुए सीरीज 2-0 से अपने नाम की। यशस्वी जायसवाल ने दोनों पारियों में अर्धशतक लगाए और टीम की जीत में महत्वपूर्व योगदान दिया। उन्होंने पहली पारी में 72 जबकि दूसरी इनिंग में 51 रन बनाए जिसके लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया।

मैच के बाद जायसवाल ने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं बस यही सोच रहा था कि मैं अपनी टीम के लिए क्या कर सकता हूं। चेन्नई में परिस्थितियां अलग थीं और यहां भी अलग। हर पारी महत्वपूर्ण है। मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता हूं और उसी तरीके से तैयारी करता हूं। मुझे कहा गया कि मैं जिस तरह से खेलना चाहता हूं, खेलूं। मैं यह मैच जीतना चाहता था।' गौर हो कि भारत ने 95 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए यशस्वी जायसवाल (51) के अर्धशतक और विराट कोहली की 29 रन की शानदार पारी की बदौलत 7 विकेट से जीत अपने नाम की। इससे पहले गेंदबाजों के दम पर बांग्लादेश की टीम भारत के खिलाफ दूसरे और अंतिम क्रिकेट टेस्ट के पांचवें दिन 26/2 के आगे खेलते हुए 146 रन पर ढेर हो गई। रविचंद्रन अश्विन, सप्रीत बुमराह और रविंद्र जडेजा ने शानदार गेंदबाजी का नमूना पेश करते हुए 3-3 विकेट अपने नाम किए जबकि आकाशदीप ने एक विकेट झटका। बांग्लादेश की तरफ से दूसरी पारी में शादमान इस्लाम (50) के अलावा कोई बल्लेबाज नहीं चला। पहली पारी में शतक लगाने वाले मोमिनुल हक भी मात्र 2 रन ही बना पाए। इससे पहले भारत ने पहले टेस्ट में चौथे दिन मैच जीतकर विजय के साथ सीरीज की शुरूआत की थी।

एक नजर

जेपी नड्डा 4 और 5 अक्टूबर को हिमाचल दौरे पर

शिमला : भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा दो दिवसीय दौरे पर 4 अक्टूबर को हिमाचल प्रदेश आ रहे हैं। हिमाचल भाजपा अध्यक्ष डॉ राजीव बिन्दल ने बताया कि जगत प्रकाश नड्डा 4 और 5 अक्तूबर को हिमाचल प्रवास पर रहेंगे। उन्होंने बताया कि अपने प्रवास के दौरान नड्डा हमेशा की भांति नवरात्र के दिनों में माता मंदिर धौलरा में दर्शन व पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।डॉ बिन्दल ने बताया कि 4 अक्तूबर को बिलासपुर की जनता राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केन्द्रीय मंत्री का अभिनंदन करेगी। तत्पश्चात नड्डा एम्स में विकासात्मक गतिविधियों की समीक्षा करेंगे और अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे। उन्होंने बताया कि 5 अक्तूबर को नड्डा भाजपा जिला कार्यालय सिरमौर के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करेंगे और उपस्थित जनता को सम्बोधित करेंगे। साथ ही नवनिर्मित भाजपा जिला कार्यालय देहरा की उद्घाटन पट्टिका का अनावरण भी करेंगे।

छात्राओं ने बताया स्वच्छता का महत्व किया जागरूक

हरिद्वार : कन्या गुरूकुल हरिद्वार की राष्ट्रीय सेवायोजना ईकाई-तीन ने स्वच्छता ही पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन किया। स्वच्छता ही पखवाड़ा कार्यक्रम 17 सितंबर से एक अक्टूबर तक चलाया गया। इसमें पोस्टर प्रेजेंटेशन, सफाई अभियान, नुक्कड़ नाटक व रैली का आयोजन किया गया। रैली में स्वयंसेवियों ने हम सबका यही सपना स्वच्छ हो भारत अपना, स्वच्छता ही सेवा है गंदगी जानलेवा है, आओ फिर बदलाव करें देश का कोना-कोना साफ करें आदि नारे लगाए और स्वच्छता का संकल्प लिया। एनएनएस की कार्यक्रम अधिकारी डा. संगीता मदान ने बताया कि स्वच्छता केवल आसपास के वातावरण से नहीं होती है। । इसके लिए पहले अपने मन को स्वच्छ करना है। जब तक मन स्वच्छ नहीं होगा वातावरण भी स्वच्छ नहीं होगा।

अर्द्धसैनिक बलों ने किया फ्लैग मार्च

फरीदाबाद : फरीदाबाद में चुनाव के मद्देनजर पुलिस ने मंगलवार को अर्धसैनिक बलों के साथ फ्लैग मार्च निकाला। पुलिस आयुक्त ओमप्रकाश नरवाल के निर्देश के चलते पुलिस ने मुजेसर व संजय कॉलोनी क्षेत्र में फ्लैग मार्च निकालकर आमजन को चुनाव के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा निर्भीक होकर मतदान करने के लिए जागरूक किया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि फ्लैग मार्च का उद्देश्य अराजक तत्वों में भय व्याप्त करना तथा आमजन को निर्भीक होकर निष्पक्षता से अपने मत का प्रयोग करने के लिए आश्वस्त करना है। आमजन को जागरूक किया गया है।

राज्यपाल ने ममता सरकार से मांगा केंद्रीय अनुदान के व्यय का ब्यौरा

एजेंसी

कोलकाता : पश्चिम बंगाल के राज्यपाल डा. सी. वी. आनंद बोस ने मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को पत्र लिखकर राज्य सरकार से यह विवरण मांगा है कि वित्तीय वर्ष 2023-24 में विभिन्न योजनाओं के तहत राज्य को आवंटित 1.17 लाख करोड़ की केंद्रीय निधि का उपयोग कैसे किया गया। राज्यपाल ने यह पत्र तब लिखा, जब उन्हें जानकारी मिली कि राज्य सरकार ने विधानसभा में महालेखाकार (सीएजी) की रिपोर्ट नहीं रखी, जिससे संवैधानिक दायित्व का उल्लंघन हो रहा है। राजभवन के सूत्र ने बताया कि पत्र में राज्यपाल ने कहा, वित्तीय वर्ष 2023-24 में पश्चिम बंगाल सरकार को ?1.17 लाख करोड़ की केंद्रीय निधि आवंटित की गई है। इन निधियों के दुरुपयोग के गंभीर आरोप सामने आ रहे हैं। राज्य की वित्तीय स्थिति कई वित्तीय जोखिमों और सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन के मुद्दों का सामना कर रही है। पत्र में राज्यपाल ने वित्तीय घाटे की स्थिति का भी जिक्र किया, जो वर्ष 2018-19 में लगभग 33 हजार 500 करोड़ से बढ़कर 2022-23 में 49 हजार करोड़ तक पहुंच गया, जबकि राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीएसपी) पर ऋण अनुपात 35.69 प्रतिशत से बढ़कर 37 प्रतिशत से अधिक हो गया है। राज्यपाल ने यह भी कहा कि 2021-22 से 2022-23 के दौरान राज्य सरकार ने सार्वजनिक ऋण की प्राप्तियों का एक बड़ा हिस्सा कर्ज चुकाने में खर्च किया। राज्यपाल ने यह भी बताया कि पश्चिम बंगाल सरकार को लगातार वित्त आयोग से भी बड़े पैमाने पर लाभ हुआ है। पंद्रहवें वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार, राज्य सरकार को 2021-22 से 2024-25 के बीच 40 हजार 115 करोड़ का राजस्व घाटा अनुदान प्राप्त होना है। यह अनुदान राज्यों के लिए सिफारिश की गई कुल राजस्व घाटा अनुदान का 13.62 प्रतिशत है। राजभवन के एक अधिकारी के अनुसार, वर्ष 2023-24 में पश्चिम बंगाल के कुल राजस्व ?2.13 लाख करोड़ में से केवल केंद्रीय हस्तांतरण ही 1.17 लाख करोड़ था, जो राज्य के कुल राजस्व का लगभग 55 प्रतिशत है। अधिकारी ने बताया कि पश्चिम बंगाल सरकार की छह महालेखाकार (सीएजी) की ऑडिट रिपोर्ट अभी तक विधानसभा में प्रस्तुत नहीं की गई हैं। रिपोर्ट के अनुसार, लंबित रिपोर्टों में अनुपालन ऑडिट रिपोर्ट 2020-2021 (रिपोर्ट संख्या 2, 2022), ऑडिट रिपोर्ट 2020-2021 (रिपोर्ट संख्या 3, 2022), राज्य वित्त ऑडिट रिपोर्ट (एसएफएआर) 2021-2022 (रिपोर्ट संख्या 1, 2023), ऑडिट रिपोर्ट 2021-2022 (रिपोर्ट संख्या 2, 2023), प्रदर्शन और अनुपालन ऑडिट रिपोर्ट 2021-2022 (रिपोर्ट संख्या 1, 2024) और राज्य वित्त ऑडिट रिपोर्ट (एसएफएआर) 2022-2023 (रिपोर्ट संख्या 2, 2024) शामिल हैं। राज्यपाल बोस ने संविधान के अनुच्छेद 151 का हवाला देते हुए कहा कि सीएजी की ऑडिट रिपोर्ट राज्य के खातों से संबंधित होती हैं और इन्हें राज्यपाल को सौंपी जानी चाहिए।

साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा : राष्ट्रपति

एजेंसी

नई दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मंगलवार को कहा कि साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभरे हैं। उन्होंने सभी से इस मुद्दे की गंभीरता को समझने और इसे दूर करने के लिए ठोस कदम उठाने का आग्रह किया। राष्ट्रपति मुर्मु मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में 64वें राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय पाठ्यक्रम के संकाय और पाठ्यक्रम सदस्यों को संबोधित कर रही थीं। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि गतिशील वैश्विक भू-राजनीतिक वातावरण कई चुनौतियां पेश करता है। हाल के दिनों में जिस तेज गति से घटनाएं सामने आई हैं, उसका शायद एक दशक पहले अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। इस प्रकार सभी अधिकारी, चाहे वे सिविल सेवाओं के हों या रक्षा सेवाओं के, उन्हें उन चुनौतियों और कमजोरियों के बारे में पता होना चाहिए, जिनका वे सामना करते हैं और उन शक्तियों के बारे में पता होना चाहिए जो ऐसी चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकती हैं। एक ताकत जो उनके पास होनी चाहिए और जिसके बिना काम नहीं चल सकता, वह है अपने संगठनों, देशों और मानवता की भलाई के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में सक्षम होना। नवाचार एक और कारक है जो उन्हें भविष्य के लिए तैयार रखेगा। राष्ट्रपति ने कहा कि आज हमारी सुरक्षा चिंताएं क्षेत्रीय अखंडता के संरक्षण से आगे बढ़कर राष्ट्रीय कल्याण के अन्य क्षेत्रों, जैसे आर्थिक, पर्यावरणीय, ऊर्जा सुरक्षा और साइबर सुरक्षा मुद्दों को भी शामिल करती हैं। इन चिंताओं को दूर करने के लिए गहन शोध की आवश्यकता है और एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। राष्ट्रपति ने कहा कि साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभरे हैं। साइबर हमलों से निपटने और उनका मुकाबला करने के लिए उच्च-स्तरीय तकनीकी हस्तक्षेप के साथ-साथ मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे के साथ-साथ एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और विशेष मानव संसाधन की आवश्यकता होती है।

सुव्यवस्थित चारधाम यात्रा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है : मुख्यमंत्री

देहरादून : मानसून थमते ही चारधाम यात्रा ने एक बार फिर रफ्तार पकड़ ली है। धामी सरकार ने केदारघाटी में आपदा से निपटने में पूरी तत्परता के साथ स्थिति को सामान्य बनाया है। इसके बाद फिर यात्री पूरे उत्साह और आस्था के साथ बाबा केदार के दर्शन को उमड़ पड़े हैं। अभी तक 38 लाख श्रद्धालु चारधाम दर्शन को आ चुके हैं। बीते दिवस 30 सितंबर को 20,497 श्रद्धालु चारधाम दर्शन को पहुंचे। इनमें केदारनाथ धाम में सर्वाधिक 7,350 तीर्थयात्री पहुंचे। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की चारधाम यात्रियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता रही है।

एसबीआई ने सुपर-प्रीमियम ब्रांड क्रेडिट कार्ड किया लॉन्च

एजेंसी

जमशेदपुर : भारत के सबसे बड़े प्योर - प्ले क्रेडिट कार्ड एसबीआई कार्ड ने सिंगापुर की राष्ट्रीय एयरलाइंस सिंगापुर एयरलाइंस लिमिटेड (एसआईए) के साथ आज क्रिसफ्लायर एसबीआई कार्ड लॉन्च किया। इस अनूठे यात्रा केंद्रित सह-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड को सुपर-प्रीमियम कार्डधारकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है जिसका लाभ ग्राहकों को हवाईयात्रा और जमीन दोनों प्राप्त होगा। एसआईए के इस समूह में सिंगापुर एयरलाइंस, स्कूट एयरलाइन, क्रिसशॉप डॉट कॉम, क्रिस+ लाइफस्टाइल ऐप और पेलेगो शामिल हैं। नए लॉन्च किए गए क्रेडिट कार्ड दो रूपों में उपलब्ध है - क्रिसफ्लायर एसबीआई कार्ड और क्रिसफ्लायर कार्ड एपेक्स। इस साझेदारी के साथ, क्रिसफ्लायर एसबीआई कार्ड के ग्राहक अपनी यात्रा खर्चों पर कई बड़े पुरस्कार और तमाम तरह के लाभ प्राप्त कर सकेंगे। क्रिसफ्लायर एसबीआई कार्ड पर 3,000 क्रिसफ्लायर माइल्स और क्रिसफ्लायर एसबीआई कार्ड एपेक्स पर 10,000 क्रिसफ्लायर माइल्स के एक्सक्लूसिव वेलकम ऑफर के साथ इस कार्ड का उद्देश्य अपने चुनिंदा ग्राहकों को अद्वितीय सुविधा और लक्जरी प्रदान करना और उनकी यात्राओं को एक नए तरह का अनुभव देना है।

संक्षिप्त खबरें

नवरात्रि के पहले लगेगा सूर्य ग्रहण

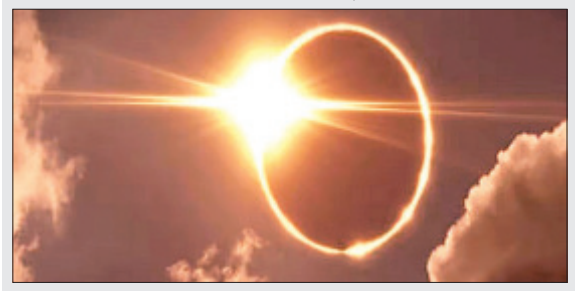

भोपाल : देशभर में गुरुवार, 03 अक्टूबर से शारदीय नवरात्रि का पर्व शुरू हो जाएगा। इससे पहले बुधवार, 02 अक्टूबर को भारतीय समयानुसार रात्रि लगभग 9 बजकर 13 मिनट से सूर्यग्रहण की घटना होने जा रही है। रात्रि में यह खगोलीय घटना होने के कारण इस ग्रहण को भारत में तो नहीं देखा जा सकेगा, लेकिन अर्जेन?टीना एवं चिली में इसे एन्यूलर या वलयाकार ग्रहण के रूप में देखा जा सकेगा। वहीं फिजी, उरुग्वे, ब्राजील पेरू आदि देशों में पार्शियल या आंशिक सूर्यग्रहण के रूप में देखा जा सकेगा। यह ग्रहण रात्रि 3 बजकर 17 मिनट पर समाप्त हो जाएगा। नेशनल अवार्ड प्राप्त विज्ञान प्रसारक सारिका घारू ने मंगलवार को ग्रहण की वैज्ञानिक जानकारी देते हुए कि इस खगोलीय घटना में पृथ्वी और सूर्य के बीच चंद्रमा के पहुंच जाने से कुछ देशों में सूर्य डिस्क का कुछ भाग दिखाई देना बंद हो जाएगा। इससे इन स्थानों पर वलयाकार ग्रहण तो कुछ स्थानों पर आंशिक ग्रहण दिखेगा। उन्होंने बताया कि एक गणितीय अनुमान के अनुसार इस ग्रहण का कुछ न कुछ भाग विश्व की जनसंख्या के लगभग 3.08 प्रतिशत लोग देख पाएंगे जबकि वलयाकार सूर्यग्रहण को लगभग 0.002 प्रतिशत लोग ही देख सकेंगे। सारिका ने बताया कि बुधवार को हो जा रहे इस ग्रहण की स्थिति में चंद्रमा पृथ्वी से लगभग चार लाख दो हजार तीन सौ किमी की दूरी पर होगा, जबकि सुपरमून की स्थिति में यह लगभग तीन लाख 60 हजार किमी दूर रहता है।

हिसार के विकास के लिए भाजपा को विजयी बनाएगी जनता : डॉ. कमल गुप्ता

हिसार : हिसार से भाजपा उम्मीदवार डॉ. कमल गुप्ता ने कहा है कि जनता शहर का विकास चाहती है और विकास केवल भाजपा ही करवा सकती है। इसलिए हिसार के विकास के लिए जनता 5 अक्तूबर को भाजपा को विजयी बनाएगी। डॉ. कमल गुप्ता मंगलवार को चुनाव प्रचार अभियान के दौरान नुक्कड़ सभाओं को संबोधित कर रहे थे। भाजपा प्रत्याशी डॉ. कमल गुप्ता ने महाबीर जांगड़ा, कृष्ण खटाणा, प्रवीन पोपली, विजय नागपाल, वैभव बिदानी, डॉ. अरूण गुप्ता, कलती देवी, हिमांशु कटारिया के आवास व प्रतिष्ठानों पर जनसंपर्क किया और लोगों से वोट की अपील की। डॉ. गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि विपक्षी प्रत्याशियों के पास शहर के विकास को लेकर कोई विजन नहीं है।

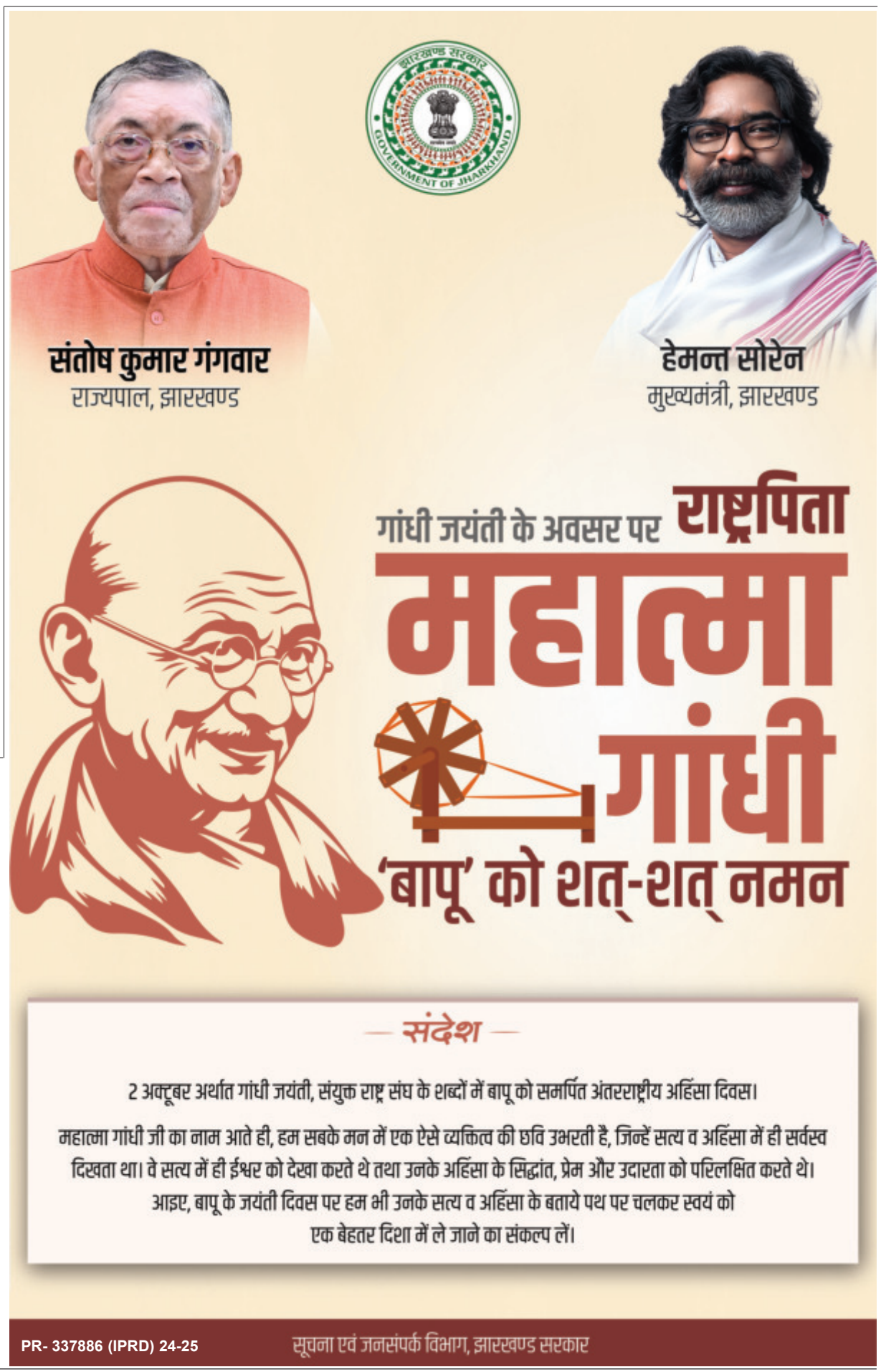

जी अनमोल सिनेमा पर होने जा रहा है सुपरनेचुरल-कॉमेडी ब्रो का प्रीमियर

मुंबई : हमारी जिंदगी पर हमारा कितना नियंत्रण है यह सवाल अक्सर हमारे मन में आता है। खुद की खोज और मुक्ति के विचार को साकार करते हुए, जी अनमोल सिनेमा बुधवार, 2 अक्टूबर को शाम 7 बजे ब्रो का वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर लेकर आ रहा है। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता समुथिरकानी द्वारा निर्देशित, ब्रो में चाचा-भतीजे की जोड़ी पवन कल्याण और साई धरम तेज है, जिनके साथ प्रिया प्रकाश वारियर और केतिका शर्मा जैसे बेमिसाल कलाकार हैं। नैतिकता और नश्वरता की इस शानदार प्रस्तुति के साथ, फिल्म में पावर स्टार पवन कल्याण और साई धरम तेज की दिलचस्प जोड़ी है। इसमें पवन कल्याण अपने बेहतरीन फॉर्म में हैं, जहां कुछ सबसे पसंदीदा गानों में उनका बेहद खास अंदाज नजर आया। फिल्म में बढ़िया डुएट गाने हैं, और इसकी दमदार परफॉर्मेंस, हैरतअंगेज दृश्य और जबर्दस्त साउंडट्रैक इसे सभी उम्र के दर्शकों के लिए एक आकर्षक अनुभव बनाते हैं। ब्रो के वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर के मौके पर निर्देशक समुथिरकानी ने कहा, मैंने जिन 15 फिल्मों का निर्देशन किया है, उनमें से मुझे लगता है कि ब्रो मेरे बेस्ट काम के रूप में सामने आई है। इस फिल्म को बनाने में जो भावनाएं, ऊर्जा और धैर्य लगा, वो बेमिसाल था - इसने वाकई मेरा बेस्ट बाहर लाया।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**